

ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत चमत्कार

एक पुरातन ऋषि का दिव्य जन्म परमपिता परमात्मा की विचित्रता से युक्त, अद्भुत और विलक्षण सृष्टि का उद्घाटन पूज्यपाद गुरुदेव श्रृङ्गी ऋषि कृष्णदत्त जी महाराज के प्रवचनों से हुआ। वह ईश्वर का एक अलौकिक और दिव्य प्रकटीकरण है और सृष्टि के इतिहास की एक मात्र, विलक्षण अद्भुत घटना भी। जब १४ सितम्बर सन् १९४२ को, उत्तर प्रदेश के गाजियाबाद जिले के, ग्राम खुर्रमपुर, सलेमाबाद में एक विशेष बालक ने जन्म लिया। बालक जन्म से ही एक विलक्षणता से युक्त था और विलक्षणता यह कि जब भी यह बालक सीधा, शवासन की मुद्रा में, कुछ अन्तराल लेट जाता या लिटा दिया जाता, तो बालक की गर्दन दायें-बायें हिलने लगती, लगभग १५ मिनट वेद मन्त्रोच्चारण होता और उसके उपरान्त सृष्टि के आदि काल से वर्तमान काल तक के विभिन्न कालों के स्वयं और विभिन्न ऋषि-मुनियों के चिन्तन और घटनाओं पर आधारित ४५ मिनट तक एक दिव्य प्रवचन होता। बाल्यावस्था होने के कारण, प्रारम्भ में आवाज अस्पष्ट होती और जैसे-जैसे आयु बढ़ने लगी, वैसे-वैसे ही आवाज और विषय दोनों स्पष्ट होने लगे। पर एक अपठित ग्रामीण बालक के मुख से ऐसे दिव्य प्रवचन सुनकर जन मानस आश्चर्य करने लगा, बालक की ऐसी दिव्य अवस्था और प्रवचनों की गूढ़ता के विषय में कोई भी कुछ कहने की स्थिति में नही था। ग्रामीण, निर्धन और अपठित समाज होने के कारण भूत प्रेत का प्रभाव मानते हुए बहुत-सी चिकित्सा भी कराई गई, पर सब व्यर्थ रहे। क्योंकि बालक की यह प्रवचन क्रिया तो यौगिक थी यह तो सतत् ऐसे ही चलती रही। आवाज जब कुछ स्पष्ट हुई तो इस स्थिति का स्पष्टीकरण भी दिव्यात्मा के प्रवचनों से ही हुआ। कि यह

आत्मिक ज्ञान

आत्मा सृष्टि के आदिकाल से ही विभिन्न कालों में शृङ्गी ऋषि की उपाधि से विभूषित और सतयुग के काल में आदि ब्रह्मा के शाप के कारण इस युग में जन्म लेने का कारण बनी। और इस जन्म में अपठित रहने की स्थिति में भी जैसे ही यह शरीर श्वासन की मुद्रा में जाता तो कुछ अन्तराल बाद स्वतः ही योग समाधि की स्थिति बन जाती। जहां इस दिव्यात्मा का पूर्व जन्मों का ज्ञान उद्बुद्ध हो जाता और जैसा काल देखा था उस काल के अनुकूल व्याख्यान कण्ठ आ जाते। क्योंकि, जन्म जन्मान्तरों के संस्कार स्मृति में, अन्तःकरण में विराजमान रहते हैं। और अन्तरिक्ष में उपस्थित सूक्ष्म शरीर धारी दिव्यात्माओं के समक्ष एक सत्संग सदृश्य स्थिति बन जाती, जिसमें इस महान आत्मा का सूक्ष्म शरीरधारी आत्माओं के लिए प्रवचन होता। जिसमें इस आत्मा के पूर्व जन्मों के शिष्य महर्षि लोमश मुनि महाराज, और पूज्य महानन्द जी के प्रवचन भी होते। क्योंकि इस दिव्यात्मा का स्थूल शरीर यहां मृत्यु लोक में स्थित होने के कारण, वहां अन्तरिक्ष में दिव्य आत्माओं के सम्मुख सत्संग में दिया जाने वाला दिव्य प्रवचन, इस शरीर के माध्यम से यहाँ उपस्थित जन मानस को भी सुनाई देते। इन प्रवचनों में ईश्वरीय सृष्टि का अद्भुत रहस्य समाया हुआ है, ब्रह्माण्ड की विशालता, प्रत्येक लोक में जीवन की अनिवार्यता का बोध, सृष्टि का उद्देश्य, पूर्व कालों में विज्ञान की विशालता का दिग्दर्शन, वैदिक संस्कृति का उज्ज्वलतम स्वरूप, आत्मा, परमात्मा और प्रकृति का स्वरूप, विभिन्न कालों का आँखो देखा सदृश्य वर्णन, भगवान राम और भगवान कृष्ण के जीवन की दिव्यता का साक्षात दर्शन, समाज में प्रचलित रूढ़ियों का निवारण करने वाली दृष्टि, क्या कुछ दिव्य नहीं है इन दिव्य प्रवचनों में ? ये किसी भी मनुष्य को, समाज का और राष्ट्र को उच्च कोटि का जीवन जीने का कारण पैदा करने का सामर्थ्य रखते है।

पूज्यपाद गुरुदेव की २० वर्ष की अवस्था तक ये प्रवचन ऐसे ही जनमानस को आश्चर्यचकित और उनका मार्गदर्शन करते रहे। परन्तु कुछ प्रबुद्ध महानुभावों ने इन

आत्मिक ज्ञान

प्रवचनों की इस अमूल्य निधि को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से सन् १९६२ से शब्द ध्वनांकित यन्त्र (टेप रिकार्ड) संरक्षित करने का निश्चय किया, और यह क्रम पूज्यपाद गुरुदेव के महाप्रयाण १५ अक्टूबर सन् १९९२ तक होता रहा।

इस अन्तराल पूज्यपाद गुरुदेव के १५०० प्रवचन, टेप रिकार्ड से संरक्षित किये गये। जिनमें सृष्टि के अनन्तकाल की अमूल्य धरोहर निहित है। हम उनको व्यवस्थित रूप से और अनुसन्धानात्मक दृष्टि से पुस्तकों के रूप में प्रकाशित कर रहे हैं। परमात्मा की अनुपम कृपा से प्राप्त, इस अमूल्य धरोहर को जन जन तक पंहुचाने के प्रयास में योगदान देने के लिए, प्रत्येक वैदिक धर्मी को सहयोगी बनना चाहिए। जिससे हम सृष्टि के आदि काल से लेकर आधुनिक काल तक की मानव गाथा को सभी के सम्मुख रख सकें। विश्व कल्याणार्थ की भावना से निहित इस महान ज्ञान की वसुधैव कुटुम्बकम की संस्कृति को प्रसारित कर सकें।

1. यज्ञमयी जीवन-730311

जीते रहो! देखो, मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेद वाणी में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। क्योंकि संसार का प्रत्येक मानव ये चाहता रहता है कि मैं वैज्ञानिक बनूँ, वैज्ञानिक बनने की उसकी कामना होती है। परन्तु विचार विनिमय ये करना है कि हमारा जो यह विज्ञानमय जीवन है जो विज्ञान की आभाओं से नियुक्त रहता है वह एक महान प्रियतम कहलाया जाता है। तो मुनिवरो! देखो, विचार विनिमय क्या आज हम वैज्ञानिक बनने के लिये सदैव तत्पर रहें। हमारे यहाँ ऋषि मुनियों के जीवन में सदैव अग्नि प्रकाशित रहती है जिस अग्नि का प्रायः वे अग्न्याधान करते हैं। वह उनकी जो प्रवृत्ति है वह समिधा बन करके वह जो प्रदीप्त होती है जैसे सूर्य, मध्य सूर्य प्रकाश देता है अथवा सूर्य हमारे यहाँ समिधा बन करके तप रहा है, वह संसार को तपा रहा है।

इसी प्रकार, संसार का प्रत्येक प्राणी जब तपने वाला बन जाता है तो समाज ऊँचा बन जाता है। विचार विनिमय क्या आज मेरे प्यारे महानन्द जी! मुझे ये बाध्य करते रहते हैं कि आप यज्ञ के सम्बन्ध में कोई प्रकाश दीजिये। परन्तु मैंने कई काल में ये विचार विनिमय करते हुए मुनिवरो! देखो, उनकी विचारधारा को लेते हुए तुम्हें एक ही वाक कहा था कि संसार में यज्ञम ब्रह्मे श्रेष्ठा कृतिभ्य। उन्होनें, हमारे आचार्यों ने ये कहा कि यज्ञ सँसार में सर्वत्र ऊँचा और महान कर्म कहलाया जाता है।

परन्तु जैसे परमपिता परमात्मा इस संसार रूपी यज्ञ को चला रहा है, इसमें क्रिया दे रहा है इसी प्रकार ये प्रत्येक कार्य यज्ञ स्वरूप माने जाते हैं। एक मानव मुनिवरो! देखो, ब्रह्मग्नि में तपता है, एक मानव भौतिक अग्नि में तपा करता है, परन्तु उन

आग्नियों में प्रायः वह तपता ही रहता है और वह तपने के पश्चात उसके जीवन की आभा एक प्रदीप्त हो जाती है। और वह महानता में वो भू, भुंव, स्वः ये जो तीन व्याहृतियाँ हैं उनका वो पोषण अथवा उसमें अपने जीवन को समाहित कर देता है। आज जब हम अपने जीवन को इसमें समाहित करना चाहते हैं तो हमें ये प्रतीत होता है कि ये जो संसार है ये एक जीवन की आभा है। मानो ये संसार एक मानवता का एक कृतिरुद्र कहलाया जाता है। मेरे प्यारे! ऋषिवर यहाँ प्राणी प्रत्येक मानव, प्रत्येक का ऋषि मुनियों का प्रायः कर्तव्य रहा है यज्ञमयी अपने जीवन को बनाना चाहिये। वास्तव में मेरे प्यारे महानन्द जी! कुछ प्रकाश देंगे यज्ञ के सम्बन्ध में जो इनकी बड़ी उत्कठ इच्छा हो रही है।

आज तो केवल हम मानो इतना उच्चारण करना चाहते हैं कि आज हम मानो गायत्री की गोद में जाना चाहते हैं। गायत्री क्या है? मैं बेटा! किसी विशेष धारा को वास्तव में जो मन्त्र वेदों में कई कई स्थलियों में प्राप्त होते हैं। चतुर्थ मानो पारायण में उनकी व्याहृतियाँ प्राप्त होती हैं। परिणाम ये कि हमारे यहाँ हमारे जीवन से एक एक अक्षर का सम्बन्ध रहता है और वह जो जीवन की आभा वो जो अक्षर है, अक्षर पुरुष है वही आभायित रह करके जीवन को ऊँचा और महान बना देता है। आओ, मेरे प्यारे! मैं अधिक विवेचना तो नहीं देने आया हूँ, केवल वाक्य ये उच्चारण करने आ पहुँचा हूँ कि हम अपने उस मानवीय जीवन को ऊँचा बनायें क्योंकि चरित्र और राष्ट्र दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। मानव समाज और चरित्र का दोनों का घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। वेद का ऋषि तो ये कहता है क्या जिस राष्ट्र में से यज्ञ जैसा कर्म चला गया उस राष्ट्र का प्राण चला गया और वेद के ऋषि ने तो यहाँ तक कहा है क्या जिस राष्ट्र में से चरित्र चला गया उस राष्ट्र के मन की क्रिया समाप्त हो गयी। तो परिणाम क्या मानो देखो, वह जो स्तम्भ बने हुए हैं जीवन के और समाज के उन दोनों स्तम्भों को ऊँचा बनाने के लिये सदैव मानव को एक प्रयास करना है। क्योंकि जिस प्रयास द्वारा सदैव जीवन ऊँचा बना करता है,

आभायित होता रहता है उस आभा को सदैव ऊँचा बनाना है और द्यौ मण्डलों को प्राप्त होना है। क्योंकि देखो, एक यज्ञमान जो यज्ञशाला में विराजमान होता है ब्रह्मा कहता है हे यज्ञमान! ऊर्ध्वा सूर्यम् गत्प्रव्हे ऋषि कहता है वेद का हे यज्ञमान! तेरी जो गति है वह सूर्य मण्डलों तक होनी चाहिए इस पृथ्वी से लेकर के। तो विचार आता है क्या मानो ऐसा क्यों कहा है ब्रह्मा ने, परन्तु एक वेद का ऋषि ऐसा उच्चारण कर रहा है परन्तु यज्ञमान जान नहीं पाता। अब अभिप्रायः ये कि यज्ञमान कौन है जो यज्ञ करता है परन्तु वह बाहरीय और आन्तरिक दोनों यज्ञों को करने वाला ही यज्ञमान कहलाया जाता है। जब दोनो प्रकार यागों को यज्ञमान करता रहता है तो यज्ञम् ब्रह्म व्यापक प्रव्हे परन्तु देखो, वह ऊँचा बनता रहता है और उसकी गति आध्यात्मिकवाद में पारायण होती रहती है अथवा गतिशील रहती है। तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या आज हम अपने देव की महिमा का गुणगान गाना चाहते हैं। अब मेरे प्यारे महानन्द जी! अपना कुछ प्रकाश देंगे। आज केवल हम तो इतना ही अपना विचार देने आये हैं जैसा महानन्द जी का कृत होगा, उनके व्याख्यानों की भूमिका होगी उसके आधार के पश्चात वह वार्ता प्रकट करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् तन्मया विश्वाव्यापकं समिधा रेवकं मानाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा भद्र समाज आज मैं ये क्या दृष्टिपात कर रहा हूँ, एक स्थली में ज्ञान की आभा, एक स्थली में यह अज्ञान की आभा। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी निर्णय कराया। यज्ञों के सम्बन्ध में नाना प्रकार की वार्ताएँ आती रहती हैं परन्तु आज के समाज ने केवल एक मनोनीत को तो यज्ञ माना है। अग्न्याधान करना जहाँ यज्ञ है, देवताओं को हवि देना जहाँ यज्ञ है। राष्ट्र को उच्चता में लाना जहाँ यज्ञ है, एक दूसरे की चरित्र हीनता का न होना जहाँ यज्ञ है। मानो ये सर्वत्र यज्ञ कहलाये जाते हैं। वह मानव इस संसार में अभागा होता है जिस मानव की यज्ञ जैसे कर्मों से प्रवृत्ति विमुख हो जाती है। वह धर्म के नामों पर रूढ़ियाँ अभागी हैं जो यज्ञों की प्रतिभा को न जान करके मानो देखो, अपने तुच्छ व्यवहारों में परणित होती

रहती हैं। वो मानो देखो, रूढ़िवाद राष्ट्र और धर्म की मर्यादा को नष्ट कर देता है। मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा था कि ये जो संसार है ये बड़ा विचित्र है।

राष्ट्र का प्राण

महाभारत के काल में जो धर्मों के नामों पर नाना प्रकार की रूढ़ियों का प्रचलन हुआ परन्तु उन रूढ़ियों का परिणाम क्या हुआ कि राष्ट्र का प्राण ही समाप्त होने लगा। राष्ट्र का जो प्राण है वह यज्ञ जैसा कार्य है। परन्तु देखो, यहाँ उस यज्ञ के चले जाने पर, प्राण के चले जाने पर, दाह के चले जाने पर यहाँ रूढ़ियों का आक्रमण हो गया। उन रूढ़ियों, धर्म की रूढ़ियों ने धर्म के नामांकित रूढ़ियों ने इस राष्ट्र के और समाज के धर्म के वैदिक साहित्य को अग्नि के मुखारबिन्द में परणित कराया। परन्तु आज मैं इस विषय को नहीं उच्चारण करने आया हूँ, केवल ये उच्चारण करने आ पहुँचा हूँ क्योंकि धर्म के नामों पर मानो कितने मानव मानव का भक्षण हो जाता है। आज हमें मानव का भक्षण नहीं करना है। क्योंकि संसार में उस भव्यता को अपनाना है, उस महानता को अपनाना है जिससे हमारे जीवन की आभा आभायित और ओत प्रोत होती है।

आओ, मेरे प्यारे! पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे अभी अभी निर्णय कराया क्या यज्ञ के सम्बन्ध में मैंने जब ये प्रश्न किया बहुत पुरातन काल से प्रश्न और उत्तरावलियाँ चलती रहती हैं परन्तु परिणाम क्या, क्या हम ये अपने में अनुभव करते हैं इस संसार को दृष्टिपात करके, क्या ये संसार अज्ञानता के मुखारबिन्द में जा रहा है। यहाँ आज का मानव ये उच्चारण करता है कि विज्ञान ऊँचा है मानो देखो, विज्ञान क्या है विज्ञान ही मानो अपनी मानो यज्ञशाला से विज्ञान का जन्म होता है। क्योंकि विज्ञान के कणों को, साकल्य के कणों को, घृत के कणों को जो इनका अध्ययन कर लेता है, जो इनके ऊपर अध्ययनशील होता है मानो देखो, वह सँसार का वैज्ञानिक बन जाता है। परिणाम क्या मानो यहाँ रूढ़ियों ने धर्म की परम्परा को

नष्ट कर दिया उसका परिणाम कहाँ तक अज्ञानता आ रही है क्या आधुनिक काल के जो राष्ट्र नायक है वो ये कहा करते हैं, उन्हें यह भय होता है, क्या तुम यज्ञ जैसे शुभ कर्मों में जाओगे, तो तुम्हारा किसी काल में ये पाप समाप्त न हो जाये जो तुम करते रहते हो। मानो देखो, ये मेरा विचार बना हुआ है क्योंकि उनकी मनो भावना उन वाक्यों पर नहीं चलती। वो क्या कहते हैं कि मोहम्मद के मानने वाले हमसे रुष्ट न हो जायें, ईसा के मानने वाले रुष्ट न हो जायें। परन्तु वो रुष्ट क्यों हो जायेंगे जब तुम शुभ कर्म करोगे? जब तुम अध्यात्म दर्शन को निर्णय करने वाले होगे, विज्ञान को निर्णय करने वाले होंगे तो मानो वो तुमसे रुष्ट क्यों हो जायेंगे? परन्तु तुम बहुत समय तक यवनों के आधीन रहने से तुम्हारा आत्मबल समाप्त होता चला जा रहा है। परन्तु वह आत्मबल नहीं रहा आज जो तुम अपनी घोषणा कर सको कि हमारा कणाद का समय, हमारा महर्षि पतञ्जली और व्यास का जो दर्शन है। आज हमें वेदों की पोथी को विचारना चाहिए, उन पर अनुसन्धान होना चाहिए, उनके योगाभ्यास होना चाहिए उनसे विज्ञान की ऊँची ऊँची तरंगों को जाना जाये। परन्तु जब ये वाक् आता है आज जब हमारी वैदिक सभ्यता को संसार का व्यक्ति तो अपनाता है। ईसा के मानने वाला कहता है यदि कोई शान्ति प्राप्त होती है तो उपनिषदों के गृह में जा करके हो जाती है। एक बार देखो, मोहम्मद के मानने वाला कहता है कि वेदान्त पे जाकर के शान्ति स्थापित होती है। परन्तु उन विचारों को क्यों नहीं स्वीकार कर रहा है आज का राष्ट्रनायक?

परन्तु देखो, वो समय दूसरी नहीं रहा है जब मानो देखो, सर्वत्र राष्ट्रों में अग्नि ऐसी प्रदीप्त हो जायेगी क्योंकि जब धर्म का लुप्त होने लगता है और धर्म पर राष्ट्र नायक भयभीत होने लगते हैं तो मानो देखो, जो सभ्यता से भयभीत होता है उस मानव का आत्मबल नहीं रहता जब आत्मबल नहीं रहता तो उस मानव का जीवन समाप्त हो जाता है।

हर्ष ध्वनि का स्रोत

परिणाम क्या मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये वाक् अधिकता में प्रकट नहीं करूँगा परन्तु विचार ये देना चाहता हूँ क्या आज मानो शुभ कर्म मानव का, यज्ञ जैसे श्रेष्ठ कर्म को, आज मेरा अन्तरात्मा हर्ष ध्वनि करता है। हर्ष ध्वनि करता है क्योंकि यदि कभी मोहम्मद ने किसी काल में पदार्थ विद्या को जाना होता, ईसा ने पदार्थ विद्या को नहीं जाना परन्तु देखो, संस्कृत भी नहीं जानते थे, न जानकर के ही मानो यज्ञ जैसा उन्होंने खण्डन नहीं किया। सुगन्धि का खण्डन नहीं किया क्योंकि ये उनके मानने वाले जो रूढ़िवादी बन गये हैं, वह जो रूढ़ि है मानो देखो, उसने उसको सुगन्धि से दूरी कर दिया और दुर्गन्ध से मानो उन्हें भरण कर दिया दूसरों के रक्त को पान करने के लिये तो सदैव धर्म का रूढ़ि मानी जाती थी तो उसे वाम मार्ग कहा जाता है और वाम मार्ग क्या होता है? ये मोहम्मद के मानने वाले सर्वत्र वाम मार्ग का प्रसारण, वाम का विचार रहता है। मानो देखो, सत्य मार्ग से जब विचलित हो जाते हैं, उस विचिलतता में मानव की मानवता समाप्त हो जाती है। परिणाम क्या होता है कि आज हम यदि कोई राष्ट्रनायक ऊँचा बने तो एक ओ३म् की पतिका के नीचे ये सर्वत्र राष्ट्र होना चाहिए। न तो यहाँ रूढ़ि होगीं न धर्म के नामों पर यहाँ एक दूसरे के रक्त को पान किया जायेगा। एक दूसरे के रक्त को पान वहाँ किया जाता है जहाँ रूढ़ियाँ होती हैं धर्म के नामों पर द्रव्य को एकत्रित करके उस द्रव्य की लोलुपता बन जाती है वहीं तो मानो देखो, सर्वत्र विनाशता को प्राप्त होने लगते हैं।

मैं आज अधिक विवेचना नहीं देने आया हूँ, आज मानो ये उच्चारण करने आया हूँ हे राजा! हे आधुनिक काल के राष्ट्र नायकों! तुम्हें विचारना होगा धर्म और मर्यादा को विचारना होगा। यदि तुम धर्म और मर्यादा को नहीं विचारोगे तो राष्ट्र तुम्हारा कदापि ऊँचा नहीं बनेगा, उसको राष्ट्रवाद नहीं कहते हैं। आज एक नियम बनाया है कल वो नियम नष्ट होने वाला है उसको राष्ट्र नहीं कहते। क्योंकि राष्ट्र के अधिक नियम नहीं होते उसके केवल चार पाद होते हैं। राष्ट्र के उन चार पादों में ही मानो

देखो, सर्वत्र राष्ट्र का निर्माण आ जाता है। चार ही पाद प्रभु को जानने के लिये होते हैं इसी प्रकार मानो देखो, चार चार इनमें ही मानव संलग्न रहता है तो उसको आज हमें विचारना है, हमें अनुसन्धान करना है। हमें वेद की उस धारा पर विचार विनिमय करना है जिस वेद की धारा को विचारने वाला मानव केवल यज्ञशाला में अनुसन्धान करता है। नाना प्रकार की समिधा और साकल्य को एकत्रित करता है। एक ब्रह्मा बना हुआ ब्राह्मण है वो वृष्टि यज्ञ का नायक है वृष्टि यज्ञ कराता है, पुत्रेष्टि यज्ञ कराता है। मानो वो विजय नामक यज्ञ कराता है तो नाना प्रकार के यज्ञों के घोष होते रहते हैं। यागों के घोष होते रहते हैं परन्तु उन यागों में आज का राष्ट्रनायक ये कहता है घृत को अग्नि में न परणित करो क्योंकि अग्नि ये हमारा जो समाज है ये मानो अन्न से पीड़ित हो रहा है। अरे, वो काल कहाँ था महाभारत काल से पहले आज से भी गणना अधिक कहलायी जाती थी। मानो देखो, त्रेता काल में भी गणना बहुत रहती थी, मानव बहुत था। मानो गऊओं का पालन होता था। राजा के राष्ट्र में, उस काल तक राजा का राष्ट्र ऊँचा नहीं बनेगा, राजा के राष्ट्र में कदापि भी अन्न की परम्परा समाप्त नहीं होगी। अहा! कृतम देखो, अन्न से जो पीड़ित होने वाला प्राणी है उस काल में नहीं होगा जब राजा के राष्ट्र में देखो, कामधेनु गऊ की पूजा होती है। दूध देने वाले पशु की पूजा होगी परन्तु जिस राजा के राष्ट्र में दुग्ध अधिक होता है अहा! उस राजा के राष्ट्र में अन्न का कभी अभाव नहीं होता, कोई मानव अन्न से पीड़ित नहीं रहता।

अन्न से पीड़ित हुआ यह जो प्रकृति है माँ वसुन्धरा है। प्रभु भी माँ वसुन्धरा है जब आज का मानव, आज का राष्ट्रनायक जब माँसो की पूजा करता है। दूसरों के जीवों को नष्ट करके मानव उनके उस मांस को भक्षण करने लगा तो ये माता तुम्हें अन्न क्यों प्रदान करेगी? क्योंकि माता तुमसे वही वस्तु छीन लेती है जिस वस्तु से तुम मानो देखो, माता से विरोध करते हो। जैसे माता का प्रिय बालक है और माता अपने पुत्र को नाना प्रकार जो माता का पुत्र अनुकूल करता है उसको माता सर्वत्र

प्रीति देती है, प्रतिभा देती है परन्तु जो प्रतिकूल चलता है उसको माँ अपने में पुत्रता को ग्रहण कर लेती है। परिणाम इसी प्रकार है पूज्यपाद गुरुदेव! हे ऋषियों! हे भद्र समाज! इसी प्रकार जब राजा के राज्य में मानो देखो, दूसरे प्राणियों का हनन होने लगता है जो समाज के लिये लाभदायक हैं मछली जैसा प्राणी लाभदायक है मानो देखो, मृग जैसा प्राणी लाभदायक है। आज वो कितना लाभदायक है क्या वो इतना लाभदायक है क्या वो मानो अशुद्ध परमाणुओं को निगलता है। सर्प जैसी योनि समाज के लिये लाभदायक है मानो उसको प्रभु ने एक गुण दिया है और उस गुण का सम्बन्ध मानव के जीवन से रहता है परन्तु जो मानव उनका भक्षण कर जाते हैं इन्हीं को अपना मानो देखो, उदर को ही जीव भक्षण करने का साधन बना लेते हैं तो मुनिवरो। उन प्राणियों को तुम्हें प्रतीत है क्या गति होती है? मेरे पूज्यपाद को तो प्रतीत है परन्तु उसकी गति क्या होती है उसकी गति ये होती है समा अवश्त्व प्रवहे अज्यातम् लोकम् ब्रह्मा मानो देखो, उस राष्ट्र से अन्न चला जाता है। अन्न के अन्न चले जाते हैं ये माँ वसुन्धरा है मानो कामधेनु है। आज तुम इसकी जितनी पूजा करोगे ये उतना तुम्हें वैभव प्रदान करेगी।

गो नाम के प्राणी की रक्षा होनी चाहिए इससे राजा के राष्ट्र में दुग्ध अधिक होने चाहिए जो सात्विक परमाणु ले करके आता है इस जगत में। इसी प्रकार हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! ये वाक्य उच्चारण करना क्या मानो यज्ञ जैसे कर्म होने चाहिएं जहाँ मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ परन्तु देखो, एक राष्ट्रनायक एक राष्ट्र का नेतृतव करने वाला मानो मृग का तो उद्घाटन करने के लिये तत्पर हो जाता है परन्तु देखो, जब यज्ञ जैसे कर्मों को ये कहा जाये क्या तुम भगवन वहाँ चलिये तो उस समय यह उच्चारण कर रहा है अरे, भई! राष्ट्र में तो अन्न की बड़ी विशेषता है। अरे, मानो इसका तुम्हारे ऊपर क्या दायित्व है? तुम्हारा उदर प्रबल बन जाये ये समाज कहीं चला जाये परन्तु उदर तो तुम्हारा ही है। परन्तु देखो, उदर तुम्हारा ऊर्ध्वा होना चाहिए। आज का मानव मानो देखो, जहाँ मैं ये विचारता रहता हूँ, जहाँ आज का

मानव अन्न से पीड़ित है अन्न से पीड़ित क्यों है, इसलिये है क्योंकि जो नेतृत्व करने वाले राष्ट्र का उनका उदर ऊँचा होना चाहिए उनके उदर में मानो अधिक भक्षा भक्ष होना चाहिए। साधारण समाज कहीं चला जाओ।

पुण्य का उदय न होना

परन्तु देखो, जहाँ यज्ञों के सम्बन्ध में कहा जाये तो ये कहा जाता है ये क्यों कहा जाता है इसलिये कहा जाता है क्योंकि उनका पुण्य का उदय नहीं है मानो उनका पाप का उदय हो रहा है। पाप का उदय होने के नाते मस्तिष्क ही नहीं चलता। हाँ एक वाक्य है यदि एक अप्रतम् रूढ़िवादी ये कहे कि आओ, महाराज क्योंकि रूढ़ियों से तो उसे सहायता प्राप्त होनी है, परन्तु देखो, रूढ़िवादियों का वह पूजन करने के लिये भी तत्पर है। तो ये मानव का जीवन अभागा है। मानव के जीवन में कोई विशेषता नहीं है, मैं स्वीकार करता हूँ। परन्तु देखो, मैं अधिक विवेचना नहीं दूँगा।

यजमानो को आशीर्वाद

यज्ञ के सम्बन्ध में आज मैं यजमानो का आशीर्वाद देने आया हूँ। हे यजमानो! तुम्हारा जीवन उर्ध्वा बने, हे यजमानो! तुम्हारा सौभाग्य सदैव अखण्ड बना रहे मेरे हृदय की ये वेदना रहती है। आज जो यज्ञमान जिस कामना से बने, वो कामना प्रभु उनकी पूर्ण करता रहे, यज्ञ भगवान पूर्ण करता रहे मानो क्योंकि वह प्रकृति के परमाणुओं में मिश्रित हो जाता है परमाणु। तो इसीलिये मानो वह जो परमाणु है वह उसी में ओत प्रोत रहने चाहिए। हे यज्ञमान! मानो तेरा सौभाग्य इस संसार में अखण्ड बना रहे, तेरा जो जीवन है वो सदैव सूर्य की भाँति चमकता रहे कोई भी अशुद्धियाँ तेरे जीवन में न हो। वाणी का उद्घोष करने वाला भक्ष अभक्ष को पान न करने वाला मैं यज्ञमानो को उच्चारण अवश्य ये करता रहता हूँ। क्या यज्ञमानो को माँस इत्यादि का सेवन नहीं करना चाहिए क्योंकि यज्ञमान सदैव सौभाग्य से ही प्राप्त होते हैं।

अहा! उनका जीवन देखो, वह मुझे तो स्मरण आता रहता है। पुरातन काल में जो

यज्ञमान बनता था ऋषि मुनियों की सम्मति ली जाती। उनको छः छः माह तक व्रत लिया जाता उसके पश्चात जब वो याग करते थे वो याग सफलता में प्राप्त होता रहता था।

यजमानो को उद्बोधन

परन्तु आज तो मैं ये उच्चारण कर सकता हूँ न करने से कुछ करना बहुत सुन्दर माना जाता है। रहा ये कि मैं यज्ञमानो को ये उच्चारण करने जा रहा हूँ सपत्नी स्वास्थ्य ऊँचा रहे परन्तु उनकी मनोकामना पूर्ण होनी चाहिए। उनको अपने जीवन में देखो, यज्ञमान को तो वाक्यों पर अनुसन्धान करना है। मानो गृहस्थ जब नरक बनता है तो कौन सा गृह नारकिक बनता है जिस गृह में परा स्त्री से मानव गमन करने लगता है तब उस गृह का पुण्य समाप्त हो जाता है। मानो पति पत्नी में प्रसन्नता नहीं रहती, उद्घोषणा नहीं रहती। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न करता रहता हूँ मैं भी उसका समाधान कर सकता हूँ परन्तु देखो, करता रहता हूँ। वो मानव बड़ा अभागा है, वो मेरी पुत्र बड़ी अभागी है जो मानो देखो, परा पुरुष और परा स्त्री गमन करने की चेष्टा करता है। उस मानव को मैं तो प्रभु से ये कहा करता हूँ ऐसे प्राणियों का सुकृत नष्ट हो जाता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहा है जिस गृह में मानो पन्द्रह वंशलज चरित्रहीन चलते आये हैं पन्द्रह वंशालियों में उसका देखो, कोई वंशलज नहीं रहता पन्द्रह के पश्चात। इसी प्रकार मानो देखो, ये आज मानव को विचारना है जो मानव गृह को नरक बनाना चाहता है वो परा स्त्री गामी होता है। राजा का कर्तव्य है राष्ट्र के कर्मचारियों का क्या ऐसे प्राणियों को मानो देखो, उसको ऐसे प्राणी को नष्ट कर देना चाहिये। परन्तु देखो, हमारे यहाँ नियम है राष्ट्र का द्रोही कौन है?

राष्ट्र का द्रोही वो कहलाता है जो राजा के राष्ट्र में चरित्र हीनता को लाता है, परा स्त्री गामी होता है। दूसरे की पुत्रियों को कुदृष्टिपात करने वाला होता है, वह मानव राजा के राष्ट्र में जो ऐसा प्राणी है, वह जो यज्ञमान है वह जो मानव है वह अपने

गृह को नरक बना रहा है। अगले जन्मों के लिये मानो पापों को एकत्रित कर रहा है और अपने पुण्यों को समाप्त करता चला जा रहा है। तो ये मैं आज गौरव के सहित कहा करता हूँ। परन्तु मैं अधिक चर्चा तो प्रकट नहीं करूँगा।

केवल वाक्य ये उच्चारण करने जा रहा हूँ हे यजमानो! तुम्हारा जीवन अखण्ड बना रहे। हे ब्राह्मणों जो वेद का पठन पाठन करने वाले जिनका मानो उद्गान चलता हो उद्गाताओं के द्वारा मैं ये कहा करता हूँ, यज्ञ करने वाले कर्मकाण्डी ब्राह्मण हों और उनका आयु दीर्घ हो उनके आयु में एक महानता हो उनके जीवन में विवेकता होनी चाहिए। वह जो विवेक है वही तो राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाता है। इसीलिये आज मैं अधिक चर्चा तो प्रकट नहीं करूँगा क्योंकि मुझे पूज्यपाद गुरुदेव की इतनी आज्ञा नहीं है।

परन्तु विचार विनिमय यही है कि आज यज्ञमानों को मैं यही उच्चारण कराऊँ उनकी यहाँ सर्व सम्पदा होनी चाहिए यज्ञमान अपने चरित्रों को ऊँचा बना लें और परमात्मा उनके मनोकामना की पूर्ति हो जाये तो मानो देखो, ये गृह स्वर्ग बन गये। गृह तो स्वर्ग उसी काल में बनते हैं, जब मानव अपने जीवन को ऊँचा बनाता है। मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से बहुत ही पुरातन काल में नाना प्रकार की वार्ताएं प्रकट की परन्तु देखो, आज भी करता रहता हूँ। मानव को अपने जीवन में सुचरित्र होना चाहिए, मानवता का प्रसार होना चाहिए और राष्ट्रीयता का होना चाहिए जिससे यह राष्ट्र और समाज पवित्र बनता चला जाये। मैं आज अधिक विवेचना नहीं प्रकट करने आया हूँ।

लाक्षागृह का इतिहास

केवल यज्ञों के सम्बन्ध में मैं मानो देखो, ये मेरा कैसा सौभाग्य है। मानो इस भूमि पर ये महाभारत काल की वो पवित्र भूमि है मानो जहाँ व्यास मुनि महाराज ने देखो, वेदान्त की लेखनीबद्ध की थी। ये वो पावन भूमि है मानो जहाँ देखो, पाँचों पाण्डव आये और उन्होंने देखो, वो जीवित चले गये। ये वो पवित्र भूमि है जहाँ

महाराजा दुर्योधन ने नष्ट करने के लिये एक मानो देखो, मन्दिर का निर्माण किया, गृह का निर्माण किया। वह ऐसा गृह था वैज्ञानिक तत्वों से बना हुआ ऐसे सूत्रों से बना हुआ था जिसमें अग्नि सदैव बहुत ही शीघ्रता में प्रसारित हो सकती थी परन्तु देखो, यहाँ से वो प्रभु की और मानो महात्मा विदुर के कथनानुसार यहाँ से जीवित चले गये। आज वही भूमि जहाँ महाराजा भीम का यहाँ मानो देखो, एक विज्ञानशाला रही है। घटोत्कच्छ ने एक ही नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण किया हो। यहाँ इसी प्रकार ये भूमि क्या बनती चली गयी सदैव ये भूमि देखो, मन्दिरों में चली आयी। अहा? उसके पश्चात मोहम्मद के मानने वालों ने आ करके इसको श्मशान बना दिया।

यज्ञ भूमि पूज्यपाद गुरुदेव की तपस्थली

परन्तु देखो, मैं यह नहीं जानता मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मानो किसी काल में इस भूमि पर कोई तपस्या की होगी। मैं नहीं जानता उस भौतिक जीवन से संसारिक जीवन से भूमि से बड़ा सम्बन्ध है और वह क्यों है। इसको मैं नहीं उच्चारण करूँगा, किसी काल में और ही प्रकट करूँगा। ये तो केवल हो कि किसी काल में तप किया गया होगा और वो तप के कण अन्तःकरण में जागरूक हो गये होंगे मानो देखो, जिससे नाना प्रकार की कठिनाइयों के मृत्यु के मुखारबिन्द में जाने के पश्चात भी वो निष्ठा ज्यों कि त्यों बनी रहती है। इसी प्रकार आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव के भौतिक शरीर से ये कहा करता हूँ क्या जीवन में निष्ठा बनी रहे। मानो देखो, पुत्र को पुत्र की दृष्टि से माता को माता की दृष्टि से सदैव पान होती रहे। मैं पूज्यपाद गुरुदेव को प्रेरणा भी देता रहता हूँ, किसी किसी काल में।

सूक्ष्म शरीर से यज्ञ मण्डपों का दर्शन

परन्तु रहा ये आज मैं अपने सूक्ष्म शरीर के द्वारा जब मैं मण्डपों का विचार करता हूँ, मैंने मण्डपों को दृष्टिपात किया तो मेरा अन्तरात्मा बहुत प्रसन्न हुआ और अन्तरात्मा में एक ज्योति जागरूक हो गयी वह जो ज्योति थी मानो देखो, उससे

मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरा अन्तरात्मा तो बहुत ही पवित्र बनता चला जा रहा है। इसी प्रकार मानो देखो, मैं ये वाक् और उच्चारण करने जा रहा हूँ, इसके पश्चात मैं अपना वक्तव्य समाप्त करूँगा। मानो देखो, ये जो भूमि जहाँ इस पर नाना प्रकार के प्राणियों का हनन हुआ हो आज वही भूमि जहाँ दूसरे की पुत्रियों के शृंगार का हनन किया जाता हो आज वही भूमि यज्ञों में परिवर्तित हो गई है। यह कितना सौभाग्य है भूमि का मानो ये समाज का और जो अङ्गरती अस्तो इस पर जो समाज रहने वाला है उसका भी तो सौभाग्य है। रहा ये वाक् कि मानो देखो, यहाँ क्या नहीं हुआ उस वाक् में मुझे जाना नहीं है। मैं उन वाक्यों में जाना नहीं चाहता हूँ, परन्तु केवल इस सम्बन्ध में तो एक ही विचार देने आया हूँ कि हम अपने जीवन को ऊँचा बनाने में सदैव तत्पर रहें। हमारे जीवन की सहकारिता बनी रहे हम उस सहकारिता को अपने जीवन में ऊँचा बनाने के लिये सदैव तत्पर रहें।

आज मैं अधिक विवेचना तो प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल ये क्या ये मानो भूमि जहाँ देखो, ये वही अहिल्या है जिसका भगवान राम जैसे महापुरुषों ने कल्याण किया हो जब निषाद को ले करके भूमि पर अन्न उत्पन्न किया गया हो आज ये वो ही अहिल्या भूमि है, जो मानो देखो, वज्र के तुल्य थी आज वो भूमि हरी भरी होने जा रही है ये कितना सौभाग्य है भूमि का। ये अहिल्या है, अहिल्या का उद्धार करने वाला मानो कोई कोई प्राणी जैसे भगवान राम थे अहा! उन्होंने निषाद के राष्ट्र को हरा भरा बना दिया। इसी प्रकार आज मुझे ये दृष्टिपात आ रहा है। आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह आज्ञा पाऊँगा क्या मानो मैं ब्राह्मणों को, उद्गाताओं को, ब्रह्मचारियों को और क्योंकि वह कुछ ही ब्रह्मचारी हैं इसमें, कुछ अब्रह्मचारी हैं मानो देखो, कुछ वेदपाठी जो ब्रह्मा हैं उनमें बहुत गम्भीरता का मैं दर्शन कर रहा था, अपने में दृष्टिपात कर रहा था। मैं यह चाहता हूँ, उनकी सदैव गम्भीरता, उदारता और भी ज्ञान के गर्भ में जायें, प्रकृति के गर्भ में जायें संसार को लाभ प्रदान करें इससे साथ साथ मैं ये उच्चारण कर रहा हूँ, स्वास्थ्य उनका

बना रहे। साथ साथ ब्राह्मण जन अवश्य अपने में अनुसन्धान करें स्वास्थ्य ऊँचा होगा तो वेद का प्रसार होगा। अब मैं इसके साथ अपने वाक्यों को समाप्त कर रहा हूँ।

पूज्यपाद गुरुदेवः धन्य हो! मेरे प्यारे! ऋषि मण्डल, आज मेरे प्यारे महानन्द जी! ने एक अपना सुन्दर विचार दिया परन्तु उन विचारों में कोई मानो रूढ़िवादिता, कोई कटुता हो तो मैं नहीं उच्चारण कर सकता। रहा ये वाक्य मैं भी जैसा महानन्द जी आज मानो देखो, अपना इस सम्बन्ध में विचार दे रहे थे यज्ञों के सम्बन्ध में, यज्ञमानों के सम्बन्ध में, यज्ञ तो मानव का जीवन होना ही चाहिए परन्तु देखो, यज्ञ जितना होगा उतना राष्ट्र समाज में आस्तिकता का प्रसार होगा जितना आस्तिकता का प्रसार होगा उतना ही मानव समाज में चरित्र होगा तो इसीलिये आज मैं ये ही उच्चारण महानन्द जी के कथनानुसार ब्राह्मणजन ब्रह्मचारियों को और यज्ञमानों को मैं यही कहा करता हूँ कि मनोकामना पूर्ण करे परन्तु मनोकामना में धर्म और मानवता होनी चाहिए। परन्तु रहा ये वाक्य समाज में मुझे तो ऐसी बहुत सी बातों का प्रतीत होता है। परन्तु रहा ये कि व्यास मुनि ने इस भूमि पर तपस्या की तो बहुत ही प्रियता वेदान्त का उन्होंने उन्होंने प्रसार किया। इसी प्रकार यहाँ देखो, भूमि का महाभारत के काल में जैसा महानन्द जी ने मुझे प्रगट कराया मैंने भी दृष्टिपात किया क्या यहाँ महाराजा द्रोणाचार्य के अहा! अस्त्रों शस्त्रों का एक ही स्थल रहा है तो इसके साथ मैं अधिक चर्चा नहीं दूँगा। महानन्द जी ने बहुत कुछ अपने विचार दिये हैं।

आज का हमारा वाक्य तो ये कि हम अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते रहें। देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, अपने प्यारे प्रभु का गुणगान गाते हुए इस संसार सागर से पार हो जायें। ये आज का वाक्य समाप्त अब वेदों का पाठ होगा। हे यज्ञमानों! तुम्हारी कामना पूर्ण हो, आत्मबल तुम्हारा बलवान हो, यज्ञ ऊँचे करते रहो। ब्राह्मणों का जीवन ऊँचा हो और स्वस्थ होना चाहिए। ये इसके साथ मैं अपने

विचारों को समाप्त कर रहा हूँ। ओ३म् तानु मां प्राची आभ्यां ऋषि आपा मनो देवं दधि आभाः। ओ३म् तनु गाता आभ्यां देवं तानु विश्वा नरो अमृताः। ओ३म् देवं मया सर्वं भद्राः। वेदपाठ...।

पूज्य महानन्द जीः अच्छा भगवन!।

पूज्यपाद गुरुदेवः आनन्द मंगलम्।

2. आत्मिक याग एकोकीकरण-860504

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में, उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है। मानो उस परमपिता परमात्मा की जो महती है, वह इस ब्रह्माण्ड के एक एक कण कण में व्याप्त है, इसीलिए हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहते हैं। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान का वर्णन करता रहता है। क्योंकि जितना भी यह संसार यह जड़वत और चैतन्यवत दोनों मे दृष्टिपात आ रहा है, आज परमपिता परमात्मा की महती मानो जड़ रूप में भी और चैतन्य रूप में भी दृष्टिपात करते रहते हैं।

तो आओ, जब हम यह विचारते रहते हैं कि परमपिता परमात्मा यज्ञमान है, मानव उसी की प्रतिभा में, प्रत्येक प्राणी मात्र आभायित हो रहा है, अथवा उसी में निहित हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो, जब हम वेद मन्त्रों की प्रतिभा अथवा उसके वांगमय में प्रवेश करते हैं। तो ज्ञान और विज्ञान की वार्ता भी हमारे समीप आने लगती है परन्तु जब हम और गम्भीरता में प्रवेश करते हैं तो यह संसार एक प्रकार की यज्ञशाला के रूप में प्रायः दृष्टिपात आने लगता है, परन्तु जब हम और भी गम्भीर अध्ययन प्रारम्भ करते हैं, तो यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो एक अनुशासित हो रहा है, अनुशासन में बद्ध हो रहा है, क्योंकि यदि इस संसार की प्रतिभा में प्रायः अनुशासन न हो, अन्वेषण न हो, तो मानो देखो, मानव अपनी आभा में निहित नहीं हो सकता। तो इसीलिए वेद का मन्त्र यह कहता है वेद की आख्यिका यह कहती है कि हम

परमपिता परमात्मा की महिमा का सदैव गुणगान गाते रहें, अथवा उसकी प्रतिभा में सदैव हम रत्त रहें। जिससे मानव का जीवन परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान से सजातीय हो जाएं, तो इसीलिए वेदमन्त्र यह कहता है कि यह संसार जिस भी रूप में तुम अपने में संसार को धारण करना चाहते हो, उसी रूप में यह तुम्हें दृष्टिपात आने लगता है। जब हम यह विचारते हैं, कि यह संसार एक प्रकार का राष्ट्रीयता में परणित हो रहा है। तो मानो एक अणु से ले करके परमाणु और मानो प्राणी मात्र तक क्या यह सर्वत्र मानो एक राष्ट्रीयता में प्रायः दृष्टिपात आ रहा है। जब हम मुनिवरों! देखो, हम इस आभा में निहित होते हैं, तो प्रायः हमें ऐसा दृष्टिपात आने लगता है कि हम परमपिता परमात्मा की महती के मानो उसके गर्भस्थल में विद्यमान हैं। जैसे माता के गर्भस्थल में प्रत्येक शिशु विद्यमान हो करके अपनी महानता को अपने शरीराम ब्रह्म वाक को प्राप्त कर लेता है। तो मानो वह अपनी आभा में निहित हो जाता है। तो इसीलिए हम प्रत्येक मानव प्रत्येक प्राणी मात्र हमें मानो यह दृष्टिपात करते हैं, विद्यमान है, यह परमात्मा का सर्वत्र राष्ट्र है, मानो देखो, कीं देखो, ऊर्ज्वा दे रहा है, कहीं से कोई प्राण दे रहा है, कहीं से कोई गुरुत्व दे रहा है, कहीं से मानव को तेजोमयी बना रहा है। कहीं से मानव अवकाश प्राप्त हो रहा है, तो इसके मूल में भी तो जाना चाहिए। प्रत्येक मानव को इसके मूल में प्रवेश करना चाहिए। क्या इसके मूल में क्या है? तो मेरे प्यारे! जब मानव अनुसन्धान करने लगता है, विचारने लगता है गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाता है, तो वही चेतना का स्रोत हमें दृष्टिपात आता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! हम विचार विनिमय यह दे रहे थे क्या प्रत्येक मानव बेटा! अपनी अपनी दृष्टियों से जब तक मानो देखो, हमारे जीवन की प्रतिभा एक महान नहीं बन पाई, तो वेद का वाक यही कहता है वेद का ऋषि यही तो कह रहा है कि हम परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को और अपने मानवीय दर्शन का दोनों का जब समन्वय करते हैं तो मुनिवरों! देखो, यह संसार और दोनो में देखो,

यज्ञोमयी इस विद्या में परणित हो जाता है। आओ, मेरे प्यारे! मैंने बहुत पुरातन काल में याज्ञवल्क्य मुनि महाराज की आभा में विद्यालयों में जब मैं प्रवेश करता रहा हूँ, तो महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के यहाँ नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहते थे, अथवा जब वह अध्ययन करते तो तो प्रातःकालीन उनके यहाँ एक आचार संहिता बनी हुई थी, क्योंकि आचार संहिता का हमारे यहाँ बड़ा महत्व माना गया है और देखो, अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में संलग्न हो जाना, प्रातःकालीन अपने शारीरिक क्रियाओं से निवृत्त हो करके मानो ध्यानावस्थित हो करके याज्ञाम ब्रह्म लोकां वह अपने आचार्य के संरक्षण में विद्यमान हो करके मेरे प्यारे! देखो, वही प्रातःकालीन याग में परणित हो जाते। मानो देखो, जब अग्नि होत्र होता, अग्नि होत्र के पश्चात वायु जाता है, यह अग्नि तो देवताओं का मुख है, इसके मुख में जो भी तुम प्रदान करोगे उसका ही सूक्ष्म बना देती है। उसका मानो वह सूक्ष्म और परमाणुओं का विभाजन कर देती है। वहीं परमाणुओं का विभाजन बेटा! भूः, भुवः और स्वः मानो देखो, वह तीन रूपों में वह परमाणु रत्त हो जाते हैं। वह भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहा है, विद्यालयों में तीन प्रकार के यागों का चयन होता रहा है, गार्हपथ्य अग्नि मानो देखो, जो अपने हृदयों में प्रदीप्त हो करके वह वाहन के रूप में प्रगट होती रहती है। मेरे प्यारे! देखो, एक अग्नि हमारे यहां जो गार्हपथ्य कहलाती है, जो यज्ञशाला में प्रदीप्त है। जो काष्ठों में ओत प्रोत रहने वाली है, मानो वह अग्नि विभाजन करने वाली है, वह विभाजन विभक्त करके ही मानो प्रतिक्रियाओं का स्रोत बन जाती है। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या एक समय याज्ञवल्क्य मुनि महाराज अपने विद्यालय में विद्यमान थे ब्रह्मचारियों के संरक्षण यज्ञशाला में विद्यमान हो वह देवपूजा करा रहे थे मानो अग्न्याधान करके साकल्य प्रदान करके मानो देखो, वह देवताओं को हूत कर रहे थे।

तो मेरे प्यारे! देखो, यज्ञशाला में कुछ ब्रह्मचारियों ने एक मानो नृत्त बनाया जिसको हम एक रूपक के रूप में परणित करते रहते हैं, एक आलांकारिक रूपों में मानो

दर्शन भी आलांकारिक रूपों में निहित रहता है। मेरे प्यारे! देखो, जिस भी काल में ऋषि मुनियों ने किसी वेदमन्त्र की व्याख्या की है, तो अलंकारों में अलंकृत कर दी है क्योंकि अलंकृत करने से मानो देखो, वेदमन्त्र के भाव की जो शोभा है अथवा उसकी जो प्रतिभा है वह प्रायः महान बन जाती है वह एक विचित्र बन जाती है। तो इसीलिए हमारे ऋषि मुनियों ने एक वेदमन्त्र को सजातीय बनाया, जैसे वेद मन्त्रों को बेटा! परम्परागतों से ही, जैसे सजातीय बनाते रहते हैं, मानो चन्द्रमा को पर्यायवाची शब्दों में, साहित्य में मानो वर्णन किया है जैसे रात्रि को, पर्यायवाची शब्दों में सजातीय बनाया है। इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ जैसे मेरे पुत्र ने एक समय वर्णन कराया था, मुझे वह वेद का मन्त्र स्मरण आता रहता है वेदमन्त्र कहता हैं, चन्द्रो मथं ब्रह्मा कृतं ब्रीहि व्रत्या अहिल्याणि गच्छतम वाचन्नम ब्रह्मे वायु मनुवराः सम्भूति प्रकाशाम सूर्याणि गच्छतम देवाः मेरे प्यारे! देखो, एक रूप बना हमारे यहाँ एक वेद का मन्त्र आया उसकी आख्यिका यह है उसका जो वर्णन शैली है वह बड़ी विचित्र रही है, मानो वर्णन शैली कहाँ मेरे पुत्रों! देखो, चन्द्रमा को गुरु सम्भवा लोकाम मेरे प्यारे! देखो, चन्द्रमा को हमारे यहाँ गुणा सोम कहते हैं। जहाँ उसे मेरे पुत्रों! देखो, सोमवृत्तिका कहते हैं, जहाँ कान्ति कहते हैं, जहाँ उसे रेणुका के रूप में परणित किया जाता है वहाँ चन्द्रमा को हमारे यहाँ गौतम के रूप में परणित किया गया है। मेरे पुत्रों! देखो, जिस मेखला में धारण कृति है आज भी मुझे स्मरण आ रही है क्योंकि गौतम कहते है। जो मानो देखो, अपनी इन्द्रियों से अन्धकार पर जो अनुशासन करने वाला हो जो अन्धकार पर अनुशासन करता है। उसका नाम गौतम कहा जाता है। हमारे यहाँ गौतम नाम के ऋषि भी हुए हैं, त्रेता के काल में गौतम नाम के ऋषि हुए हैं, जो गो इन्द्रियों को अनुशासन में करने का नाम गौतम कहा जाता है। यहाँ गौतम नाम मेरे प्यारे! परमपिता परमात्मा को भी गौतम कहते हैं। क्योंकि जो इस संसार रूपी जो प्रकृति है, इसको मानो गो कहते है। इस गो को जो क्रियात्मक बनाने वाला है, उस परमपिता परमात्मा को मानो

गौतम के रूप से मानो परणित किया है, तो विचार क्या मुनिवरों! देखो, यहाँ रात्रि का नाम बेटा! अहिल्या होने से तो मुनिवरों! देखो, गौतम चन्द्रमा होने से मुनिवरों! देखो, रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। और धारण करता हुआ तो वह अहिल्या नाम रात्रि का है, क्योंकि अहिल्या के और भी नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द हैं, जैसे अहिल्या नाम पृथ्वी का है, अहिल्या नाम बेटा! देखो, रात्रि को भी कहते हैं, अहिल्या नाम मानो वृत्तियों को भी कहा जाता है। विचार क्या मुनिवरों! देखो, यहाँ प्रकरण यह कि अहिल्या नाम रात्रि को कहते हैं। जो चन्द्रमा उसे अपने में धारण करता रहता है, मानो देखो, यहाँ इसी प्रकार इन्द्र के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। बेटा! इन्द्र नाम राजा को भी कहते हैं, जो मानो देखो, राजाओं का धिराज कहलाता है और इन्द्र नाम मेरे पुत्रों! देखो, आत्मा को भी कहते हैं क्योंकि जो शरीर को क्रियात्मक बनाने वाला है यदि आत्मा इन्द्र है, तो यह मानव क्रियाशील रहता है, मानो विद्युत का नाम भी इन्द्र कहा गया है, क्योंकि वह इन्द्रा भवि सम भवा लोकाम मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र है वह इन्द्रो ममं ब्रहे इसी प्रकार देखो, जहाँ याग का नाम भी इन्द्र माना गया है। जो मानव को बेटा! दुर्गन्ध से सुगन्धि में लाता है, जो मानो यज्ञमान की वाणी को देवपुरी में पंहुचाने वाला है, यहाँ इन्द्र नाम बेटा! जहाँ राजा है, जहाँ विद्युत है, वहाँ इन्द्र नाम बेटा! वायु प्राणों सहित जो गति गमन कराने वाली है। उसका नाम इन्द्र कहा गया है। इन्द्र नाम के बहुत से पर्यायवाची शब्द हैं। इन्द्र नाम परमपिता परमात्मा का है जो मानो सर्वत्र ब्रह्माण्ड का स्वामीत्व है उस पर मानो अनुशासन कर रहा है उसका नामोकरण भी इन्द्र कहा गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, जहाँ जहाँ इन्द्र उनके यहाँ पर्यायवाचियों में आता है वहाँ इन्द्र नाम मेरे प्यारे! देखो, सूर्य का नाम भी इन्द्र है जो रात्रि को सम्भोग में लाने वाला चन्द्रमा है। वह प्रातःकाल सूर्य उदय होते ही बेटा! रात्रि को मानो देखो, सम्भवं ब्रह्मे अपने गर्भ में धारण कर लेता है अपनी किरणों में धारण कर लेता है, और सूर्य की आभा को भी, अपने में धारण कर लेता है, तो इसीलिए

यहां सूर्य का नाम भी इन्द्र माना है इन्द्रो भवं ब्रह्मा सूर्याणि गच्छतम मेरे प्यारे! देखो, इन्द्र यहाँ सूर्य को कहा गया है, जो अन्धकार को अपने में धारण करने वाला है, तो प्रकाश में लाने वाला है, प्रकाश में मानव को पंहुचाता है, उसका नाम मेरे पुत्रों! इन्द्र कहा गया है।

आज मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देना नहीं चाहता हूँ विचार क्या मुनिवरों! देखो, याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में नाना ब्रह्मचारियों में देखो, बेटा! एक एक वेदमन्त्र एक रूपक बना था और यह रूपक बना करके मुनिवरों! देखो, सब ब्रह्मचारी एक पंक्ति में विद्यमान हुए तो मेरे प्यारे! देखो, वह सब वह दिवस अपनी आचार संहिता में लगे रहे, रात्रि आ गई रात्रि समय सब ब्रह्मचारियों ने एक मानो सम्मलित होकर वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करने लगे और वह वेदमन्त्र यह कह रहा था सम्भवं ब्रव्हे आ वाचं आचारिम लोकाः मेरे प्यारे! देखो, वेदमन्त्र यह कहा रहा था, हम आचार संहिता को बढ़ायें, और गुरु ज्ञान से हम प्रश्न करें। तो मुनिवरों! देखो, उन्होंने एक रूपक बनाया और रूपक बना करके अपनी निन्द्रा में परणित हो गएं। प्रातःकालीन उनके समीप मानो अपने अपने आसनों को त्याग करके क्रियाओं में रत्त हो गएं मानो क्रियाओं से निवृत्त हो करके वह यज्ञशाला में विद्यमान हो गएं, और जब यज्ञशाला में विद्यमान हो गएं तो मुनिवरों! देखो, उस समय आचार्य से दो ब्रह्मचारी उपस्थित हुए और आचार्यों से बोलें कि महाराज! हम कुछ जानना चाहते हैं। याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि जो इच्छा हो वह प्रश्न करो, यथोचित्त तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दिया जाएगा, तो मेरे प्यारे! उन्होंने एक प्रश्न किया कि महाराज! यह यज्ञ क्या है? उन्होंने कहा यज्ञ ऋषि ने कहा कि यह संसार एक याग माना गया है, इसमें मानो जितना भी सुक्रियाकलाप करता है, उस सर्वत्र का नाम याग माना गया है। उन्होंने कहा तो प्रभु! हम एक याग करना चाहते हैं, हम एक याग में परणित होना चाहते हैं। तो एक ब्रह्मचारी उपस्थित हुआ उसने कहा कि तुम्हारा यह जो यज्ञमान है, एक यज्ञमान बन गया, एक प्रश्न कर्त्ता बन गया और आचार्य

से प्रश्न करने लगे उन्होंने कहा प्रभु! वेदमन्त्र यह कहता है यम् भवो सम यज्ञमानं प्रकरणं ब्रीहि व्रताम देवाः यज्ञा हे प्रभु! यज्ञमान एक याग करना चाहता है और उसमें याग में कितने होता होने चाहिएं। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने यह उत्तर दिया क्या यज्ञमान जब याग करना चाहता है तो इसमें चौबीस होता होने चाहिएं। चौबीस होताओं के द्वारा याग होना चाहिए, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम! मेरे प्यारे! देखो, पुनः उन्होंने प्रश्न किया क्या महाराज एक यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिएं? उन्होंने कहा कि सत्रह होताओं के द्वारा यज्ञमान याग कर रहा है, मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा बहुत प्रियतम ब्रह्मचारी ने कहा हे भगवन! एक यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हों? वहाँ उन्होने कहा ग्यारह होता होने चाहिए मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी ने पुनः यह प्रश्न किया कि महाराज! यज्ञमान उपस्थित है कितने होताओं के द्वारा याग होना चाहिए वहाँ उन्होंने कहा क्या याग नौ से होना चाहिए। नौ होता होने चाहिए। नवम ब्रह्मा क्योंकि नौ से यह संसार कटिबद्ध हो रहा है नौ ही पदार्थ हैं। नौ ही शब्द हैं। मानो देखो, नौ ही गणाना के अंक कहलाते हैं। यह नौ में ही सर्वत्र ब्रह्माण्ड मानो निहित रहता है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि महाराज यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हों? यहाँ उन्होंने कहा सप्तम ब्रह्मा सप्त होता सात होताओं के द्वारा याग होना चाहिए। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा महाराज! यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता हों? उन्होंने कहा पञ्चम ब्रह्मे व्रताम यह पञ्च होताओं को द्वारा याग होना चाहिए, उन्होंने कहा प्रभु! यज्ञमान याग करना चाहता हैं, कितने होता चाहिए? उन्होंने कहा तीन होता होने चाहिए। उन्होंने कहा कि महाराज! ये तीन होतां ब्रह्मे यज्ञमान याग करना चाहता है, कितने होता होने चाहिए? उन्होंने कहा दो होता होने चाहिए जब पुनः प्रश्न किया तो बेटा! एक होता रह गया। तो परिणाम क्या मुनिवरों! देखो, होता एक ही कहलाता है। विचार क्या ऋषि आश्चर्य चकित हो करके ब्रह्मचारियों ने कहा प्रभु! आप ने तो एकोकीकरण कर दिया है, व्यापकता से परन्तु हम जानना चाहते

हैं, यह मानो चौबीस होता क्यों होने चाहिए? उन्होंने चौबीस इसीलिए कि पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाचं कर्मेन्दियों, और दस प्राण और मुनिवरों! देखो, चित्त मनं ब्रह्मा मन, बुद्धि, चित्त, अहङ्कार यह चतुष बन करके, मानो देखो, ये एक ब्रहे व्रताम मानो देखो, यही तो होता बनते हैं, यह शरीर रूपी जो यज्ञशाला हैं, इस शरीर रूपी यज्ञशाला में यह चौबीस होता कहलाते हैं, मानो देखो, दस प्राण हैं, दस इन्द्रियाँ हैं, मन बुद्धि चित्त अहङ्कार कहलाते हैं। इन्हीं से मानो देखो, एक स्तम्भ बना हुआ है, इसी के लिए ब्रह्माण्ड गति कर रहा है, यह होता यज्ञशाला है, यह संसार भी यज्ञशाला है शरीर रूपी भी यज्ञशाला है उन्होंने कहा कि महाराज! चलों यह तो विचार में आ गया, आप ने सत्रह होता क्यों कहा? उन्होंने कहा दस प्राण और पांच वासनाएं और प्रकृति के मानो पञ्च होता ब्रहे और मुनिवरों! देखो, मन, बुद्धि, ये सत्रह बन जाते हैं, सत्रह के द्वारा याग करता है, स्थूल को त्यागता है तो सत्रह तत्त्वों का शरीर बन करके मानो देखो, जिसे हम सूक्ष्म कहते हैं, जब वह प्राण में लय होता है। तो बेटा! मैं इस ब्रह्माण्ड में जाना नहीं चाहता हूँ। यह बड़ा विशाल ब्रह्माण्ड बन गया है, विचारों का परन्तु विचार यह ऋषि ने संक्षेप में कहा क्या मानव यह सत्रह होता ही कहलाते हैं। जो सूक्ष्म शरीर को स्थिर किए रहते है। यह चित्त के मण्डल में भ्रमण करता रहता है। इसमें मानो सत्रह होताओं के द्वारा चित्त का मण्डल कहलाता है, इसी में आत्मा मानो देखो, निहित रहती है, सूक्ष्म शरीर के द्वारा मेरे प्यारे! ब्रह्मचारी ने कहा प्रभु! होता है, तो मानो बेटा! प्रत्येक यज्ञ के साथ में यदि पञ्चम इन्द्रियों के साथ में मन लगा हुआ है, जिस इन्दिय के साथ में मन नहीं रहता, वह निष्क्रिय बन जाती है।

तो विचार विनिमय क्या मेरे पुत्रों! यह मनं ब्रह्मा याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मचारियों से कहा श्रोत्र एक मुखारबिन्द यह नौ होता कहलाते हैं। उन्होंने कहा प्रभु! आप ने तो हमें सप्त होता के लिए कहा था, सप्त होता मानो देखो, यह ब्राह्माण्डं ब्रहे मानो देखो, जो दो होता तो मानो देखो, चक्रों के द्वार पर हैं, विश्वामित्र और मुनिवरों! देखो,

वह विश्वामित्र और जमदग्नि इस प्रकार मुनिवरों! देखो, कश्यप और वशिष्ठ और यहाँ गौतम इत्यादि विराजमान हो करके अत्रि कहलाते हैं। यह सप्त होता आहुतियों दे रहे हैं, उन्होंने कहा प्रभु! आप ने तो हमें पञ्च के लिए कहा था उन्होंने कहा पञ्च महाभूत कहलाते हैं। इन पञ्च महाभूतों के शरीर में आत्मा क्रियाकलाप कर रहें हैं। मानो देखो, वह गृहे व्रताम ब्रह्मा वही तो पञ्च होता कहलाते हैं, यदि मानो अग्नि न रहेगी, तो शरीर नहीं रहेगा यज्ञशाला नहीं रहेगी, यदि देखो, अप्रतम ब्रह्मे देखो, यह सूर्य नहीं रहेगा, तो यज्ञशाला का अस्तित्व नहीं रहेगा। मानो देखो, इसी प्रकार अग्नि सम्भवों ब्रह्मा देखो, जल आपों नहीं रहेगा। तो मानो देखो, यज्ञशाला नहीं इसी प्रकार मानो पृथ्वी में याग होता है, और वायु गति दे रहा है, अन्तरिक्ष अवकाश दे रहा है। तो यह मानो यह पञ्च होता कहलाते हैं। तब उन्होंने कहा प्रभु! आप ने तो तीन कहा था, उन्होंने कहा तीन का अभिप्राय यह है, क्या मुनिवरों! देखो, तीन वह कहलाते हैं, रजोगुण, तमोगुण, सतोगुण मानो इन तीनों गुणो से यह मानव कटिबद्ध रहता है। प्रत्येक प्राणी इसी में कटिबद्ध रहता है, इसीलिए वेद के ऋषियों ने कहा याज्ञवल्क्य ने ब्रह्मचारियों को निर्णय दिया क्या वह जो मानो देखो, वह तीनों सतोगुण एक दूसरे में पिरोएं हुए है। सतोगुण में रजोगुण, रजोगुण में तमोगुण, और तमोगुण, सतोगुण बन करके मानो एकोकीकरण बन जाता है। उन्होंने कहा प्रभु! आप ने तो दो के लिए कहा था तो याज्ञवल्क्य कहते हैं कि दो का अभिप्राय मानं ब्रह्मे वासो सम्भवा मेरे प्यारे! देखो, दो हैं आत्मा और परमात्मा और प्रकृति दोनों का ही मानो यह जगत चला हुआ है। उन्होंने कहा प्रभु! आप ने तो एको एकां उन्होंने कहा एकोकीकरण परब्रह्म का है, आत्मा आता है, वह मानो सर्वत्रता के मूल में विद्यमान रहता है।

तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने सर्वत्र ब्रह्माण्ड को मापते मापते एकोकीकरण कर दिया तो बेटा! देखो, यह क्या ब्रह्मचारी ने ब्रह्मचारी मौन हो करके बोले एकोकीकरण प्रभु का ध्यानावस्थित हो जाना यह मानो एक विचित्र याग कहलाता है। मेरे प्यारे!

देखो, यागाम् भविते लोकाम मानो देखो, देवपूजा होना यह बहुत अनिवार्य है। विचार क्या मुनिवरों! देखो, विशेष चर्चाएं मैं प्रगट करने नहीं आया विचार केवल यह देने के लिए आया हूँ बेटा! क्या हमारा जीवन मानो क्रियाकलापों के रत्त रहना चाहिए। क्रियाकलापों में महान रहना चाहिए, मेरे प्यारे! हमारे यहाँ द्वापर के काल में भगवान कृष्णा मानो देखो, इन प्रतिक्रियाओं को भली भान्ति जानते थे, ऋषि मुनि तो मानो अपने में विचित्र कहलाए ही जाते थे। परन्तु देखो, विचार क्या प्रत्येक महापुरूष अपने में मानो कलाओं से युक्त होते रहें है।

तो आज का विचार अब मैं विशेष चर्चा देना नहीं चाहता हूँ आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए मानो उस परमपिता परमात्मा की महिमा और संसार रूपी याग में हम परणित हो जाएं। यह बेटा! देखो, आज का विचार है अब मेरे प्यारे महानन्द जी! दो शब्द उच्चारण करेंगें उसके पश्चात यह वार्ता समाप्त हो जाएगी।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म देवं मयाः वरूणां ब्रह्मा वायु रथाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! भद्र समाज! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बड़े महान दर्शनों की चर्चा कर रहे थे, जिस दर्शन में जाने के पश्चात मानव कृतज्ञ बन जाता है, और उसका मानवीय दर्शन प्रायः उसके समीप आ जाता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक रूपक बना रहे थे, विचारों का उस सम्बन्ध में मैं अपना कोई वाक प्रगट नहीं करूंगा। परन्तु जहाँ यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहाँ एक याग की प्रतिभा प्रायः मैं दृष्टिपात कर रहा था मेरा अन्तर्हृदय सदैव यज्ञमान के साथ में मेरा हृदय संलग्न रहता है। और मैं यह कहा करता हूँ, क्या यज्ञमान का हृदय मानो कर्म वचन पवित्र होने चाहिंए। मानो देखो, उसके निर्वाहं ब्रहे सम्भूति ब्रह्मा पूज्यपाद गुरुदेव मुझे वर्णन कराते रहते हैं, क्या मानव के हृदय में मानो वृत्तियां एक वाणी प्रहा गति करता रहता है। वह जो वाणी है, वह यथार्थता में और उसका सौभाग्य अखण्ड बना रहे। यज्ञमान के हृदय का मानो मेरा हृदय उसके साथ भी रहता है।

क्या उसके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, प्रायः क्योंकि अखण्डता की प्रतिभा मेरे पूज्यपाद गुरुदेव निर्णय कराते रहते है। अखण्डता का अभिप्राय यह है क्या उनके जीवन में मानो सदैव समिधा और विचार पवित्र जैसे अग्नि समिधा में परणित हो करके मानो सूक्ष्म बन करके देवताओं का आहार बन जाती है। इसी प्रकार वह जो साकल्य अग्नि में प्रवेश होने से साकल्य अग्नि में परणित होने से मानो देखो, वही साकल्य देवताओं का भोज बन करके व्यापक स्वरूप को धारण कर लेता है। इसी प्रकार हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। आहारों में पवित्रता आती रहे, सदैव मेरी यह कामना रहती है, परन्तु आज का मैं कोई विशेष चर्चा तो देने नहीं क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ने अपने बहुत विस्तृत अपने वाक प्रगट किए हैं। एक एक शब्द पर व्याख्या पूज्यपाद गुरुदेव करते रहते हैं, विचित्रता प्रतीत होने लगती है। आज मैं विशेषता में उस नगरी मानो देखो, उस प्रतिभा में जब मानो हमारा वह काल विचित्रं ब्रह्मा मानो देखो, यह कृष्णां नगरं भवे वाचम भविताः मैंने देखो, जहाँ यह हमारी वाणी यागाम भवे वहाँ भगवान कृष्ण ने भी विशाल विशाल यागों का आयोजन किया, मानो मैं उस याग की चर्चा करूं जो याग बड़ा विचित्र याग किया जिस याग की वर्तमान युग में भी वर्तमान काल में भी जिस याग की आवश्यकता रहती है।

मैंने बहुत पुरातन काल में अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराया पूज्यपाद गुरुदेव तो जानते ही हैं, यहाँ पातालपुरी से जिस समय देखो, द्वापर के काल में एक पातालपुरी में एक क्रान्ति आई उस क्रान्ति में यह हुआ क्या मानो नरसंहार होने लगा जब नर संहार हुआ तो नरसंहार के मानो देखो, नाग नाम की कुछ जातियां थी, नाग नाम की कुछ जातियां मानो पातालपुरी को त्याग करके देखो, भारत भूमि पर आ गई। भारत भूमि को वह आ गई परन्तु मानव ने उनसे कुछ घृणा थी, तो भगवान कृष्ण ने इसी जहां यह हमारी आकाशवाणी जा रही है। उस नाग मानो देखो, एक नाग याग किया था उन्होंने याग का अभिप्राय यह था क्या, वह जो नाग

जाति नाम के प्राणी, पातालपुरी से आए उनका सबका एकोकीकरण कर दिया था। मानो देखो, राष्ट्रीय दृष्टि से, राष्ट्रीय प्रतिभा से, उस नाग को मानो देखो, जातयीता में न ले करके, वह नाग नागं बह्मे उसी को सुप्रजा, वह नाग बने हुए, वह नाग नहीं थे, प्राणी थे, परन्तु नागों को एकोकीकरण करके, परन्तु अपने सम्मिलित कर लिया था। विचार क्या, मानो देखो, नाग पवित्र बन गया था। मानो देखो, राष्ट्र की प्रतिभा, जिस समय भगवान कृष्ण ने मानो देखो, हमारे यहाँ कहा जाता है, कि उन्होंने नाग का मन्थन किया, नाग के मन्थन का अभिप्राय यही माना जाता है, हमारे यहाँ मन्थन का अभिप्राय क्या उनका शुद्धिकरण उनका मानो देखो, हिंसा से, अहिंसा में लाने को, लाने के लिए वह तत्पर हुए, वह अहिंसा में बन करके मानो देखो, उनके विचारों का मन्थन हो गया। विचार क्या, मानो देखो, जहाँ काली ब्रह्मे आधुनिक प्राणी कहता है, कृष्ण के मानने वाले क्या यहां काली एक नाग था अरे, नाग का प्राणी तो कोई भी नष्ट कर सकता है, परन्तु नाथने का अभिप्राय क्या हुआ, यह कि अपने में उन्हें सम्मिलित विचारों में उनके विचारों में स्थित करते हुए वह मानो देखो, एकोकी राष्ट्रीयकरण बन गया, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने उस काल की बहुतसी चर्चाएं प्रगट की परन्तु मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो इस संसार का निराकरण भली भान्ति परन्तु मैं भी उसका निराकरण करने जा रहा हूँ, और निराकरण क्या उन्होंने एक याग किया। तो उसको हमारे यहाँ याग कहा जाता है। उस याग में नाग जाति के प्राणी सम्मिलित हुए उनका राष्ट्रीय करण हुआ वह राष्ट्रीय याग कहलाता है। तो मानो देखो, वह राष्ट्रय याग अप्रतम देखो, आधुनिक काल का प्राणी कहता है, क्या वह जो बाल्यकाल था, उनका जो कालिदह में चले गएं, नाग के ऊपर नृत्त किया, नाग के ऊपर नृत्त करने का अभिप्राय यह है। नृत्त का अभिप्राय यह है कि अपने विचारों को देना और उनका एकोकीकरण करना मानो लाखों प्राणी उन्होंने नाग जाति के एकोकीकरण में परणित कर दिए थे। आधुनिक काल में आज भी भारत भूमि में कहीं कहीं मानो नाग जाति के नाग

कहलाने वाले प्राणी आज भी विद्यमान है। परन्तु देखो, रहा यह कि मैं इस वाक को इसीलिए प्रगट कर रहा हूँ, एक केवल याग काल के लिए जो मुझे पूज्यपाद गुरुदेव ने उस काल को दृष्टिपात करके मुझे वर्णन कराया। मानो देखो, नागों में याग होने लगें, तो घृणा के स्तर मानो देखो, यह समाज समाप्त हो जाता है। मानो भगवान कृष्ण ने घृणा का अस्तित्व समाप्त कर दिया जहाँ जिसकी अनाधिकार पूजा होती थी उस पूजा को देखो, अधिकार में लाने के लिए उन्होंने प्रयास किया। मानो देखो, पच्चीस वर्ष तक भगवान कृष्ण मानो देखो, संदीपन ऋषि महाराज के यहाँ अध्ययन करते रहें। पच्चीस वर्ष के पश्चात उनका संस्कार हुआ, और उसके पश्चात देखो, वह संसार के कार्यो में रत्त हो गएं, संसार के कार्यों में रत्त हो करके भगवान कृष्ण का जीवन मेरी दृष्टि में जो मुझे स्मरण है, मानो वह बड़ा पवित्रता में परणित रहा है, एक महान रहा है, जिस महानता के ऊपर मानो मैं यह कह सकता हूँ, क्या भगवान कृष्ण के जीवन में कोई भी ऐसी अश्लीलता नहीं आई जिससे मानो उन्हें अश्लील कह करके उनका विरोध कर सके। मानो देखो, इस प्रकार उनके जीवन की जब स्मरणियां उनके जीवन की झांकियां जब मुझे स्मरण आती हैं। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से प्रश्न करता रहता हूँ, जानकारी लेता रहता हूँ, आधुनिक काल का प्राणी कुछ कह रहा है उनका साहित्य काल कुछ कह रहा है। मानो उनका साहित्य काल बड़ा विचित्र रहा है, और महान बाल्यकाल में अध्ययन करना नाना प्रकार की विद्याओं का अध्ययन सोलह हजार मानो वेद की ऋचाएं उन्हें कण्ठस्थ रहती थीं और वह उसी में रमण करते रहते थे, तो समाज ने जाना नहीं देखो, यह स्वीकार कर लिया की सोलह हजार गोपियां थी, उनमें वह नृत्त करते रहते थे, अरे, नृत्त नहीं गोपनीय विषय जो एक एक वेद मन्त्रों में निहित रहता है। उन्हीं गोपनीय विषयों को वह चिन्तन में लाते रहते थे, और उसी में पच्चीस वर्ष तक उन्होंने संदीपन ऋषि महाराज के यहाँ मानो देखो, उसका अध्ययन किया था, आज मैं इस सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा तो देना नहीं चाहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव

ने अरे, गोपनीय विषयों को मनन किया है, भगवान कृष्ण ने उन्हीं गोपनीय विषयों में सदैव रत्त रहते थे। परन्तु देखो, प्रत्येक अङ्ग और अङ्गो की विवेचना करता रहता है, उस भोले प्राणियों ने भगवान कृष्ण को जाना नहीं, परन्तु भगवान कृष्ण का जीवन एकोकीकरण में रहता था आधुनिक समाज जो वर्तमान का काल है, यह विभाजन कर रहा है, उसको मान रहा है समाज का विभाजन कर रहा है, और भगवान कृष्ण का जीवन यह की जो एकोकीकरण कर रहा था।

तो इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा, मैं कोई व्याख्याता या विशेष विवेचना, व्याख्यान देने नहीं आया हूँ, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यही आज्ञा पाने के लिए आता रहता हूं कि राजा को चाहिए भगवान कृष्ण के पद चिन्हों पर इस समाज को लाने का प्रयास करे, देखो, भगवान कृष्ण मानो देखो, वह पत्र पुष्पों को पान करते थे, आज उसके मानने वालों ने इस शरीरों को मानो देखो, प्राणियों के रक्त से भरण करना चाहता है, मानो देखो, इतना अन्तर्द्वन्द्व आ गया है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता हूं कि भगवान कृष्ण को हम मानो देखो, उसके पद चिह्नों पर अपने जीवन को ले जाएं एकोकीकरण करते चले जाएं, घृणा का सहवास अपने से दूरी करते हुए, अहिंसा परमोधर्म की वेदी पर आ जाए, यह आज का वाक मैं अब समाप्त करने जा रहा हूं, क्योंकि पूज्यपाद गुरुदेव ने सूक्ष्म सा समय दिया उसी में मैंने अपने कुछ विचार व्यक्त किए हैं, और वह विचार क्या है हम देखो, अपने में महान बनते हुए, हे यज्ञमान! तेरे जीवन की प्रतिभा महान बनी रही इसके पश्चात यह वाक अब समाप्त होने जा रहा है आज का वाक समाप्त मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अब कुछ अपने विचारों को व्यक्त करेंगे।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी! ने अपने सुन्दर अपने एक विचार दियें हैं, परन्तु एकोकीकरण का जो इन्होंने विचार दिया है, यह तो हमारा परम्परागतों से जन्म सिद्ध अधिकार रहा है, उस अधिकार के ऊपर जो इन्होंने विवेचना की वह बड़ी प्रियतम है परन्तु देखो मानव अपने स्वार्थ के लिए

दूसरों से घृणा, द्वेष की भावना न करता हुआ, अपने मानव दर्शन को विचारता हुआ, और देखो, एकोकीकरण की एक आभा में मानव को निहित रहना चाहिए। भगवान कृष्ण का जीवन बड़ा विचित्र रहा है, बड़ा महान रहा है जो इन्होंने चर्चाएं की हैं, उसक काल में देखो, उन्होंने बहुत से प्राणियों का एकोकीरण किया जो दूसरे राष्ट्रों से आए, वह एकोकी वृत्ताम मानो क्रान्तिकारी बन करके, क्रान्तियों में एक क्रान्ति का उन्होंने सन्देश दिया, तो विचार दिया उन्ही विचारो पर हमे अपने जीवन को बनाना चाहिए, उन्हीं विचारों को हमें अपने जीवन को बनाना चाहिए। यह आज का वाक समाप्त। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि यागाम भविते हमे आत्मिक याग करते हुए, इस सागर से पार हो जाए।ओ३म् ब्रह्म भागा वायु गतं मनाः वाचन्नमप्रजाहं आपा रेवं दधि गाताः। ओ३म् यौ सर्वं मधु वायाः३म रथप्रहा गताः३म आपा रयीणाम्। अच्छा भगवन आज्ञा।

3. आत्म चर्चाएं-860920

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का, पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का, प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमे दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वह मेरा देव दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि हमारे यहां प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है। जिस प्रकार माता का पुत्र माता की गाथा गा रहा है जिस प्रकार यह पृथ्वी ब्रह्माण्ड की गाथा गा रही है उसी प्रकार प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा की गाथा गा रहा है अथवा उसके गुणों का वर्णन कर रहा है क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में अथवा उसकी विज्ञानमयी धाराओं को प्रायः विचार विनिमय करता रहा है हमारे यहां दो प्रकार का विज्ञान मानवीय मस्तिष्कों में सदैव नृत्त करता रहा है, एक विज्ञान वह जो भौतिकवाद कहलाता है और दूसरा विज्ञान जो आध्यात्मिकवाद कहलाता है। दोनों प्रकार के ज्ञान और विज्ञान में मानव परम्परागतों से बेटा! रत्त रहा है और विचारता रहा है कि हम उस परमपिता परमात्मा की विज्ञानमयी स्वरूप को जानना चाहते हैं आदि ऋषियों ने बेटा! यह अपने वाक्यों में कहा है क्या वह परमपिता परमात्मा ज्ञान और विज्ञानमयी स्वरूप माना गया है। जो विज्ञान के वाङ्गमय में मानव प्रवेश करता है बेटा! उसकी मानवीयता एक मानो तत्पर वृत्ति हो जाती है, क्योंकि भौतिक विज्ञान अपने में महान रहा है, और आध्यात्मिक विज्ञान बेटा! देखो, ऋषि मुनियों के क्रियाकलापों में, मानो सदैव निहित रहा है। आज मैं तुम्हे ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्रों में ले जाना नही चाहता हूँ, केवल यह वाक आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें कुछ प्रेरणा दे रहा है, उसी प्रेरणा के आधार

पर, अपने कुछ वाक्यों को उच्चारण करना है, आज का हमारा वेदमन्त्र कह रहा था वसुन्धरं ब्रह्मा वर्णप्रव्हे लोकां मेरे प्यारे! देखो, वसुन्धरा का वर्णन आ रहा था।

वसुन्धरा

हमारे वैदिक साहित्य में, नाना प्रकार की वसुन्धराओं का जहां वर्णन आता है, वहा तीन प्रकार की वसुन्धराओं का, हमारे यहाँ प्रायः वर्णन आता रहता है। वसुन्धरा नाम बेटा! माता को कहा गया है, परन्तु वसुन्धरा नाम पृथ्वी का है, और वसुन्धरा नाम, उस महामना चैतन्य देव का है। जो संसार के मूल में मानो जो विद्यमान है, उसका नाम वसुन्धरा कहा जाता है। मुनिवरों! देखो, जब हम, वसुन्धरा के गर्भ में प्रवेश करते हैं, तो विचार आता है कि वसुन्धरा उसे कहते हैं, जो अपने में हमे बसा रही है। जो अपने में धारण कर रही है, उस माता का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। मेरे प्यारे! देखो, जो जननी माता है, उसे वेद का ऋषि वसुन्धरा कहता है। क्योंकि उसके गर्भस्थल में, बेटा! एक बिन्दु है, उस बिन्दु में शिशु है, और शिशु के प्रवेश होते ही, माता के गर्भस्थल में बेटा! सर्वत्र देवता, अपना अपना नृत्त करना प्रारम्भ करने लगते हैं जैसे माता के गर्भस्थल में, मानो शिशु का प्रवेश हुआ, बेटा! देखो, चन्द्रमा अमृत बहाने लगता है, सूर्य प्रकाश देने लगता है, अग्नि उष्णा बनाने लगती है, आपोमयी ज्योति प्रदान करने लगता है, वायु प्राण देने लगता है, अन्तरिक्ष अवकाश देने लगता है, मेरे पुत्रों! तारामण्डलों की एक माला बन जाती है, और उस माला को कौन धारण कर रहा है, वह शिशु अपने में धारण कर रहा है। माता के गर्भस्थल में, बेटा! हम जैसे शिशु विद्यमान रहते हैं, मानो देखो, वही तो पालना का एक स्रोत कहलाता है। परन्तु वेद का वाक आगे कहता है जब माता वसुन्धरा, जननी के गर्भ से यह शिशु संसार के इस मानवीय क्षेत्र में आता है, तो मेरे पुत्रों! इस पृथ्वी का नाम वसुन्धरा कहा जाता है। हे माता! तू वसुन्धरा है, तेरे गर्भस्थल में मानो हम सब वशीभूत रहते हैं, तू नाना प्रकार का खाद्य और खनिजों को प्रदान करने वाली है। हे माता! तू ममत्व को धारण करने वाली है, मानो देखो, जब

वैज्ञानिक तेरे वाङ्गमय में प्रवेश करता है, तो मानो देखो, नाना प्रकार के रत्नों के, परमाणुओं को सुगठित करने लगती है। स्वर्ण के परमाणुओं का, आदान प्रदान होने लगता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ये माता वसुन्धरा, अपने में वसुन्धरा बन करके, ये नाना प्रकार के व्यञ्जनों को जन्म देने वाली है, कही खाद्यान्न है, जो कही खनिज पदार्थों की उत्पति कर रही है, जिससे मानव के जीवन का उत्थान होना प्रारम्भ हो जाता है। मानव इन्हे पान करता हुआ, अपने में हर्ष ध्वनि करता रहता है, और नाना प्रकार के विज्ञानवेत्ता, नाना मानो खनिज पदार्थों को जान करके, विज्ञान के तथ्यों को जानने के लिए, तत्पर हो जाते हैं। परन्तु यही मानव, बेटा! जब मानो पृथ्वी के गर्भ से पृथक होता है तो उस समय यह जो हमारा चैतन्य देव जो ममत्व को धारण करने वाला है, जो विष्णु है, पालन करने वाला है, बेटा! देखो, ये मानव इसके गर्भ में निहित हो जाता है। यह वसुन्धरा कहलाती है। मानो देखो, जो संसार को अपने में धारण कर रही है। आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें कुछ आत्म चर्चाओं में ले जाना चाहता हूँ, आज बेटा! मैं इस पृथ्वी के विज्ञान या माता के विज्ञान की चर्चा प्रगट करने नही आया।

आओ, मेरे पुत्रों! आज मैं तुम्हें मानो देखो, ऐसे आंगन में ले जाना चाहता हूँ, जहां बेटा! आत्म चर्चाएं होती रहती हैं, अथवा प्रकाश की चर्चाएं होती रहती हैं, प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही मानो नाना प्रकार के अनुष्ठानों में लगा रहता है, और प्रभु के ज्ञान और विज्ञान के वांगमय में प्रवेश होना चाहता है। परन्तु सर्वत्रता में, मानव यही चाहता है, क्या मेरी मृत्यु नही होनी चाहिए। मेरा जीवन अन्धकार में नही जाना चाहिए, प्रत्येक मेरा मानव, यह चाहता रहता है, कि मुझे प्रकाश की उपलब्धि हो जाए, मानवत्व मुझे प्राप्त हो जाए, परन्तु देखो, उसी आभा में रत्त रहता है।

आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें मानो एक यज्ञशाला में ले जाना चाहता हूँ, आज मैं तुम्हे राजा जनक के गृह में ले जाना चाहता हूँ, जहाँ मुनिवरों! देखो, हमारे यहाँ मेरी पुत्रियाएं मानो देखो, मातृ शक्ति अपने में आत्म विज्ञान की प्रायः चर्चा

करती रहती थी आओ, प्यारे देखो, एक समय राजा जनक के यहाँ मुनिवरों! देखो, सम्भवा मुनिवरों! देखो, ब्रह्माज्ञन तो होता ही रहता था और ब्रह्मयाग होते हुए नाना प्रकार की ओर भी चर्चाएं होती रहती थीं परन्तु एक समय सांय काल का समय था, सांय काल के समय में, महर्षि अर्द्धभाग कहीं बेटा! भ्रमण करते हुए बेटा! देखो, राजा जनक के गृह में प्रवेश किया, जहाँ मुनिवरों! देखो, उनकी पत्नी रम्भेश्वरी, अपने मानो देखो, आंगन में विद्यमान थी, वह महात्मा अर्द्धभाग, जब पंहुचे, तो अर्द्धभाग मुनि से बोली हे प्रभु! मैं कुछ न्यौदा में, मन्त्रों को जानना चाहती हूँ तो मुनिवरों! देखो, महर्षि अर्द्धभाग, कुछ न्यौदा में से मन्त्रों का उद्गीत गाने लगे, जब उद्गीत गाने लगे, तो मुनिवरों! देखो, वह निन्द्रा में तल्लीन हो गई, और ऋषि ने अपने आसन को गमन किया। तो मेरे प्यारे! मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता रहा है, क्या मुनिवरों! देखो, मध्य रात्रि का जब काल हुआ, तो मध्य रात्रि के काल में, राजा जनक की पत्नी रम्भेश्वरी निन्द्रा से जागरूक हो गई। और निद्रा से जागरूक होते हुए, उन्होने वह वेदमन्त्र स्मरण आने लगे, वेदमन्त्र कहता था सूर्य ब्र्व्हे व्रतां ब्रह्मे नित्यानि छन्दनं ब्रीहि व्रत्यां देवाः वेद का मन्त्र कहता था, क्या ये नेत्र किसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं? हमारा जो प्रकाश है, वह कौन है, जो प्रकाश के देने वाला है। मेरे पुत्रों! देखो, उसी आभा में बहुत समय हो गया, मुनिवरों! रात्रि का अन्तिम पहर रह गया, राजा जनक की पत्नी रम्भेश्वरी ने, अपने आसन को त्याग करके राजा जनक के समीप पंहुची और राजा जनक से कहा भगवन! जागरूक हैं? उन्होंने कहा देवी! मैं जागरूक हूँ। परन्तु अन्तिम पहर में, तुम्हारे आने का कारण क्या है? उन्होंने कहा प्रभु! मैं मध्य रात्रि से, कुछ वेद मन्त्रों में लगी हुई हूँ, और वह वेदमन्त्र यह कहता है प्रकाशाम् नेत्रों सम्भवं ब्रीहि व्रतं देवाः हे प्रभु! यह वेदमन्त्र यह कहता है कि हमारे नेत्र किसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं? कौन प्रकाश के देने वाला है? कौन प्रकाश दे रहा है? तो मेरे पुत्रों! राजा जनक भी, उसी मानो वेद मन्त्रों में संलग्न हो गएं, और तत्पर हो गएं, परन्तु अपने में निमटारा

नही कर सके। जब निमटारा नही कर सके, तो मुनिवरों! देखो, सूर्य उदय होने से पूर्व, जैसे ही सूर्य की लालिमा मानो आकाश मण्डल में आच्छादित हुई, उसी समय बेटा! उन्होंने अपने आसन को त्याग दिया, और आसन को त्याग करके, मानो अपनी क्रियाओं से निवृत्त हो करके, क्योंकि राजा जनक के यहाँ, जहाँ बेटा! ब्रह्मयाग होता रहता था। जहाँ मुनिवरों! देव याग भी प्रायः होता रहता था। तो बेटा! देखो, देव याग के लिए, उन्होंने ब्रह्मयाग का समापन करके, और वह देव याग के लिए बेटा! नाना साकल्य ले करके अपनी यज्ञशाला में पंहुचे, क्योंकि उनके यहाँ, एक प्रिय सुन्दर यज्ञशाला थी। उस यज्ञशाला में अग्नि होत्र अथवा देव पूजा करते थे, देव पूजा के पश्चात, ऋषि मुनियों से मानो अपने कुछ आत्म कल्याण की प्रायः चर्चा होती रहती थी। तो मुनिवरों! देखो, जैसे उन्होंने अग्निहोत्र किया, तो यज्ञशाला में नाना ऋषिवर बेटा! अपनी अपनी स्थली पर विद्यमान थे, जिसमें बेटा! देखो, उनके पुरोहित अश्वल महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज का बेटा! ऊँचा आसन था, जिसमें महात्मा अर्द्धभाग, ब्रह्मचारी कवन्धी, ब्रह्मचारी गार्गेपथ्य मेरे पुत्रों! देखो, और भी महात्मा दिग्ध इत्यादि विद्यमान थे, जहां ब्रह्मे व्रते देवी मुनिवरों! देखो, चाक्राणी गार्गी विद्यमान थी, और भी नाना ब्रह्मवादी वहाँ व्रत्यं ब्रह्वो सम्भवा नाना ब्रह्मवेत्ताओं का आसन बेटा! मानो देखो, ऋषियों में तत्पर हो गया, तत्पर हो जाने के पश्चात मुनिवरों! देखो, विचार विनिमय क्या याग को दृष्टिपात कर रहे थे, जैसे उन्होंने याग प्रारम्भ किया, अग्नि होत्र किया, मानो साकल्य प्रदान किया, साकल्य मानो याग समाप्त हो जाने के पश्चात राजा जनक उनकी पत्नी ने यह सङ्कल्प किया, आज हम अपने आचार्य से कोई प्रश्न नहीं करेंगे। परन्तु जैसे ही याग समाप्त हुआ, इतनें में महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कि मेरे से यज्ञमान कोई प्रश्न कर सकता है। उन्होंने कहा हे प्रभु! ब्रह्मा सो व्रतं चक्षु सप्प्रव्हा प्रकाशा ब्रहे अश्वतं ब्रीहि हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं कि हमारे नेत्र किसके प्रकाश से प्रकाशित होते हैं, कौन प्रकाश का द्यौतक है? कौन प्रकाश के देने वाला है? उन्होंने कहा हे राजन! इसको तो

प्रत्येक मानव जानता है, प्रत्येक बालक बालिका जानता है, कि हमारे जो नेत्र है, वह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं, सूर्य मानो प्रकाश का द्यौतक बना हुआ है। वही प्रकाश के देने वाला है उन्होंने कहा यह सूर्य जो प्रकाश देता है, मानो सूर्य प्रातःकाल में द्यौ से मानो प्रकाश ले करके प्राचीदिक से जब उदय होता है। तो नाना प्रकार की वनस्पतियों को जीवन प्रदान करता है, और मानव के जीवन को यह प्रकाश देता रहता है। यही तो नेत्रों का देवता है, जो मानो देखो, इसके प्रकाश में अपने क्रियाकलापों में तत्पर हो जाते हैं, मानो क्रियाकलाप उनका तत्पर हो जाता है। तो मेरे पुत्रों! जब उन्होंने यह कहा सूर्यं ब्रह्मा यही तो सूर्य है, जो नाना प्रकार की वनस्पतियों को जीवन देता है, मानव को जीवन देता है, मानव को प्रकाशमान बनाता है, यही तो सूर्य है। जो मानव यह सूर्य अप्रतं देखो, समुद्रों से प्रकाश ले करके यही तो वृष्टि का मूल बना रहता है। यही तो बकासुर को नष्ट करने वाला है, हे देवी! यही तो नाना प्रकार की वनस्पतियों को परिपक्क बनाने वाला है। मानो यही सूर्य जब प्रातःकाल में उदय होता है, तो वहाँ तो वहाँ माँ अपने पुत्रों! को कहती है, आओ, हे बाल्य! सूर्य उदय हो गया है, अपने आसन को त्यागों और प्रकाश आ गया है। अपने अपने कार्यों में रत्त हो जाओ, मानो यही तो सूर्य है जो मानो नाना प्रकार की आभाओं में निहित रहता है। मेरे प्यारे! देखो, यह नाना प्रकार की स्वर्णमयी धाराओं को प्रदान करने वाला है। हमारे यहाँ जैसे गो नाम का पशु हैं, गो नाम के पशु के रीढ़ के विभाग में एक सूर्य केतु नाम की नाड़ी कहलाती है। जैसे सूर्य उदय हुआ उस नाड़ी आ ऊर्ध्वा मुख हो जाता है, परन्तु जैसे ऊर्ध्वा मुख हुआ, चन्द्रमा ब्रह्मारूद्रं देवाः यह सूर्य के वह किरणों को अपने में धारण कराता रहता है। जिन किरणों में स्वर्ण की धाराएं मानो विद्यमान रहती हैं, मेरे प्यारे! देखो, वही नाना प्रकार की किरणों स्वर्णमयी को बहाने वाली हैं स्वर्णमयी को देने वाली हैं, मेरे पुत्रों! देखो, अमृतमयी बनता रहता है। वह मानो देखो, गो नाम के पशु के मानो घृत में दुग्ध पीत वर्ण होता है, क्योंकि उसमें स्वर्ण

की मात्रा विशेष होती है। तो मुनिवरों! इसीलिए हमारे, आयुर्वेदाचार्यों ने, गो नाम के पशु को अद्भुत माना है। क्या आज हम बेटा! उसकी पूजा करने वाले बनें। मेरे पुत्रों! जब ऋषि ने इस प्रकार की, व्याख्या की दोनो पति पत्नी नत मस्तिष्क हो करके बोले हे मातेश्वरी! हे पितर ब्रह्मा आप तो हमारे आचार्य और माता के तुल्य हैं, हे प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, क्या मानो यह सूर्य नहीं होता, तो प्रकाश के देने वाला कौन है? कौन प्रकाश का द्यौतक कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा, क्या जब मानो यह सूर्य नही होता, तो यह चन्द्रमा हमें प्रकाश के देने वाला है, यही तो चन्द्रमा है, जो अमृत को बहाने वाला है, मानो देखो, जिसका समन्वय, चन्द्रमा से होता है, जब पूर्णिमा का दिवस होता है, तो यही चन्द्रमा मानो देखो, जल की आभा को अपने में धारण करता हुआ अमृतमयी धारा को प्रदान करता रहता है, अमृतमयी देता रहता है, तो मानो देखो, यह चन्द्रमा अमृत के बहाने वाला है, माता की रसना के निचले विभाग में, मानो एक चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी होती है और वह चन्द्रकेतु नाम की नाड़ी का समन्वय, माता की पुरातत नाम की नाड़ी से होता है और पुरातत नाम की नाड़ी का सम्बन्ध माता की मानो देखो, पञ्च लोरियों से होता है, जहाँ पञ्चम नाड़ियों का निर्माण होता है। मेरे प्यारे! देखो, वही पञ्चम नाड़ियों का समन्वय, माता की नाभि से होता है, और मुनिवरों! जहाँ हम, जैसे पुत्र माता के गर्भस्थल में, उस अमृत को पान करते रहते हैं, वह अमृत के देने वाला बेटा! वह चन्द्रमा है, जो अमृतमयी और प्रकाश देने वाला है। जब यह सूर्य नहीं होता तो इसी का धीमा धीमा प्रकाश मानो अपने कार्यों में रत्त हो जाता है, प्रकाश देने लगता है, वह प्रकाश का द्यौतक कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, यह चन्द्रमा अमृतमयी कहलाता है, इसी चन्द्रमा का समन्वय, जब समुद्रों से होता है पूर्णिमा का दिवस होता है, बेटा! यही जलों का उत्थान करके अन्तरिक्ष में परणित कर देता है। अन्तरिक्ष में यह ओत प्रोत करा देता है। वही मेरे पुत्रों! देखो, अमृत को बहाने लगता है जब कृषक की भूमि, जब

उसके गर्भ में बीज की स्थापना की जाती है, तो यह चन्द्रमा अमृत देता है, कृषक प्रसन्न हो रहा है। तो मेरे पुत्रों! देखो, जब सूर्य नहीं होता, तो ऋषि कहता है कि चन्द्रमा के प्रकाश में, हम अपने मानो देखो, प्रकाश में क्रियारत्त हो जाते हैं और वही अपने क्रियाकलापों मे लगे रहते हैं।

परन्तु देखो, राजा जनक ने कहा हे ऋषिवर! मैं जानना चाहता हूँ जब यह चन्द्रमा भी नही होता, तो प्रकाश का द्यौतक कौन बना रहता है? उन्होंने कहा क्या हे राजन! जब यह चन्द्रमा नहीं होता तो हम तारामण्डलों के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह चन्द्रमा हमें प्रकाश के देने वाला है, अथवा यह प्रकाश का द्यौतक कहलाता है। तो हे राजन! तुम्हें यह प्रतीत है तुम्हें जो पूर्व शब्दों में, बेटा! तुम्हें उद्गीत रूप में गाया, क्या यह मानो देखो, वसुन्धरा हमारी ममत्व को धारण करने वाली है मेरे प्यारे! जब अप्रतम ब्रह्मा हमारे यहाँ जिस भी काल में विज्ञान पनपा है, भौतिक विज्ञान क्रियारत्त में आया है तो बेटा! देखो, सबसे प्रथम पार्थिव तत्त्वों को जाना है। पार्थिव परमाणुओं को जानने वाले वैज्ञानिक हुए बेटा! देखो, आगे अग्रणीय विज्ञान में रत्त रहे हैं। तो वेद के आचार्य ने वर्णन कराया क्या मुनिवरों! देखो, सम्भवे देवाः यह जो पृथ्वी है, यह सबसे प्रथम, विज्ञानवेत्ताओं ने बेटा! पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान किया, जब पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान किया, तो ऋषियों ने विचारा है अपना अपना निर्णय दिया है बेटा! वेद के प्रायः ऋषियों ने यह वर्णन कराया है महर्षि भारद्वाज जैसे मुनियों ने और भी मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी सुकेता इत्यादि ने, यह वर्णन करते हुए कहा है सम्भवं ब्रह्मा रुद्रो लोकां रुद्रो सम्भव लोकां आचार्यों ने यह वर्णन किया है, क्या मानो यह जो यह पृथ्वी है, ये मानो सूर्य का इससे समन्वय रहता है, मानो तीस लाख पृथ्वियाँ बेटा! देखो, ऋषि मुनियों ने जानने का प्रयास किया है, तीस लाख पृथ्वियाँ है, मानो देखो, सूर्य लोक मे समाहित हो जाती हैं। बेटा! सूर्य मण्डल इतना विशाल मण्डल है क्या मानो देखो, इसमें तीस लाख पृथ्वियाँ, बेटा! समाहित हो जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, आगे वेद

के ऋषियों ने वर्णन करते हुए कहा, वेद का मन्त्र कहता है सहस्रं प्रव्हा व्रत्यं देवाः ब्रहे सम्भवे व्रता वेद का वाक कहता है, कि एक सहस्र मानो देखो, सूर्य मानो देखो, बृहस्पति मण्डल में समाहित हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, इतना ही जनं ब्रहे मुनिवरों! देखो, एक सहस्र बृहस्पति आरुणि मण्डल में समाहित हो जाते हैं, एक सहस्र आरुणि मण्डल मेरे प्यारे! देखो, ध्रुव मण्डल में समाहित हो जाते हैं, एक सहस्र ध्रवु मण्डल, स्वाति नक्षत्र में ओत प्रोत हो जाते हैं, एक सहस्र मुनिवरों! देखो, स्वाति मण्डल मूल नक्षत्र में ओत प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र मूल नक्षत्र, मुनिवरों! देखो, व्रीति लोको में ओत प्रोत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! एक सहस्र व्रीति मण्डल, अचंग मण्डल में ओत प्रोत हो जाते हैं, एक सहस्र अचंग मण्डल, मेरे प्यारे! देखो, रोहिणीकेतु मण्डल में ओत प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र रोहिणिकेतु मण्डल ब्रहीहि वाचो मण्डल में ओत प्रोत हो जाते हैं। एक सहस्र वाची मण्डल, मुनिवरों! देखो, गन्धर्व लोको में ओत प्रोत हो जाते हैं। मेरे प्यारे! देखो, गणना की प्रतिभा आती है ऐसा मुनि कहता है वेद का ऋषि कहता है, क्या इतने मण्डलों का बेटा! एक सौर मण्डल बन जाता है इतने मण्डलों का एक सौर मण्डल बनता है, और मुनिवरों! देखो, छयानवें करोड़, उन्नतीस लाख, उन्नचसवें हजार मेरे प्यारे! देखो, पांच सौ बावन इस प्रकार के सौर मण्डलों की बेटा! एक आकाशगंगा बनती हैं। और मुनिवरों! देखो, लगभग देखो, छयानवें करोड़ इक्कसठ लाख और मुनिवरों! देखो, पिचानवें हजार पाचं सौ इक्क्सठ के लगभग मुनिवरों! देखो, आकाशगंगा की एक मुनिवरों! देखो, अवन्तिका बनती है। और मुनिवरों! देखो, पांच करोड़ के लगभग, पांच करोड़ सौ अप्रहा अव्रति वन्दनं चक्रति रुद्रो मुनिवरों! लगभग एक अरब पिचानवें करोड़ पिचासी लाख नब्बे हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग, इतनी अवन्तिकाएं बेटा! निहारिका में ओत प्रोत हो जाती हैं। तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या बेटा! वेद का मन्त्र यह कहता है वेद का ऋषि यह कहता है, क्या ब्रह्माण्ड यह अनन्तमयी दृष्टिपात आने लगता है। बेटा! यह कैसी प्रिय माला है,

उस माला को जो धारण कर लेता है। वह ऋषि मुनि ब्रह्मं ब्रह्मे बेटा! अनुभव करता है, वह महान ऋषि कहलाता है। वह विचित्रता में परणित हो जाता है। आचार्यजन परम्परागतों से बेटा! देखो, विज्ञान के वांगमय में प्रवेश करते रहे हैं, आज मैं तुम्हे विज्ञान के रूपों में ले जाना नही चाहता हूँ, विचार क्या मुनिवरों! देखो, मैं उच्चारण कर रहा था इन तारा मण्डलों की बेटा! एक माला बनी हुई है, और जब सूर्य चन्द्रमा नहीं होते तो इसके प्रकाश से धीमें धीमें मुनिवरों! मानव अपनी पगडण्डी को मानव ग्रहण कर लेता है। वह उसका पथ प्रदर्शक बन जाता है, पथ प्रदर्शक बन करके मेरे प्यारे! अग्रणीय बन करके अपनी आभाओं में नियुक्त होता रहा है। आओ, मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह वर्णन कराया, तो राजा जनक और उनकी पत्नी को शान्ति नही हुई। उन्होंने कहा प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, जब यह सौरमण्डल और तारामण्डल नही होते, तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा हे राजन! जब यह मानो सौर मण्डल नही होते मङ्गलम ब्रह्मा वाचो मानो यह सूर्य चन्द्रमा भी नहीं होते तो हम अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। मानो देखो, अग्नि हमारा प्रकाशक कहलाता है, अग्नि हमें नाना प्रकार की धाराएं प्रदान करता है, यह अग्नि ही तो प्रकाश का और देवताओं का दूत कहलाता है, यह अग्नि ही तो मेरे प्यारे! मानव के पञ्चीकरण में विद्यमान रहती है यही अग्नि का वर्णन करते हुए, आचार्य ने कहा है क्या यह भिन्न भिन्न प्रकार की अग्नि कहलाती है, एक अग्नि को गार्हपथ्य नाम की अग्नि कहते हैं, द्वितीय अग्नि का नाम गृहपथ्य नाम की अग्नि है, तृतीय अग्नि का नाम आह्वनीय अग्नि है, चतुर्थ का नाम वृत्तिका अग्नि कहलाती है। और पञ्चम का ब्रह्माग्नि कहलाती है। मानो इसी प्रकार एक बड़वानल नाम की अग्नि रहती है। मेरे प्यारे! देखो, वह भी अग्नि है, जो मुनिवरों! देखो, काष्ठों में गमन करने वाली है, जो मुनिवरों! देखो, यज्ञशाला में, जब यज्ञमान याग करता है, तो अग्नि अपनी ऊर्ध्वा को प्राप्त हो जाती है। मानो देखो, वह भी अग्नि है, जो बुद्धिमान के हृदय में, ज्ञानरूपी अग्नि प्रदीप्त हो करके रहती है, उसे

मेरे प्यारे! ब्रह्माग्नि कहते हैं, जो ब्रह्मज्ञान को उपलब्ध करने वाली है, मेरे पुत्रों! एक अग्नि वह है जो बड़ावनल नाम की अग्नि, जो समुद्रों में प्रदीप्त हो जाती है। जब समुद्रों में अग्नि प्रदीप्त हो जाती है तो मेरे पुत्रों! देखो, बड़वानल नाम की अग्नि मुनिवरों! देखो, जल प्लावन के रूप को धारण कर लेती है। मानव को नष्ट कर देती है, अन्तरिक्ष में, मेरे प्यारे! ये छायामान हो जाती है। परन्तु देखो, मैं अब तुम्हें विशालता में ले जाना नही चाहता हूँ, अग्नि के ऊपर व्याख्या करने लगूंगा तो बहुत समय लग जाएगा परन्तु विचार संक्षिप्त केवल यह है क्या मुनिवरों! देखो, हमारे आयुर्वेदाचार्यों ने बेटा! पिचाची प्रकार की अग्नि का चयन किया है। परन्तु जब यही अग्नि, मुनिवरों! देखो, वैज्ञानिकों के युग में पंहुची, वैज्ञानिकों के कुल में पंहुची है, बुद्धि को निहारने लगी है उन्होंने बेटा! देखो, पिचासी प्रकार की अग्नि का, जब विभाजन किया, विभक्त किया, तो बेटा! देखो, अरबों, खरबों प्रकार की अग्नि का चयन होने लगा। वही अग्नि बेटा! देखो, विभक्त करने लगे, तो अणु के रूप में बेटा! देखो, मानो देखो, अगणित शून्य बिन्दु पर प्रवेश हो गई है।

तो विचार विनिमय क्या? मेरे पुत्रों! कोई भी मानव अपने गृह को स्वर्ग बनाना चाहता है, तो गृहपथ्य नाम की अग्नि की पूजा करनी चाहिए, जिसकी चर्चा बेटा! मैं आज नही कर सकूंगा, विचार केवल यह क्या आज बेटा! हम देखो, अग्नि के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं, यही अग्नि है बेटा! जो नाना प्रकार के रूपों में रत्त रहने वाली है। यही अग्नि है जो बेटा! देखो, वायु ब्रव्हे सम्भव्र ब्रव्हे रुद्राम मेरे प्यारे! देखो, मानव की वृत्तियों में विद्यमान रहती है। तो विचार विनिमय क्या, मानव को, उस मानवीय दर्शन को विचार विनिमय करना चाहिए, जिस मानव दर्शन को, मानव अपनी क्रिया में लाना चाहता है। वही तो दर्शन बेटा! मानव को ऊँचा बनाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! मैं विशेषता में न जाता हुआ, केवल तुम्हें यह उच्चारण करने जा रहा हूँ, क्या अग्नि ही हमारा प्रकाशक है, अग्नि ही मानो देखो, प्रकाश के देने वाला है।

मेरे प्यारे! राजा जनक उनकी पत्नी रम्भेश्वरी ने नतमस्तिष्क हो करके कहा हे प्रभु! हम जानना चाहते हैं जब यह अग्नि नही होती तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं? उन्होंने कहा हे राजन! हे देवतम्! मानो देखो, जब यह अग्नि नही होती तो हम शब्द के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं यह शब्द ही हमारा जीवन है, मानो देखो, भिन्न भिन्न प्रकार की ध्वनियां हो रही हैं, उन ध्वनियों को हम अपने में पान कर रहे हैं, इन ध्वनियो से हम ध्वनित हो रहे हैं, मानो देखो, वही ध्वनि है, जो ध्वनित होते हुए, मानव को मानवीयता के अमूल्य रूपों में परणित करा देती है। तो मेरे प्यारे! देखो, वेद का आचार्य कहता है, ऋषि कहता है सम्भवं ब्रह्मे शब्द ब्रहे व्रतां मेरे प्यारे! देखो, शब्दायमान होता हुआ, यह जो जगत है, नाना प्रकार के लोक लोकान्तर हैं, एक दूसरें में परणित हो रहे हैं, और वही परणित होने वाला, जो अमूल्य जगत है बेटा! वही ध्वनि के रूप में परणित होता रहता है। यही ध्वनि है, जब मानव की पवित्र हो जाती है, तो मानव में बेटा! सङ्कल्प शक्ति जागरूक हो जाती है। हमारे यहाँ ऋषिमनि इस ध्वनि को, अपने मानवीय शब्दों को बेटा! देखो, ऊँचा बनाने में सदैव तत्पर रहें हैं, और ऊँचा बनाने में वह इसके ऊपर अनुष्ठान करते रहे हैं, अनुष्ठान होते हुए उन्होंने बेटा! अपनी वेद ध्वनि को ले करके, अपनी वाणी का शोधन किया है, तो वाणी अपने में पवित्र बन करके बेटा! वही पाण्डित्व को पाण्डित्व की प्रतिभा में ले जाती है। मेरे प्यारे! देखो, यही शब्द है, यही ध्वनि है, जब राष्ट्र गृह प्रवेश हो जाता है आज जो राजा यह चाहता है कि मैं अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता हूँ, तो बेटा! राजा की वाणी पवित्र होनी चाहिए, मानव की वाणी पवित्र होनी चाहिए जितनी मानव की वाणी में मानव दर्शन होगा मानो वेद का वाक होगा उतनी ही मानव में निर्भयता होती चली जाती है। उतना ही मानव अपने आत्म विश्वासी बनता चला जाता है और जब आत्मा का विश्वास हो जाता है आत्मविश्वासी बन जाता है, तब शाब्दिक रूपो में मेरे प्यारे! वह मानव अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाता है।

तो वेद का वाक कहता है क्या राजा यदि अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना चाहता है, तो उसके राजा के राष्ट्र में वाणी पवित्र होनी चाहिए, वाणी में सत्यता होनी चाहिए, शब्द ऊँचा होना चाहिए, शब्द में एक मानवीयता की प्रतिभा होनी चाहिए, मेरे प्यारे! देखो, यह वाणी ही, तो माता को माता के रूप में परणित करा देती है, यह वाणी ही, तो मेरे प्यारे! देखो, संकल्पोमयी जगत बना देती है, यह वाणी ही मेरे प्यारे! देखो, वेद का उद्घोष करा देती है, यह वाणी ही प्राणत्व की ध्वनि को ले करके, मानो देखो, प्राण की ध्वनि को अपने में ध्वनित करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, प्राण, अपान, उदान, व्यान, समान इन सब प्राणों को एक सूत्र में, ला करके वह प्राणायाम करता हुआ, योगाभ्यास करके मेरे पुत्रों! वह मानव इस संसार का दृष्टा बन जाता है और दृष्टिपात करने लगता है इसीलिए शब्द हमारा ऊँचा होना चाहिए हमारी जो ध्वनि है, उस ध्वनि को अन्तर्मुखी बना करके, मेरे पुत्रों! देखो, ध्वनि को हमें आन्तरिक जगत में ले जा करके, मुनिवरों! देखो, हमें हृदय रूपी गुफा में, प्राण की प्रतिष्ठा करनी चाहिए। तो विचार क्या मुनिवरों! यह ध्वनि ही, तो अन्तरिक्ष में छायामान हो जाती है। अथवा यह ध्वनि ही, मेरे पुत्रों! देखो, राजा के राष्ट्र को ऊँचा बना देती है, यह ध्वनि ही मानव को ऊँचा बना करके ममतामयी को त्याग करा देती है मेरे पुत्रों! विचार विनियिम क्या हमें वेदज्ञ ध्वनि के आधार पर, उस ध्वनि को विचारना चाहिए, उस शब्द ध्वनि को विचार करके मेरे पुत्रों! इस संसार सागर से पार हो जाना चाहिए।

आओ, मेरे प्यारे! ध्वनि के कारण ही मानव योगेश्वर बनने लगता है, इस ध्वनि के कारण ही मुनिवरों! देखो, मानव इस संसार को विजय कर लेता है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ, अन्तिम सूत्र क्या कहता है, बेटा! वेद का ऋषि कहता है, क्या हे राजन! इस ध्वनि को विचारों, यह जो शब्द है, जो मानव के श्रोत्रों में गुंजायमान रहता है, या अन्तरिक्ष में गुंजायमान रहता है, जो अग्नि की धाराओं में गुंजायमान रहता है, इस अग्नि के स्वरूप को

तुम्हें जान करके, शब्द को जानना चाहिए, यह शब्द ही तुम्हारे मानव समाज के लिए महान कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार विवेचना की मानो विशेष विवेचना न देता हुआ मेरे प्यारे! राजा ने कहा प्रभु! यह विवेचना तो हम आचार्यों से मानो परम्परागतों से श्रवण करते रहें हैं, हम यह जानना चाहते हैं भगवन! क्या मानो यह शब्द भी नही होता, तो हम किसके प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं।

मेरे पुत्रों! देखो, जब राजा ने और उनकी पत्नी ने यह वाक कहा तो ऋषि ने कहा हे राजन! जब मानो देखो, सूर्य, चन्द्रमा, तारामण्डल, अग्नि और यह शब्द नही होता हो हे राजन! हम आत्मा के प्रकाश से प्रकाशमान होते हैं। यह आत्मा हमारे शरीर में, भासता रहता है यही तो आत्मा मानो प्रकाश के देने वाला है यह मानो देखो, आत्मा को जानने का तुम प्रयास करो यह जो आत्म तत्त्व है, मेरे प्यारे! देखो, जो प्राणों के समूह को स्थिर करने वाला है, जो प्रकृति के मण्डल को मानो अपने में दबा करने वाला है, अरे, तुम उस आत्मा को जानने का प्रयास करो, यह आत्मा ही तो मानो अखण्डम ब्रह्मे व्रताम यही तो अखण्डमयी ज्योति कहलाती है। हे राजन! आज तुम इस आत्मा के प्रकाश में प्रकाशमान रहते हो, जब यह आत्मा इस शरीर से निकस जाता है, मानो देखो, सूर्य अपना प्रकाश दे रहा है, अरे, आत्मा इस शरीर में नही है हे मानव! शव ज्यों का त्यों है तू क्यों नही प्रकाश को प्राप्त हो जाता, नेत्र मानो देखो, अपने में प्रकाश को दृष्टिपात कर रहे थे जब आत्मा था, परन्तु जब आत्मा नही रहा, तो सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित नही कर रहा है, चन्द्रमा अमृत दे रहा है, परन्तु आत्मा नही हैं, अरे, अमृत को क्यों नही प्राप्त कर लेता? अरे, मानो तारामण्डलों की माला बनी हुई है, परन्तु देखो, नाना अखण्डमयी ज्योति वाला यह जगत अपने में प्रकाश दे रहा है, अरे, मानव! आत्मा नही है तू क्यों नही प्रकाश को प्राप्त कर लेता, मेरे प्यारे! वेद के ऋषि ने कहा अग्नि प्रकाश दे रही है माता अग्नि से प्रकाशित कर रही है, परन्तु आत्मा नही है शरीर ज्यों का

त्यों है मानव! तू क्यों नही प्रकाश को प्राप्त हो जाता अरे, शब्द अपनी अपनी ध्वनियां कर रहा है, अन्तरिक्ष में एक एक परमाणु अपने अपने परमाणु से सम्मिलन करता, हुआ सुगठित करता हुआ ध्वनियां दे रहा है। अरे, मानव, ध्वनि को क्यों नही स्वीकार कर लेता, अरे, पाण्डितव! तू आत्मा को जानने की ही तो पण्डित्व की आभा प्रगट कर रहा था। अरे, आत्मा नही है अरे, मानव! तू क्यों नही प्रकाश को प्राप्त कर लेता। मेरे प्यारे! वेद का ऋषि कहता है हे राजन! यदि तू अपने राष्ट्र को अपने समाज को ऊँचा बनाना चाहते हो तो तुम्हारे राष्ट्र में आध्यात्मिक विज्ञान होना चाहिए मानो आध्यात्मिक विज्ञान के बिना, मानव को मानव की सम्पदा प्राप्त नही होती। मानव उस सम्प्रदा से रहित रहता है। मेरे प्यारे! देखो, राजा ने और उनकी पत्नी ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के चरणों की वन्दना की, और यह कहा, कि धन्य है प्रभु! आप ने हमें अन्धकार से प्रकाश में पंहुचाया है, आप को धन्य है, मेरे प्यारे! उन्होंने चरणों की वन्दना की, तो विचार विनिमय क्या, हमारे वाक उच्चारण करने का, मेरे प्यारे! यदि कोई मानव आध्यात्मिक विज्ञान में जाना चाहता है तो उसे भौतिक विज्ञान के मार्ग से हो करके, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करना होगा। क्योंकि देखो, वह जो आध्यात्मिक विज्ञान वह कहलाता है जहाँ मुनिवरों! देखो, प्रकृति का विज्ञान समाप्त हो जाता है, आध्यात्मिकवाद का उदय होता है, क्योंकि प्रभु के राष्ट्र में, जब मानव चला जाता है, तो बेटा! प्रभु के राष्ट्र में, रात्रि नही है, और जहां रात्रि नही है, वहाँ आलस्य नही है, और जहाँ आलस्य नही है, वहाँ प्रमाद नही है, और जहाँ रात्रि, आलस्य, और प्रमाद नही हैं अरे, वहाँ मृत्यु भी कोई अस्तित्व में नही है वहाँ मृत्यु भी नही हुआ करती है। इसीलिए बेटा! वेद का ऋषि कहता है हे मानव! तू अपनी आत्मा को जानने का प्रयास कर, आत्मवेत्ता पुरूष मानो देखो, परम्परागतों से ही, इस भौतिक विज्ञान के मार्ग से होते हुए मेरे पुत्रों! देखो, आध्यात्मिकवाद में प्रवेश हो जाता है वह प्रभु का राष्ट्र है वह प्रकाश है वह मानवीयता कहलाती है प्रत्येक मानव के हृदय में, जब तक आध्यात्मिकवाद

की पिपासा नही जागरूक होती है, तब तक मुनिवरों! देखो, मानव जनसमाज कभी भी मानो ऊर्ध्वा को प्राप्त नही हो पाता यह है बेटा! आज का वाक्, आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या हे माता वसुन्धरा! मानो हम तेरे द्वार पर आएं हैं, हमारा तू कल्याण कर, वसुन्धरा किसे कहते हैं, जो अपने में हमे धारण कर रही हैं बेटा! आत्मा को भी वसुन्धरा कहते हैं। क्योंकि वह मानव शरीर को धारण करने वाली है।

आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार क्या आज का वेद का वाक क्या कहता है? कि हम परम्परागतों से ही, उस महान देव की महिमा को जानते हुए अपने में महानता की ज्योति को आत्मा को जागरूक करते हुए, इस संसार से हम पार हो जाएं, यह है बेटा! आज का वाक कल मुझे समय मिलेगा कल बेटा! मैं वसुन्धरा की चर्चांए कल और चर्चांए प्रगट होंगी। आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् मां रथं आभ्यां गतौ आ पा रेवं गा ता हाम्। ओ३म् यज्ञमम बृहि वृणा आ पा रेवं गा ताहाम्।

4. संस्कार और विचार, माता कौशल्या का तपस्वी जीवन-881108

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं, मानो यह जगत उसका आयतन माना गया है, और हम उस परमपिता परमात्मा की महती और उसकी अनन्तता के ऊपर सदैव विचार विनिमय करते रहें, कि हमारा जो मानवीयतव है, उस परमपिता परमात्मा की जो एक महती है, अनन्तता है, उसके ऊपर प्रायः विचार विनिमय किया जाता है।

वेद मन्त्र की प्रेरणाएं

तो आज का हमारा वेदमन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणाएं देता जा रहा है। क्योंकि संसार में जितना भी प्राणी मात्र है, वह सर्वत्र मानो एक प्रेरणा का स्रोत है, और जो प्रेरणा के आधार पर अपने जीवन को निर्धारित करता रहता है। क्योंकि हमारे ऋषि मुनियों ने इस वैदिक साहित्य को ले करके, मानो इसके ऊपर बड़ी ऊँची ऊँची उड़ाने उड़ी हैं। तो हमें उस उड़ान को उड़ना है, जिससे मानव समाज व्यवस्थित हो जाएं। मानव जीवन की प्रतिभा वैदिकता के अनुकूल हमें वृत्तियों में, हमें रत्त रहनी वाली हो, क्योंकि प्रत्येक मानव प्रकाश को चाहता है। अन्धकार को नही चाहता, तो मानव के जीवन में प्रकाश आना चाहिए, और प्रकाश जब प्राप्त होता है, जबकि ज्ञान होता है, विवेक होता है, और जब ज्ञान और विवेक नही होता, तो मानव का जीवन प्रकाश में नही आ सकेगा, और जीवन में ज्ञान और प्रकाश जब आता है, जबकि मानव के जीवन, जब प्रत्येक क्रिया में उन क्रियाओं में कोई न कोई रहस्य होना चाहिए। क्योंकि रहस्यतम जो विचार होते हैं, उन विचारों में ही .. और उसी की आभा में वह सदैव रत्त रहता है।

ज्ञान, विवेक से महानता

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेष तो तुम्हें विवेचना नही दूंगा, आज मुझे कुछ प्रेरणा प्राप्त हो रही हैं और उन प्रेरणाओं के आधार पर हम अपने विचारों को सदैव व्यक्त करते रहते हैं, वेद का मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रेरणा देता है, नाना प्रकार की आभाओं में परिणित कर रहा है, तो इसीलिए मानो हमें अपने जीवन और जो प्रेरणा है, उसका, दोनों का समन्वय हो जाता है। तो दोनों का जब समन्वय हो जाता है, तो नाना प्रकार की उपलब्धियां उत्पन्न होने लगती हैं। तो आओ, मुनिवरों! देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र कहता है, क्या मानव के जीवन को व्यवस्थित रहने के लिए, मानो कोई न कोई रचनाएं, कोई न कोई वृत्तियों को उज्ज्वल बनाने के लिए, हमें अपनी आभा में परिणित होना होगा। क्योंकि उसी काल में मानव का जीवन व्यवस्थित बनता है। मैने बहुत पुरातन काल में तुम्हें नाना प्रकार की विवेचनाएं दी हैं, और नाना प्रकार की विवेचनाओं में, प्रायः यही प्राप्त हो रहे थे, कि मानव का जीवन एक कटिबद्ध होना चाहिए, ब्रह्माण्ड और पिण्ड को, दोनों को ऋषि मुनियों ने मापने का प्रयास किया है। तो हमें मापना चाहिए, मानो जिससे हमारा जीवन महान और पवित्र बन सके, और वैदिकता की आभा में हम मानो उसका निर्धारित कर सकें। तो वेद का मन्त्र इसीलिए क्या कह रहा है, वेद का मन्त्र कहता है हे मानव! तू अपने जीवन में मानो देखो, माता की प्रवृत्तियों से ले करके, और अपनी मानो अपनी अन्तिम प्रवृत्तियों तक, उस परमपिता परमात्मा की महती और उसको ज्ञान और विज्ञान को प्राप्त करता है। तो मुनिवरों! देखो, इस संसार में देवतव की उपलब्धियां हो जाती हैं, और देवता बन जाता है, तो इसीलिए देवता वही बनता है जो प्रकाश में रहता है, और प्रकाश कहते हैं, जो ज्ञान और विवेक हो जाता है। और ज्ञान और विवेक के हो जाने के पश्चात ही मानव अपने महानतव को प्राप्त करता रहता है।

माता से संसार में तपस्या

तो आओ, मेरे पुत्रों! मैं विशेषता में न जाता हुआ, विचार केवल यह है, कि हम अपने जीवन को व्यवस्थित बनाए? कैसे बनाएं, यह बड़ी विचित्र एक वार्ता है, जो वेद का मन्त्र कहता है। आज मुझे कही से यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है, कि मानव के जीवन में एक आभा अर्पित होनी चाहिए, बेटा! क्या माता के मानो देखो, यह जीवात्मा को हम शिशु कहते हैं, शिशु के रूप में भी इसका वर्णन आया है, आत्म तत्त्व के रूप में भी वर्णन आया है, परन्तु माता जब मानो देखो, ब्रह्मणं ब्रव्हा कृत लोकाम् जब माता अपने में यह स्वीकार करती है, कि मुझे अपने गर्भ से सन्तान, मानो सुयोग्य और सुविचारक और परमपिता परमात्मा को निहारने वाली, सन्तान को जन्म प्राप्त किया जाएं, तो मानो देखो, माता को तपस्वी बनना होगा। मैंने बहुत पुरातन काल में, तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा था, क्या मुनिवरों! देखो, माताएं जब तपस्वी हो जाती हैं, तो मुनिवरों! देखो, ये संसार भी तपस्या में परणित हो जाता है, राजा को भी मानो देखो, माता एक ऊर्ध्वा में, एक शिक्षा देने वाली बन जाती है। आज मैं इस सम्बन्ध में तो कोई विशेष चर्चा तुम्हें देने नही आया हूँ, केवल यह क्या, मुझे यह प्रेरणा प्राप्त हो रही है, उसी प्रेरणा के आधार पर, एक मानो हम लोकप्रिय चर्चाओं को प्रायः हम प्रगट करते रहते हैं। तो मुनिवरों! आज का हमारा वेदमन्त्र यह कहता है, क्या, हम प्रकाश को प्राप्त करें। अन्धकार को त्यागने का प्रयास करें, प्रकाश को अपनाना, अन्धकार को त्यागने का नाम ही जीवन है। यही मानो देखो, प्रकाश में ले जाने वाली एक क्रिया कहलाती है।

अयोध्या में पुत्रेष्टि याग

तो आओ, मेरे प्यारे! आज का विचार, हमारा यह कह रहा है, बेटा! देखो, माता अपने में कितनी विचित्र है, मुझे वह काल स्मरण आता रहता है, जिस काल में बेटा! देखो, उग्रतं ब्रह्मा देखो, अयोध्या में बेटा! एक पुत्रेष्टि याग हुआ था, वह याग मुझे स्मरण आता रहता है। मानो देखो, जब वह याग हुआ, तो याग के पश्चात, वह याग इस प्रकार का था, जो मानो देखो, तपस्वियों के द्वारा, जो भयंकर वनों

से लाए हुए, महापुरूषों के द्वारा, बेटा! वह पुत्रेष्टि याग हुआ था। उसमें मानो देखो, अंगिरस गोत्र में जन्म लेने वाले श्वेतकेतु मुनि महाराज विद्यमान थे, मानो देखो, जिनकी वृत्तियों में, शृङ्गी इत्यादि को वहाँ उनका पदार्पण होने के पश्चात बेटा! याग का प्रारम्भ हुआ, जब वह, याग का प्रारम्भ हुआ, तो याग में एक महानता मानो देखो, अग्नि देव की उपासना करनी थी, क्योंकि अग्नि तेजोमयी कहलाता है, जो अग्नि काष्ठ में गमन करने वाली है, वाणी रूप बन करके वही अग्नि कहलाती है, वही अग्नि मानो देखो, द्यौ में, ऊर्ज्वा के साथ में सूर्य अपनी किरणों में, अपने में धारण करता रहता है, वही ऊर्ज्वा मानो देखो, अग्नि के स्वरूप को अपना करके ही मानो देखो, मुनिवरों! ऊर्ज्वा को प्राप्त करता है, तो अग्नि देव को जब प्रगट करने के पश्चात, बेटा! चरू और भयंकर वनों से औषध को लाया गया, तो चरू के द्वारा मुनिवरों! देखो, बेटा! याग जब प्रारम्भ हुआ, नाना साकल्य अग्नि देवता को प्रसन्न करना बहुत अनिवार्य है, क्योंकि वही अखण्ड अग्नि मानो जो सूर्य द्यौ में प्रकाशित हो रही है, वही अखण्ड अग्नि माता के गर्भाशय में प्रदीप्त हो रही है ,वही अग्नि है, जो मानो मानो जिस अग्नि में शिशु पनप रहा है, शिशु तेजोमयी, उष्णता को प्राप्त कर रहा है, और वही उष्णता मुनिवरों! उसको महान बना रही है, उसी उष्णता के द्वारा माता के विचार आ रहे हैं, उनका मानो देखो, प्रतिपदा वायसुतं अपनें में धारयामि बनाया जा रहा है।

माता कौशल्या की दक्षिणा

तो मुनिवरों! देखो, वह याग जब सम्पन्न हो गया, याग के सम्पन्न होने के पश्चात, कौशल्या जी ने ऋषियों से यह कहा कि हे प्रभु! मैं दक्षिणा प्रदान करना चाहती हूँ, तुम जो उच्चारण करोगे, मैं उस दक्षिणा को तुम्हें देना चाहती हूँ, मेरे प्यारे! देखो, जब माता कौशल्या ने ये वचन कहे, तो एक समय ऋषियों ने कहा क्या हे दिव्या! तुम क्या दक्षिणा प्रदान कर सकती हो? ऋषियों की दक्षिणा तो बड़ी विचित्र होती है। तुम क्या प्रदान करोगी? उन्होंने कहा प्रभु! जो आपकी इच्छा हो, मैं वही

प्रदान करने के लिए तत्पर हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, ऋषियों ने यह कहा, उस यज्ञशाला में, क्या हे देवी! तुम्हे यह प्रतीत है, क्या इस समय राष्ट्र की जो प्रणालियां बनी हुई हैं, राष्ट्र का जो एक क्रियाकलाप है, वह एक बड़ा विचित्र है। मानो देखो, यह जो वंशलज है, जो अयोध्या में राज कर रहा है, यह मनु से ले करके मनु का वंश समाप्त हो करके, मानो यह रघुवंश बहुत समय से चला आ रहा है, इसको रघुवंश से पूर्व मानो देखो, इसको सगर वंश कहलाया जाता था, और सगर वंश से पूर्व इसका मानो दधिकेतु राज था, मानो दधि वंश कहलाया जाता था मानो इससे पूर्व मनु वंश था और इसके पश्चात मानो देखो, इस दधि वंश में और देखो, इसको सगर वंश में और रघु के समय से इसका कोई रक्षक हुआ, तो यह जो रघुवंश है, दिव्या! इसमें बड़े बड़े महापुरूष और त्यागी तपस्वी हुए हैं, क्योंकि राष्ट्र और समाज को ऊँचा बनाने वाला मानो देखो, तपस्वी ही कहलाता है, और वह देखो, रघुवंश में जन्म लेते रहे हैं, और हम कुछ समय से यह अनुभव कर रहे हैं, क्या राजा सगर और अज के, महाराजा रघु के पश्चात उस मानो राष्ट्रीय क्रियाकलाप में बड़ी सूक्ष्मता आ गई है, राष्ट्रीय क्रियाकलापों में कुछ मानो चरित्र की हीनता आई है, तो हम यह चाहते हैं, कि इसका उपाय हो जाएं और राष्ट्र को मानो देखो, एक खिलवाड़ के भान्ति, राष्ट्र को भोगा जाएं, ऐसे संसार को, हम दृष्टिपात करना चाहते हैं ।

माता कौशल्या का जीवन

मेरे प्यारे! माता कौशल्या ने कहा प्रभु! मैं आपको दक्षिणा प्रदान करना चाहती हूँ, आप मेरी दक्षिणा को स्वीकार करो, उन्होंने बेटा! देखो, इसको स्वीकार कर लिया। क्या कहा मैं ऐसी ही सन्तान को अवश्य जन्म दूंगी, जो तुम्हारी इच्छा हो। मेरे प्यारे! देखो, माता कौशल्या का जीवन तो बड़ा विचित्र रहा है, मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है, माता कौशल्या मानो कला कौशल करती हुई, मानो इसके बदले जो अन्न आता, उस अन्नाद को पान करती थी, गायत्री और छन्दों का पठन पाठन

करती, मानो देखो, प्रवृत्तियों में मानो देखो, वेद का अध्ययन करने वाली थी। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण आता रहता है, जब यह वाक्यं ब्रह्मा मानो कौशल्या के हृदय में, यह की विश्वनीय, कि मैं दक्षिणा प्रदान कर सकती हूँ, तो उस समय मानो देखो, उसने अपने जीवन का विभाग बनाया, अपने जीवन का भाग बनाया जाता है, मानो प्रभु का चिन्तन, देवताओं का याग, उसके पश्चात शारीरिक क्रियाकलाप, अपने उदर के लिए, उसके पश्चात रात्रि काल में, देव उपासना करना, ब्रह्म का चिन्तन करना, बेटा! देखो, इस प्रकार यह मनन और चिन्तन में लग गई। मेरे पुत्रों! देखो, वह अपनी क्रिया, अपना कला कौशल करने के पश्चात, उसके बदले, जो अन्न इत्यादि आता उसे वह पान करती थी, क्योंकि अन्न से ही जीवन बनता है, यदि मानव का अन्न अशुद्ध बन गया है, तो अन्नाद में यदि सूक्ष्मता आती है, तो देखो, मन की प्रवृत्ति नही बन सकती, यदि अन्न में किसी के अधिकार को ही ले करके, उस अन्न को पान किया जाता है, तो उससे प्रवृत्ति नही बना करती। प्रवृत्ति जब बनती है जब मानो देखो, अपने में स्वतन्त्र रूप हो करके, अपने क्रियाकलापों के आधार पर जब अन्न को ग्रहण करता है, उस अन्न से बेटा! मन की उत्पति होती है, और मन की उत्पति से ही मुनिवरों! प्रवृत्ति बनती है, और प्रवृत्तियों से मानव के क्रियाकलापों में भिन्नता आ जाती है, और उन क्रियाकलापों में भिन्नता आ करके, बेटा! उसका जैसा क्रियाकलाप होता है, वैसा ही मानो देखो, मनस्तव की प्रवृत्ति बना करती है।

माता कौशल्या द्वारा राष्ट्र अन्न का त्याग

तो विचार आता रहा बेटा! देखो, मुझे बहुत पुरातन काल की वार्ता हैं, बेटा! मेरे प्यारे! माता कौशल्या अपने में तपस्वी बनी रही, जब तपस्या में तन्मय रही, तो मुनिवरों! देखो, एक समय राजा को यह प्रतीत हुआ, क्या कौशल्या जी मानो देखो, राष्ट्रीय अन्न को ग्रहण नही करती है, एक समय बेटा! माता कौशल्या के समीप, राजा दशरथ पंहुचे, उन्होंने उनको आसन दिया, नमस्कार करके बोले कहो, भगवन!

आज कैसे? मानो तुम्हारा पदार्पण हुआ है? उन्होंने कहा कि हे दिव्या! मैंने यह श्रवण किया है, कि तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही कर रही हो, मेरी इच्छा यह है, कि तुम राष्ट्रं ब्रह्मा दोहा तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करने लगो, उन्होंने कहा हे प्रभु! मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही करूंगी, क्योंकि आपको प्रतीत है, कि राष्ट्र का जो अन्न होता है, रजोगुण, तमोगुण का सना हुआ अन्न होता है, वह उससे परिपूर्ण होता है। इसीलिए मैं राजसी और तामसी प्रवृत्ति बाल्य को जन्म देना नही चाहती हूँ, मेरे हृदय की यह वेदना है, कि एक तपस्वी बाल्य का, मेरे गर्भ से जन्म हो, जिससे राष्ट्र और समाज को नित्यं ब्रह्मा समाज का कल्याण करने वाला हो, राष्ट्र का उत्थान करने वाला हो, और जो वैदिकता को अपने में अपनाने वाला हो, ऐसी मेरी प्रवृत्ति हैं, भगवन! मेरे प्यारे! देखो, राजा को बड़ा यह कष्ट हुआ, अपने में अनुभव किया कि वाक तो उनका यथार्थ है, परन्तु राष्ट्र का अन्न तो होना ही चाहिए।

वशिष्ठ मुनि के आश्रम में राजा

मेरे प्यारे! राजा ने विचारा, अपने पूज्य पुरोहित के द्वारा, मेरा गमन होना चाहिए, अन्तिम चरण ऋषि मुनियों का होता है। तो बेटा! देखो, जब वह उनके द्वार पर अमृतम् देखो, वह सांयकाल को उन्होंने गमन किया, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज के आश्रम में पंहुचे, और वशिष्ठ मुनि महाराज ब्रह्मणे वह देखो, दोनों रात्रि का काल हो गया था, परस्पर चन्द्रमा की आभा में वह दोनों अपने में, चिन्तन कर रहे थे और यह उच्चारण कर रहे थे, प्रभु से प्रश्न कर रही थी दिव्या, मानो देखो, अरूणधति ने कहा वशिष्ठ से हे प्रभु! यह चन्द्रमा का प्रकाश कैसा प्रकाशवान है, यह चन्द्रमा के प्रकाश में मानो कैसी छठा है, कैसा एक आनन्दवत आ रहा है प्रभु! हे भगवन! कुछ वार्त्ताएं प्रगट होनी चाहिए, कुछ ज्ञान की चर्चाएं मानो विवेकमयी दर्शनों की आभा में गमन करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, दोनों परस्पर विचार करने लगे, माता अरूणधति ने यह प्रश्न किया, क्या प्रभु! यह दो मण्डल मुझे दृष्टिपात आते हैं, मानो देखो, जब किसी काल में, मैं देखो, बालणानि ब्रह्मणा हमारे यहाँ

यह माना गया है, क्या जब नामों की उत्पतियों का जन्म होता है, नाना उत्पतियों की प्रतिभा हृदयों में गमन करने लगती है, मातृ और पितरों के द्वारा, तो उस समय मानो देखो, एक समय जब मैं प्रवृत्ता में हो गई, तो मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह प्रश्न किया था, तत्त्वेतु ऋषि महाराज से, क्योंकि मैं यह अध्ययन करती थी, कि मैंने यह प्रश्न किया था, मेरा नाम अरूणधति ही क्यों उच्चारित किया है? क्यों चुना गया है? तो उस समय बेटा! देखो, देवी कहती है कि हे प्रभु! ऋषि ने मुझे यह उत्तर दिया, कि उस समय मेरा बाल्यबाल था, अध्ययन की प्रतिक्रियाएं प्रारम्भ हो गई थी, तो आचार्य ने मुझे उत्तर दिया था, कि अरूणधती ऐसा मण्डल है, अरूणधति मण्डल है और अरूणधति की छाया वह गमन करती हुई चन्द्रमा में से गमन करती हुई, मानो सूर्य की कान्ति में वह गमन करती हई, माता के गर्भस्थल में जब छठा माह होता है, तो उससे अरूणधति का सम्बन्ध, माता की नाभि से होता है और उसमें एक रस आता रहता है, जिस रसों को पान करने वाला मानो देखो, बुद्धि में सहायक बनता है। मानो देखो, बेटा! यह महर्षि अमृतं मानो देखो, यह जो प्रभु, आचार्य ने मुझे यह उत्तर दिया, तो क्या प्रभु! यह यथार्थ है। वेद का मन्त्र क्या कहता है, इस सम्बन्ध में।

मेधावी

तो उन्होंने कहा कि अरूणधतं ब्रव्हे सम्भवा हे देवी! अरूणधती का मण्डल, तो वैदिक साहित्य में आता है, और जैसा उन्होंने कहा, वह यथार्थ है। परन्तु एक वार्ता और चले गएं, कि जब ब्रहे देखो, एक वशिष्ठ मण्डल है, उसी के साथ में वशिष्ठ मण्डल है, इन दोनों की छाया आती है, दोनों का धीमा धीमा जो प्रकाश है, वह सूर्य की किरणों में आभायित होता हुआ विचरण करता हुआ, यह चन्द्रमा की कान्ति में देखो, मिश्रण करता हुआ मानो देखो, माता की रसना के निचरले विभाग में एक वृत्ति नाम की, एक नाड़ी होती है। उस नाड़ी का सम्बन्ध लोरियों से होता है, और उस मानो देखो, उन लोरियों का सम्बन्ध, ब्रह्मणं देखो, माता की नाभि से होता

है, तो नाभि देखो, वह रस मानो देखो, बाल्य को प्राप्त किया जाता है, यह प्रभु की सृष्टि बड़ी अदभुत है, प्रभु का विज्ञान बड़ा अदभुत है, मानो देखो, वह कैसा वैज्ञानिक है, जिस प्रकार उन्होंने लोक लोकान्तरों की प्रतिभा निहित कराई, तो मानो देखो, इन दोनों का प्रकाश आता है, बेटा! मानो देखो, उससे मेधावी, बुद्धि में यह सहायक बनती है, वही किरणें जिस भी काल में मानो देखो, माता के गर्भ से पृथक हो करके, जगत में आता है, और वह कही मेघावी बुद्धि के लिए याचक बन जाता है, या वह तपस्या में साधक बन जाता है, तो उस समय मानो देखो, उसका जब वह मेधावी बनने के लिए तत्पर होता है, तो अरूणधति और वशिष्ठ दोनों का जो रसातलियों में जो गमन है, वह ब्रह्मरन्ध्र की आभा के, ऊर्ध्वा भाग में रहता है वह मानो देखो, परमाणु जागरूक हो जाते हैं और परमाणु जागरूक हो करके, मानो देखो, उसे मेधावी बनाते हैं। और मेधावी उसे कहते हैं, जो लोक लोकान्तरों की माला को गणना में लाने वाला हो, और मेधावी उसे कहते है, जो सुमार्ग पर गमन करके स्थिर रह जाता हो।

औषधियों से पुष्टिकारक अन्नाद

तो मेरे पुत्रों! देखो, जब यह वाक माता अरूणधती ने कहा, तो उस समय माता अरूणधती ने यह कहा प्रभु! मैं यह जानना चाहती हूँ, कि उस समय माता का अन्नाद कैसा हो? तो वशिष्ठ मुनि कहते हैं, कि माता का अन्नाद ऐसा होना चाहिए, जो औषधियों से पुष्टिकारक हो, सुगन्धित हो और मानो देखो, रूग्ण नाशक हो, और देखो, मधु होना चाहिएं, ऐसी जो औषधियां है, जो अन्नाद हैं, उसका साकल्य बना करके, अग्नि की पुट दे करके, मानो देखो, उसे पान करना चाहिए, मेरे पुत्रों! देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज और माता अरूणधती दोनो की विवेचना यह हो रही थी प्रभु! हम यह जानना चाहते हैं, कि मानव के मस्तिष्क का जब निर्माण होता है, तो उस समय किस लोक का उसमें पुट लगाई जाती है, तो ऋषि कहते हैं , वशिष्ठ मुनि महाराज, कि मैने एक वेदमन्त्र का अध्ययन किया था, जब मैं पूज्यपाद

गुरुओं के द्वारा अध्ययन करता था देवी! तो मैंने एक वेदमन्त्र का अध्ययन किया था, और वह वेदमन्त्र यह कहा रहा था, श्वञ्जनं ब्रीहि श्वञ्जना वाचो वृत्ति दिव्यां वायु सम्भवं लोकाः मानो देखो, इस प्रकार का, मैं अध्ययन करता हुआ, उस अध्ययन से मुझे यह अनुभूति हुई, यह प्रतीत हुआ, क्या मानो देखो, ब्रह्मणे व्रता देवत्वां देखो, मानो यह जो देवता है, यह प्रभु विज्ञानवेत्ता है, यह जो सर्वत्र ब्रह्माण्ड है, और ब्रह्माण्ड की जो माला है, उस माला में, जिस सूत्र में, यह मनके पिरोएं जाते हैं, वह सूत्र ही मानो देखो, उसे सूत्रित कर रहा है, और उसके सूत्रित होने से सर्वत्र मण्डलों का, इस ब्रह्माण्ड का, मानो सूक्ष्मतम रहस्य तरंगों के रूप में, उस सूत्र में प्रवेश हो जाते हैं, जिस सूत्र से यह मानव् के शरीर का परमाणुवाद मानो कटिबद्ध रहता है, और यह जो माला बनी हुई है, तो मानो देखो, इस प्रकार का मैंने अध्ययन किया। तो इन्हीं विचारों में बेटा! प्रातःकाल हो गया, और राजा दशरथ उनकी वाटिका में शान्त हो करके, उन वाक्यों को श्रवण करते रहे।

मेरे पुत्रों! कुछ ऐसा स्मरण है, प्रातःकाल हुआ, प्रातःकाल होते ही, वह अपनी क्रियाओं से, जैसे ही निवृत्त हुए, राजा दशरथ उनके समीप पंहुचे। राजा दशरथ ने आशीर्वाद ले करके, कहा कहो, राजन! देखो, किस समय पधारे? प्रभु! मैं रात्रि समय आपके चरणामृतों का, वचना अमृतों का, मैं पान करता रहा जैसे एक महापुरूष के द्वारा एक प्राणी जाता है। वह उसके वचनों का पान भी करता है और उसके अमृतमयी देखो, प्रसाद रूप में देखो, उसे पान करता रहता है। इसी प्रकार भगवन! रात्रि हो गई, आपके कथनों के विचार और विज्ञान के सने हुए विचारों को, मैंने श्रवण किया। यह मेरा सौभाग्य है। परन्तु मेरी एक गाथा है, क्या, कौशल्या जी राष्ट्र का अन्न ग्रहण नही कर रही हैं, मेरी इच्छा यह है कि माता अरूणधति और आप दोनों का पदार्पण हो, तो अन्न को पान किया जाएं।

अयोध्या में माता अरूणधती और ऋषि वशिष्ठ का आगमन

मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मण ब्रहा दोनों ने कहा बहुत प्रियतम मानो देखो, क्रियाओं से

निवृत हो गएं, वह पुरोहित थे, राष्ट्र सखा थे, मुनिवरों! देखो, वशिष्ठ मुनि महाराज ऐसे महापुरूष थे जिसके राष्ट्र में मानो देखो, कोई भी आपत्ति जनक वार्ता आ जाएं, तो राजा को शिक्षा दिया करते थे, और शिक्षा देने के लिए तत्पर रहते, वह शिक्षित बन करके राष्ट्रीय विचारों पर, पुनः विचार विनिमय किया जाता। मेरे प्यारे! देखो, वे दोनो तपस्वी वहाँ से गमन करते, माता अरूणधति और वशिष्ठ मुनि महाराज बेटा! भ्रमण करते अयोध्या मे आ गएं, अयोध्या में मुनिवरों! देखो, तीनो मुनिवरों! देखो, माता कौशल्या के कक्ष में जा पंहुचे, कौशल्या जी ने दृष्टिपात किया, कि ये तीनों महापुरूष पूज्यनीय है, मानो उन्हें आसन दिया, और आसनों पर वह विद्यमान हो गएं, और जब विद्यमान हो गएं, तो उन्होंने कहा कहो, भगवन्! आज मेरे आसन को कैसे पवित्र किया है? कोई सूचना नही, कोई आज्ञा नही आपकी, प्रभु! यह क्या कारण है?

माता कौशल्या से आग्रह

तो मुनिवरों! महर्षि वशिष्ठ बोले क्या हे दिव्या! हे पुत्री! हम इसीलिए तुम्हारे समीप आए हैं, क्या, तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करो, उन्होंने कहा प्रभु! मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही कर पाऊंगी। उन्होंने कहा क्यों? क्योंकि राष्ट्रीय जो अन्न होता है, वह तमोगुण और रजोगुण से सना हुआ अन्न है, और मैं ऋषि शृङ्गी को और मैं मानो अंगिरस गोत्र में जन्म लेने वाली ऋषियों को, मैं दक्षिणा प्रदान कर चुकी हूँ। मानो उस दक्षिणा में, मैं कटिबद्ध हो रही हूँ। हे प्रभु! कटिबद्ध नही, यह तो मेरा एक सङ्कल्प बन गया है, यह मेरा एक कर्तव्य है, और कर्तव्यवादी प्राणी को किसी भी काल में, ऐसा समन्वय नही हुआ करता।

सङ्कल्प में जगत

मेरे प्यारे! देखो, वह वशिष्ठ मुनि महाराज मौन हो गए और उनकी वार्त्ताओं को पान करके पुनः कहा कि राष्ट्र का अन्न भी ग्रहण करो। उन्होंने कहा कदापि नही, भगवन! मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नही कर पाऊंगी, ये क्योंकि मेरा सङ्कल्प बन

गया है, क्योंकि यह जो सर्वत्र जगत है, यह सङ्कल्पोमयी कहलाता है। मानो जैसे सङ्कल्प में यह जगत है, सृष्टि के पिता ने, परमपिता परमात्मा ने एक सङ्कल्प मात्र से, उग्र क्रिया के द्वारा सङ्कल्प किया, संसार की रचना हो गई, मानो देखो, जब तक उनका, सङ्कल्प, उसी प्रकार यह जगत चलता रहेगा, प्रभु! इसी प्रकार मानव के जीवन में भी, एक सङ्कल्प एक ऐसी वस्तु है मानो देखो, पिता का, पुत्र का सङ्कल्प है, माता के लिए पुत्र सङ्कल्प है, प्रजा के लिए राजा सकल्प है, राजा के लिए प्रजा सङ्कल्प है, भक्त के लिए परमात्मा सङ्कल्प है, और परमपिता परमात्मा का जो यह जगत, सब सङ्कल्प ही है । तो प्रभु! यह तो सङ्कल्प मात्र है, पति पत्नी का, दोनों का सङ्कल्प मात्र ही तो है। प्रभु! दोनों का सङ्कल्प हो गया, इसी प्रकार यह जो जगत है, यह सङ्कल्पोमयी कहलाता है। तो प्रभु! मैं सङ्कल्प को नष्ट नही कर पाऊंगी।

मेरे प्यारे! देखो, वशिष्ठ तो मौन हो गएं, और वशिष्ठ ने अरूणधती से यही कहा था, कि देवी! वहां जा तो रहे हैं, परन्तु हमारे योग्य यह कर्म नही हैं, हम उन्हें यह आज्ञा नही दे सकते। परन्तु देखो, माता अरूणधति ने भी पुनः कहा, जब वह मौन हो गएं, क्या हे देवी! हे पुत्री! क्योंकि देखो, तुम राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करोगी, तो तुम्हारा शरीर मानो पुष्टिकारक होगा। मेरे प्यारे! देखो, माता कौशल्या ने, उनके सम्मुख मानो वह जो पान करती थी, देखो, वह अन्न को पान करती थी, उसे सुगन्धित बना करके, मानो देखो, उसको रोगनाशक और मुनिवरों! देखो, सुगन्धि और पुष्ट और व्रत्या मङ्गल ब्रहे देवाः तो मानो देखो, चारों गुणों से युक्त करके, उनको नियुक्त किया। उन्होंने कहा प्रभु! जब यज्ञमान, यज्ञशाला में याग करता है, वह तीन प्रकार की मानो चतुष प्रकार की मानो त्रिवाद अग्नि चलती है और उसको को ले करके यज्ञ के समीप जाता है, वह कहता है पुष्टिकारक, सुगन्धित, और मानो देखो, रोगनाशक, इस प्रकार का मानो देखो, वर्णासुति मानो देखो, प्रहे यज्ञो प्रहे वह मानो देखो, मधु से परिपूर्ण होनी चाहिए। तो मेरे में, इसमें मधु भी है,

पुष्टिकारक भी है, और रोगनाशक भी है, हे भगवन! इसमें चतुर्थ गुण कहलाते हैं। मेरे सन्दर्भ में कोई सूक्ष्मता नियुक्त करो।

तपस्या से कार्य

मेरे प्यारे! माता अरूणधती मौन हो गई, माता अरूणधति ने कहा कि उस अन्न को एकत्रित करने में तुम्हें बहुत समय लगता है, और पुरूषार्थ करना होता है। उन्होंने कहा हे देवी! हे माता! बिना तपस्या के संसार में कोई क्रियाकलाप नही होता, जब प्रभु का चिन्तन करते हैं तो भक्त को तपस्वी बनना होता है, जब संसार में राजा को राष्ट्र का पालन करना है, तो राजा को तपस्वी बनना है, माता को सन्तान को जन्म देना है, तो तपश्चर में पंहुच जाना है, तो हे प्रभु! यह सर्वत्र तपस्या में जगत, परमपिता परमात्मा ने जब संसार की, रचना की, तो यह संसार एक रचनामयी, मानो प्रभु एक उग्र क्रिया से, तपस्या के द्वारा क्योंकि तपस्या का द्वितीय नाम उग्र क्रिया, और जब तक उग्र क्रिया नही आ जाती, तो वह तपस्वी नही बना करता। हे देवी! हे माता! मानो प्रभु में उग्र क्रिया आई, तो यह त्रैतवाद का जन्म हो गया, मानो देखो, वह रजोगुण, तमोगुण में और सतोगुण की प्रतिभा का यह जगत बन गया। मानो देखो, इसी प्रकार उग्र क्रिया से, देखो, परमाणुओं में गति आती है, और परमाणु ही मानो देखो, वह अन्तरिक्ष में, वही परमाणु वायु के रूप में, वही परमाणु मानो देखो, तेजोमयी और मानो देखो, ब्रह्मणं ब्रहे और तरलतव, गुरूतव परमाणुओं में उग्र क्रिया आने से, यह जगत की रचना हो गई।

मेरे पुत्रों! देखो, जब इस प्रकार माता कौशल्या जी ने वर्णन किया, तो माता अरूणधति मौन हो गई। उन्होंने कहा, कौशल्या ने पुनः कहा हे माता! मैंने तुम जैसी विदुषी के चरणों में विद्यमान हो करके, इस विद्या का अध्ययन किया है। मानो, यदि मैं तुम्हारे वाक को स्वीकार कर सकती हूँ, यदि मेरे पितरजन, पुरोहित जन मानो देखो, राष्ट्रवेत्ता, जो मानो वशिष्ठ जी हैं, वह राष्ट्र के पुरोहित है, और यदि आप दोनों, पति और पतं ब्रह्मा मानो पत्नी, पति दोनों अपने सङ्कल्प को समाप्त

कर दो, अपने अपने सङ्कल्प को, तो प्रभु! मैं भी अपने सङ्कल्प को नष्ट कर सकती हूँ।

मेरे पुत्रों! देखो, माता अरूणधति मौन हो गई, और वशिष्ठ जी मौन हो गएं।, मेरे पुत्रों! देखो, मौन हो करके, उनके द्वारा, कोई उत्तर नही बना, उत्तर न बनने के पश्चात, मुनिवरों! देखो, अपने अपने कक्ष को गमन किया। उन्होंने कहा पुत्री! तुम्हारा जीवन देखो, बहुत आयु वाला हो, वृत्ति वाला हो, महान हो, और महान आत्मा को तुम जन्म देने वाली बनो। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने उच्चारण करके, राजा के श्रोत्रों में उच्चारण करके, उन्होंने कहा राजन! यह तपस्वी हैं, यह तुम्हारे हमारे से ऊर्ध्वा में गमन करती है। मेरे पुत्रों! देखो, राजा भी मौन हो गया। तो मुनिवरों! देखो, इस प्रकार ब्रह्मणां ब्रहे, तो मेरे पुत्रों! देखो, माता कौशल्या के जन्म से ले करके, बेटा! राम जैसे महापुरूषों का जन्म हुआ, जो राष्ट्र को नही चाहते थे, राष्ट्र एक खिलवाड़ था, उनके लिए, बेटा! उनके जीवन की चर्चाएं, तो बहुत से तत्त्व उनके जीवन से प्राप्त होंगी, आज तो देखो, इसके विचारों में, अपने में मग्न और अपने विचार देने के लिए हम आए हैं। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण कर सकेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् ब्रह्मणां देवा रथं रुद्रा वाचन्नमाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे। मानो इस संसार की बहुत सूक्ष्म तथ्यों में, इस विशाल ब्रह्माण्ड की विवेचना कर रहे थे। मानो इनके उद्गार तो सुशोभनीय हैं, और इनके विचारों के, मुझे कोई विचार देना नही हैं। मेरा तो एक ही मन्तव्य रहा है, मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को, समय समय पर कुछ प्रेरणा प्राप्त होती रहती है। पूज्यपाद गुरुदेव के, मेरे समीप नियुक्त कर देते हैं। आज की हमारी यह जो आकाशवाणी, हमारी जो वचनामृत है, वह मृत मण्डल में, उनका प्रसारण हो रहा है, मेरा तो अन्तरात्मा तो बड़ा ही प्रसन्न रहता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने नामकरणों और

गर्भाशय की भी चर्चा की, और आज का वाक्, मैंने वह वाक्, मैंने प्रेरणा के आधार पर, कुछ वाक भी, मेरी प्रबल इच्छा रहती है, क्या, उन वाक्यों में एक महानता की प्रतिभा होनी चाहिए। विचार केवल यह कि आज एक नामोकरण संस्कार को दृष्टिपात करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, प्रभु! यह जो प्रतिक्रियाएं हैं, ये परम्परागतों से, सृष्टि के प्रारम्भ से, ऋषि मुनियों का, एक वेद के मन्त्र के आधार पर, वैदिकता को ले करके, इनको, इन्होंने निर्माणित किया। ऋषि मुनियों ने सबसे प्रथम मानो नामोकरण की प्रथा, यह सृष्टि के प्रारम्भ से ही है। जब मानव का जन्म हुआ मानो, अति मानव मानो यह जब उनका जन्म हुआ, तो उसके प्रारम्भ से ही मानो इसकी आभा मानी गई है। यह ऋषि मुनियों के मस्तिष्कों में मानो वैदिक आभा में और मानो देखो, मन्त्रार्थ में जो निहित थी, जिसको ऋषि मुनियों ने देखो, साकार रूप बनाने का, तपस्या के द्वारा प्रयत्न किया। उन्होंने उसका साकार रूप बनाया, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो बहुत से ऐसे क्रियाकलाप कराए हैं।

अज्ञानता से ह्रास

आज मैं इस सम्बन्ध में तो कोई विवेचना नही, विचार केवल यह, कि इसका ह्रास होता गया है। मानो महाभारत काल के पश्चात, महाभारत काल के पश्चात उनका ह्रास होना प्रारम्भ हुआ, वास्तव में तो महाभारत से पहले ही कुछ काल पूर्व ही इसका ह्रास होने लगा था। क्योंकि अज्ञान आने लगा, अज्ञान जब महाभारत काल का जब यह संग्राम हुआ था, उस काल में बुद्धिजीवी प्राणी, सब ह्रासता को प्राप्त हो गएं। उसके पश्चात यहाँ वाममार्ग का चलन आया, वाममार्ग में यह जो प्रथा थी, नामोकरण की, यह नाम ही नाम उच्चारण करने लगे, परन्तु प्रथा समाप्त होने लगी यह प्रथा मानो मृत्यु के रूप जैसे मृतक प्राणी श्वांस लेता लेता रहता है, ऐसे यह संस्कार आज भी मानो देखो, मृतक प्राणी के तुल्य यह श्वांस ले रहा है। यह कहीं कहीं मानो दृष्टिपात आता है, वह अपवाद के रूप में इसका चलन नही है, चलन क्यों नही रहा? क्योंकि सबसे प्रथम मेरी पुत्रियाँ, जब पुत्र पुत्रियों को जन्म देती

थी, तो यह नामोकरण उच्चारण करने लगती थी, ये क्रियाओं से करती रहती, क्योंकि अध्ययन की परम्परा बड़ी विचित्र रही है, बड़ी विशुद्ध रूप में रही है।

बाल्मीकि आश्रम में माता सीता

देखो, मेरे पूज्यपाद अभी अभी देखो, उच्चारण कर रहे थे, राम के यहाँ भी देखो, जब सीता के यहाँ गर्भस्थल में पुत्र की स्थापना हो गई, जो त्रैत माह का देखो, गर्भाशय हुआ, तो सीता को बाल्मीकि आश्रम में प्रवेश किया ... संस्कार माता के दिए हुए संस्कार ही, मानो देखो, संसार से जाने तक वह क्रियाकलाप, उसके मस्तिष्क में चलते रहते हैं, वह क्रियाकलाप के रूप में बने रहते हैं। तो मैं अपने पूज्यपाद गरुदेव को यह उच्चारण कर रहा हूँ, कि यह वाक मुझे पूज्यपाद गुरुदेव के आगे उच्चारण करना, कोई शोभनीय नही है, क्योंकि यह तो जानते हैं, मैं निर्णय दे रहा हूँ, महाभारत काल के पश्चात, किनता ह्रास हुआ, और महाभारत काल के पश्चात इस वैदिकता से ही, अज्ञानता आने से देखो, विभाजन आ गया, विचारों में, धर्म का विभाजन हो गया, ना यहाँ कोई देखो, ईसा के मानने वाला रहा, उसमें कोई संस्कार नही हैं, ईसा के मानने वालों ने यह कहा, ईसा ने ये कह दिया कि ये देवियां, जिसमें आत्मा ही नही है। तो इन्हें शिक्षा देना व्यर्थ है। परन्तु देखो, यही महात्मा महापुरूषों ने देखो, कहा, परन्तु देखो, यह मोहम्मद के मानने वालों ने यह कहा, क्या यह जो पूजनीय स्थान है, उसमें देवियां नही जा सकती, यह ह्रास है, परन्तु देखो, उन्होंने अपने अधिपथ्य के लिए, मानो देखो, उनका ह्रास किया गया, उसका परिणाम यह हुआ, क्या सन्तानों का जो जन्म हुआ, वह सन्तान, उस समय माता जो जन्म देने वाली माता है, वही सन्तानं ब्रह्मे देखो, वही सन्तान माताओं को भक्षण करने वाली बनी। मानो देखो, इस प्रकार का यह जगत चल रहा है।

ह्रासता के कारण

प्रभु! मैं तो आज बड़े आश्चर्य ये यह वाक उच्चारण कर रहा हूँ, हे प्रभु! देखो, ब्रह्मणं देखो, मेरी प्यारी माताओं को, उस महानता में जाना चाहिए, अपने संस्कारों को

जागरूक बनाना चाहिए, आज मैं विशेष चर्चा तो देने नही आया, क्योंकि महाभारत काल के पश्चात, इन संस्कार प्रणालियों की, मानो इनकी जो ऋषि मुनियों ने तपस्या न दी, वह ह्रासता को प्राप्त हो गई, केवल पद की लोलुपता से, द्रव्य की आभा में, परन्तु देखो, वह विचारों की आभा समाप्त हो गई, द्रव्य के विचार रह गए, द्रव्य के विचारों में गम्भीरता में चला जाता है, तो वहाँ धर्म और मानवीय दर्शन का ह्रास हो जाता है, और कर्तव्यवाद नष्ट हो जाता है। तो इसीलिए देखो, यह वाममार्ग का युग है, मैं उन्हें दम्पतियों को सदैव अपने हृदय से, सदैव यह कामना करता रहता हूँ, क्योंकि आयु दीर्घ हो, और महानता को प्राप्त हो, ऐसा मेरा विचार है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरूदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने भव्य विचार प्रगट किए, इनके विचारों में प्रायः ऐसा है, महाभारत काल के पश्चात ऐसा हुआ, यह तो बड़ा अनर्थ हुआ है, अनधिकार प्राप्त हुआ है। मानो इसमें बड़ा एक कृति और धर्म और मानवीयता का ह्रास हुआ। इससे तो समाज विकृत हो जाता है। राजा रावण के क्रियाकलापों से, राजा रावण से भी जो पूर्व काल हुआ था, उन क्रियाकलापों में प्रायः ऐसा हुआ था। जो मेरे पुत्र ने अभी अभी उच्चारण किया है, प्रायः ऐसा हुआ, तो वास्तव मेरी पुत्रियों का बड़ा ह्रास हुआ है, और प्रणालियां भ्रष्ट हो गई, मानो देखो, उसी से वर्ण शङ्कर आ गया, तो इन विचारों से, मेरी पुत्रियों का दमन होना, इनके विचारो में सात्विकता का दमन नही करना चाहिए, जब इनके धर्म स्थानों पर, मानो देखो, यहाँ जब पूजा करने का भी अधिकार नही हैं, तो इससे भ्रष्ट काल तो आ नही सकता, यह तो सम्प्रदाय जैसा इन्होंने उच्चारण किया है, कोई वाक नही समय आता रहेगा, समय समय पर सब क्रियाएं प्रबल होती रहेंगी, आज मेरे प्यारे महानन्द जी के बड़े विचार, मुझे दुःखद विचार प्रतीत से हैं, समय मिलेगा, तो इसके, महानन्द जी की इसके ऊपर पुनः टिप्पणी कराई जा सकेगी, आज का विचार अब यह समाप्त होने जा रहा है। आज के विचारों का

अभिप्राय यह कि हमारे यहाँ संस्कारों की, विचारों की प्रणाली, सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानवीय मस्तिष्कों में, मेरी पुत्रियों के मस्तिष्कों में समाहित रहती है। तो इसीलिए आज का यह विचार समाप्त, समय मिलेगा, शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगे ओ३म् देवाः आभ्यां रथं माहं आ पा रेवं भद्राः वायु रथाः। अच्छा भगवन्! आज्ञा।

5. याग के उद्गाता, अध्वर्यु-890703

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। जो परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप मानो याग उसका आयतन है, उसका गृह है, उसका सदन है और वह उसी में वास कर रहा है। इसलिए उस परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है। सँसार के एक-एक कण-कण में व्याप्त है और ये सँसाररूपी जो एक प्रकार की यज्ञशाला है। वेद का नेतृत्व करने वाले हैं और ये मानो उसी को संचालन करते हुए अपने में उसे धारण कर रहे हैं। तो हमारा वेद मन्त्र कहता है, यजम् भू ब्रह्हे कृत्त प्रव्रवाहाः। कि वे जो परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है मानो वह सर्वत्र विद्यमान रहते हैं। आओ, उस परमपिता परमात्मा जो यज्ञोमयी स्वरूप है, जो पुरोहित है और पराविद्या के प्रसारण करने वाले हैं मानो वो उसी में रत्त रहने वाला है। जब ये सँसार रुपी यज्ञशाला का मेरे प्रभु ने निर्माण किया तो वे परमपिता परमात्मा स्वयं ब्रह्मा बने, आत्मा यजमान बन गया और ये पञ्चमहाभूत मानो देखो, इनमें कोई होता, उद्गाता, अध्वर्यु के रूप में मानो होता के रूप में बेटा! दृष्टिपात आने लगा। तो मुनिवरों! ये सँसार रुपी यज्ञशाला का निर्माण हो गया। कैसी भव्य यह यज्ञशाला है, आत्मा कैसे यजमान बना हुआ है और वह परमपिता परमात्मा जो ब्रह्मा बन करके उद्गीत गा रहा है। वह उसी के नेतृत्व में बेटा! ये ब्रह्माण्ड गति कर रहा है और वह गतिवान हो रहा है। तो इसलिए हम इस परमपिता परमात्मा की महती और अनन्तता के ऊपर हमें विचार विनिमय करना चाहिए। मेरे प्यारे! वे परमपिता परमात्मा वह पुरोहित है और वे पराविद्या को प्रदान करने वाले हैं। पराविद्या कौन-सी है जिसके ऊपर हमें विचार विनिमय

करना है। तो मुनिवरों! वह पराविद्या अपने में महान कहलाती है।

मानव प्रेरणा का स्रोत

आओ मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ विचार केवल ये कि हम यजम् ब्रह्मा! हम याग के सम्बन्ध में अपने उद्गीत गाएँ क्योंकि कहीं से हमें ये प्रेरणा प्राप्त हो रही है। क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से प्रेरणा का स्रोत बना हुआ है। प्रेरणा पाता रहता अपना विकास करता रहता है। प्रेरणा के आधार पर उसका क्रियाकलाप प्रारम्भ हो जाता है। तो मानो प्रेरित हो करके मुनिवरों! देखो, यह भव्यता को भव्यता में प्रवेश कर जाता है। तो इसी प्रकार आज हमें भी कहीं से ये प्रेरणा प्राप्त हो रही है कि याग के सम्बन्ध ये कुछ विचार दिया जाए। मानो याग किसे कहते हैं? बेटा! यागाम् ब्रह्माः मुझे वो काल स्मरण आता रहता है मेरे पुत्रों! देखो, गाड़ीवान रेवक मुनि महाराज अपने आसन पर विद्यमान थे परन्तु देखो, अपने में कुछ यागों की चर्चाएँ हो रही थीं।

पण अकाल

मेरे प्यारे! देखो, एक समय ऐसा आया कि अकाल पड़ गया और पण अकाल हो गया जहाँ अन्न इत्यादि न रहा। तो मुनिवरों! देखो, महात्मा अर्द्धभाग अपने आसन पर विद्यमान थे। जब अन्न नहीं रहा तो अन्न के न रहने से बेटा! प्राणों की क्षति होने लगती है। जब प्राणों की क्षति होने लगी तो महात्मा अर्द्धभाग कहीं से भ्रमण करते हुए अपने गृह में प्रवेश हुए और गृह में उनकी पत्नी सवृतिका बेटा! अपने में व्याकुल हो रही थी। उन्होंने कहा देवी क्यों? महात्मा अर्द्धभाग ने जब ऐसा कहा तो उनकी देवी ने कहा हे प्रभु! पण अकाल हो गया है। अन्न नहीं प्राप्त हो रहा है। मेरा ये प्राण सखा जा रहा है मानो देखो, स्मरण शक्ति जा रही है। उन्होंने कहा देवी मैं कहीं से अन्न लाता हूँ।

शूद्र की विवेचेचना

मेरे प्यारे! महात्मा अर्द्धभाग भ्रमण करते हुए वे एक स्थली पर पहुँचे तो एक

हाथीवान मानो उड़द पान कर रहा था। जब वह उड़दों का पान कर रहा था तो उन्होंने कहा भिक्षामही देही। जब महात्मा अर्द्धभाग ने भिक्षामही देही कहा उन्होंने बेटा! उसने अपने कृति में से मानो उड़दों को, माँ को उन्होंने प्रदान किया और ये कहा भगवन्! लीजिए। उन्होंने अपने में धारण कर लिए और वो मेरे प्यारे! वहाँ से भ्रमणम् ऋताम्। महात्मा अर्द्धभाग से हाथीवान ने कहा प्रभु! जल भी प्राप्त करोंगे? तो उन्होंने कहा कि तुम शूद्र हो। जब ये शूद्र का वाक उन्होंने उच्चारण किया तो मुनिवारों! देखो, शूद्र कहते ही हाथीवान बोले कि प्रभु! मेरे जो उर्द हैं, उन उर्द में तो मैं शूद्र नहीं हूँ परन्तु मैं जल में कैसे शूद्र हो जाऊँगा? तो महात्मा अर्द्धभाग ने उसका उत्तर दिया कि जो पर्याप्त वस्तु है जिसे मैं स्वतः मैं धारण कर सकता हूँ, ले सकता हूँ उसका अभाव नहीं है मानो देखो, उसमें तुम जो प्रदान मुझे अपने आश्रित करना चाहते हो तो तुम शूद्र हो। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अर्द्धभाग के उस वाक को पान करके हाथीवान बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने कहा हे प्रभु! मङ्गलम् ब्रह्मे उन्होंने कहा इस अन्न का अभाव है हम जब अकाल देखो, अन्न अकाल ये जो पण अकाल आया है इसमें अन्न नहीं रहा है ये अन्न प्राणों की रक्षा करने वाला है। ये मन को ऊर्ध्वा गति बनाने वाला है और जो मानो देखो, तुम्हारे जो उड़द हैं वह ऊप्रहाः उनका अभाव है, अन्न नहीं है।

मेरे प्यारे! देखो, वहाँ से महात्मा अर्द्धभाग ने गमन किया। हाथीवान को त्याग करके बेटा! अपने गृह में प्रवेश हुआ और अपनी पत्नी से कहा देवी ये माँ पान करो। मेरे प्यारे! देखो, वह उड़दों को पान करने लगीं प्राणों की रक्षा हो गयी।

महात्मा अर्द्धभाग का अश्वपति के याग में स्वागत कहीं से बेटा! देखो, महाराज को, महात्मा अर्द्धभाग को महाराजा अश्वपति के यहाँ से निमन्त्रित किया गया और वे निमन्त्रण आया याग के लिए। उन्होंने कहा देवी अब तुम्हारे प्राणों की रक्षा हो जाएगी। मानो वे महामना राजा अश्वपति के यहाँ मेरा पदार्पण हो रहा है मैं याग में जाऊँगा। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा अर्द्धभाग ने अपनी देवी से आश्वासन ले करके

वहाँ से गमन किया और भ्रमण करते हुए मुनिवरो! देखो, वे महाराजा अश्वपति के राष्ट्र में पहुँचे और अश्वपति ने उनका बड़ा स्वागत किया, आसन दिया और आसन पर वे विराजमान हो गए।

मेरे प्यारे! देखो, यज्ञशाला का निर्माण हो गया था उन्होंने उद्गाता के आसन पर अपने आसन को ग्रहण किया। मेरे पुत्रों! देखो, जब आसन पर विद्यमान हो गए। होताजन विद्यमान हैं ब्रह्मा इत्यादि उद्गाता, अध्वर्यु विद्यमान हैं।

उद्गाता के स्वरूप

मेरे पुत्रो! देखो, उस समय महात्मा अर्द्धभाग ने उद्गाता के रूप में पदार्पण अपने आसन को उन्होंने ग्रहण किया। उन्होंने ब्रह्मा व्रते देवाः यजमान ने कहा या राजा ने कहा हे भगवन्, हे उद्गाता! तुमने उद्गाता के आसन को लिया उद्गाता किसे कहते हैं? उन्होंने कहा प्रभु!! जो उद्गीत गाने वाला है और वह उद्गीत किसका गाता है जो वेदमन्त्रों को सुरों सहित गाने वाला है वह उद्गाता कहलाता है। मेरे पुत्रों! राजा ने जब ये वाक श्रवण किया तो पुनः प्रश्न किया क्या हे उद्गाता तुम उद्गाता के आसन पर विद्यमान हो और बिना मानो देखो, बिना अनुमति लिए तुमने इस आसन को ग्रहण किया है ये उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा ऐसा उद्गाता मानो सूर्य है जो बिना अनुमति के उदय हो जाता है और प्रकाश देता है और उद्गीत गाने लगता है। मानो देखो, उद्गाता के रूप में वह उद्गायत्र रूपेण कहलाता है। मेरे प्यारे! राजा ने कहा हे अमृताम्, हे उद्गाता! ये उद्गाता कौन है? उन्होंने कहा ये उद्गाता मानो देखो, शरीर में उद्गाता के रूप में ये आत्मा है इसी के कारण ये उद्गीत गाने वाला है। दूसरे रूपों में ये प्राण है जो प्राण सखा मानो देखो, गान गाने वाला है, ये दोनों ही उद्गीत गाते हैं। आत्मा का प्राण का जब तक समन्वय नहीं होता तब तक मुनिवरों! देखो, कोई वाक उच्चारण नहीं किया जाता। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने कहा, महात्मा अर्द्धभाग ने कहा हे राजन्! इसलिए उद्ग्गीत गाने वाला आत्मा और प्राण है। मेरे पुत्रों! देखो, उन्होंने कहा हे उद्गाता! तुम अपने आसन पर विद्यमान हो ये उद्गाता

कौन है जो आसन पर विद्यमान है? उन्होंने कहा ये उद्गाता अपनी यज्ञशाला में विद्यमान है मानो उस उद्गाता का समन्वय चन्द्रमा से रहता है वो चन्द्रमा अमृत को बहाता रहता है। वह चन्द्रमा मानो देखो, वह अमृत को प्रदान करता है तो क्योंकि वह अमृता कहलाता है और यह यज्ञशाला में विद्यमान है मानो देखो, वही उद्गाता स्थिर रहने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, उस समय पुनः राजा ने कहा प्रभु! आप मेरे सभी प्रश्नों का उत्तर देते जा रहे हैं मैं एक समय और प्रश्न करूँगा क्या प्रभु! ये उद्गाता कौन है जो यज्ञशाला का देखो, वेद मन्त्रों का निध्यासन करने वाला है? उन्होंने कहा प्रभु! ये उद्गाता जो मानो देखो, अग्नि के स्वरूप में विद्यमान रहता है। अग्नि ही मानो प्रत्येक स्वाहा को अपने में निगल जाती है, अपने में धारण कर लेती है। तो मानो देखो, वही उद्गाता के रूप में वायु के सम्पर्क से मुनिवरों! देखो, उद्गीत गाती रहती है।

मेरे पुत्रो! देखो, राजा तो मौन हो गए परन्तु देखो, राजलक्ष्मी उनकी देवी ने कहा हे प्रभु! आप उद्गाता बने हैं? उन्होंने कहा हाँ दिव्या। उन्होंने कहा ऐसा उद्गाता कौन है जो उद्गाता के रूप में विद्यमान रहता है? उन्होंने कहा ऐसा उद्गाता परमपिता परमात्मा है जो मानो देखो, सर्वत्र सँसार को क्रियाशील बनाने वाला है और वह क्रियाशील बना करके मानो देखो, अपने में उद्गीत गा रहा है वह सर्वत्र विद्यमान रहने वाला है। जितना भी सँसार रूपी यह याग हो रहा है उद्गीत गाया जा रहा है परन्तु उसका नेतृत्व करने वाला परमपिता परमात्मा है।

याग का समन्वय

मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने उनकी देवी ने कहा हे भगवन! मैं ये जानना चाहती हूँ इस याग का किससे समन्वय रहता है? उन्होंने कहा इस याग का उद्गाता से क्योंकि यदि उद्गाता नहीं होगा तो याग पूर्ण नहीं होगा क्योंकि वह उद्गीत गाता है, स्वाहा कहता है और वेद मन्त्रों का उद्गीत गाता है तो उससे याग सम्पन्न हो जाता है उन्होंने ब्रह्मणे कृतधाः देखो, उसका जो समन्वय है वे मानो देखो, सूर्य से होता है।

सूर्य ऊर्ज्वा देता है गान गाता रहता है वह अतिथि बन करके ही मानो देखो, याग को अध्वर्यु के उद्गाता के रूप में पूर्ण करा देता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि देवी ने कहा प्रभु! इसका मानव के जीवन से क्या समन्वय होता है? उन्होंने कहा जीवन में प्रकाश आता है, ऊर्ज्वा आती है और तपस्या में तल्लीन हो जाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि पत्नी भी मौन गई, उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! अध्वर्यु मेरे प्यारे! देखो, इतने में कहीं से उदेन ऋषि महाराज उदेन ऋषि महाराज का आगमन हो गया और उदेन ऋषि ने कहा हे भगवन! आप याग कर रहे हो उद्गाता के रूप में विद्यमान हो परन्तु ये जो तुम उद्गाता के रूप में विद्यमान हो तुम्हारे याग में अध्वर्यु किसे कहते हैं? उन्होंने कहा अध्वर्यु उसे कहते हैं जो हिंसा से रहित होता है। जो मानो देखो, अहिंसक कहलाता है वही अध्वर्यु कहलाता है। जैसे राजा का नाम अध्वर्यु कहलाता है यदि राजा के राष्ट्र में हिंसा होती है तो अध्वर्यु नहीं कहलाता इसलिए राजा का नाम अध्वर्यु कहलाता है। अध्वर्यु या नाम ब्रह्मणे क्रोतक प्रव्हा राजन्ना वह राजा ही अध्वर्यु कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया अपनी आभा में मानव को प्रदान किया तो अध्वर्यु उद्गान ब्रह्मणे लोकाम् ब्रह्मा कृतम्। उन्होंने कहा ये होताजन याग हो रहा है।

तो मेरे प्यारे! देखो, याग प्रारम्भ होने लगा उन्होंने अधूम कहते हुए याग का संचालन होने लगा। मेरे प्यारे! देखो, जब याग प्रारम्भ होने लगा बहुत समय तक याग चला परन्तु साँयकाल को याग का जब सम्पन्नता के आङ्गन में प्रवेश हो गए तो महाराजा अश्वपति ने बेटा! सर्वत्र मुद्राएँ और अन्न इत्यादि को उन्हें प्रदान किया।

महात्मा अर्द्धभाग का गृह में आगमन

उस अन्न को ले करके महात्मा अर्द्धभाग ने बेटा! अपने गृह को प्रस्थान किया और अपनी देवी से कहा हे देवी! लो ये मानो देखो, मुझे याग में से अन्न इत्यादि को प्राप्त कराया है राजा ने इसे तुम पान करो। वे बड़ी प्रसन्न हुईं उन्होंने कहा प्रभु! क्या यागाम् भूतप् प्रव्हाऽम् हे प्रभु! आपने बहुत ही प्रियतम क्योंकि मेरे प्राण पुनः

से जा रहे थे और वे गमन कर रहे थे आपने मुझे अन्नाद का पान कराया। मेरे प्यारे! देखो, वह अम्रताम् देवक ब्रह्मणाः वह अन्न मानो देखो, अमृत है जो प्राणों की रक्षा करने वाला हो।

याग अपने में अद्वितीय

मेरे पुत्रों! देखो, परमपिता परमात्मा जो सृष्टि का निर्माण करता है मानो जो अध्वर्यु के रूप में विद्यमान रहता है वह अधिपत्य व देवत्त्व कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वही तो अपने में धारण करता हुआ इस सँसार की प्रतिभा को अपने में धारयामि बना रहा है। तो विचार आता रहता है मेरे प्यारे! आज का विचार क्या? कि यागाम् ब्रह्मणे यागाम् रुद्र भागा अस्सुतम यागम् ब्रह्मणे कृतम् लोकाम् ये याग अपने में अद्वितीय कहलाता है। मानो देखो, जो वायुमण्डल को पवित्र बना देता है और मानव मनोहितता को पवित्र बना देता है। हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन होता रहता है, कहीं वृष्टि याग है, कहीं पुत्रोष्टि याग है, कहीं वाजपेयी याग है, कहीं अग्निष्टोम याग है, कहीं रुद्र याग है, कहीं ब्रह्म याग है, कहीं विष्णु याग है। मेरे पुत्रों! देखो, कहीं अजामेध याग है और कहीं मुनिवरों। देखो, यहाँ अश्वमेध याग का वर्णन किया जाता है। तो भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में आता रहता है। तो आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें देने नहीं आया हूँ केवल विचार ये क्या याग के सम्बन्ध में मुनिवरों! देखो, यागाम् हुतम् ब्रह्मणा लोकाम् वायु सम्भवा। तो आज का विचार अब मैं मुनिवरों! देखो, सम्पन्न करने जा रहा हूँ। अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगे।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यथाः ब्रह्मणा लोकम् वर्णचस्मा दिव्याम्। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे मानो गागर में सागर भरण कर रहे थे। इनकी मनोनैतिकता ये रहती है कि मैं याग के सम्बन्ध में जितना उद्गीत गा सकूँ उतना गाऊँ। परन्तु आधुनिक कर्णाम् ब्रहे कृतक मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ये अभी अभी महात्मा अर्द्धभाग

की गाथा के रूप में वर्णन करते हुए उन्होंने याग का प्रारम्भ किया और याग में अध्वर्यु उद्गाता और यजमान और ब्रह्मा इत्यादियों का वर्णन किया। इनके विचारों में सदैव एक महानता का दर्शन होता रहता है। परन्तु आज मैं विशेष चर्चा नहीं केवल अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मुझे कुछ उच्चारण करना है क्योंकि आज जो हमारी ये आकाशवाणी, हमारा ये जो विचार जा रहा है। जहाँ ये विचार जा रहा है मृत मण्डल में वहाँ एक याग सम्पन्न हुआ। वहाँ मानो देखो, यजुन्तहः एक याग को सम्पन्न किया गया। मेरा अन्तर्हृदय मानो सदैव यजमान के साथ रहता है।

वाम मार्ग

ये जो वर्तमान का काल चल रहा है भगवन्! ये एक ऐसा काल है जिसे हम वाम मार्ग कहते हैं। वाम मार्ग उसे कहते हैं जहाँ सुरा और सुन्दरी में मानो देखो, सुरा में विशेष मानव की रुचि बन गयी, द्रव्य में विशेष रुचि बन गई है। कर्मणाथ धर्माथ काममोत्वां भूतम् ब्रह्मे इससे मानव वंचित होता जा रहा है। तो मार्ग तो है परन्तु देखो, उल्टा मार्ग है और उल्टे मार्ग में गमन करने वाला ही वाम मार्ग कहलाता है। वाम मार्ग का अभिप्राय ये है क्या जहाँ मानव भक्ष्य और अभक्ष्य पदार्थों का पान करने लगता है। विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से वर्णन कराता रहता हूँ। मानो देखो, आधुनिक काल का जो राष्ट्रवाद है वह भी अन्धकार की प्रतिभा में मानो परिधि में गमन कर रहा है वह परिधि ही रूपों में अभ्योदय हो रहा है।

धर्म

जब मैं यह विचारता रहता हूँ कि नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ पनप रही हैं ये रूढ़ियाँ नष्ट होनी चाहिएँ परन्तु देखो, राष्ट्रवाद ऐसा राष्ट्रवाद है जो नाना रूढ़ियों को नाना धर्म कहता रहता है। मैं ये कहता रहता हूँ कि ये जो धर्म है एक वचन कहलाता है ये मानो देखो, बहुवचन नहीं होता। बहुवचन में रूढ़ियाँ आती हैं और एक वचन में धर्म आता है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे कई काल में वर्णन कराते

हुए कहा क्या ये जो धर्म है ये इन्द्रियों में समाहित रहता है। प्रत्येक इन्द्रियों में देखो, जो जिसका कर्म है जिस इन्द्री का वह उसका धर्म है और वे धर्म ही मानवीयत्व में सदैव निहित रहता है।

राजा

नाना प्रकार की रूढ़ियाँ मानो नहीं रहनी चाहिएँ। यदि राजा को अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है, महान बनाना है तो राजा के राष्ट्र में रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिएँ। फिर रूढ़ियों के रूप में मुनिवरों! देखो, मानवीयता अपने में गमन करने वाली है कृतियों में रत्त रहने वाली है। जब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से ये कहता रहता हूँ हे पूज्यपाद! ये मानो देखो, राष्ट्रवाद क्या है? मैं राष्ट्रवाद की चर्चा करने लगता हूँ तो राष्ट्रवाद एक स्वार्थपरता रह गई है, कर्तव्यवाद नहीं रहा है। क्योंकि मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी-अभी वर्णन कराया कि अध्वर्यु नाम राजा का है और वह कौन-सा अध्वर्यु है जो जिसके राष्ट्र में देखो, हिंसा न होती हो।

भगवान मनु का राष्ट्र

हमारे यहाँ भगवान मनु ने सबसे प्रथम देखो, जब राष्ट्र का निर्माण किया तो निर्माण करने के पश्चात एक समय भगवान मनु देखो, एक समय समुद्र तट पर स्नान करने के लिए पहुँचे। जब समुद्रों में स्नान किया स्नान करने के पश्चात देखो, उन्होंने मार्जन किया और मार्जन करके प्रभु का चिन्तन करते हुए उन्होंने अपने कमण्डलु को जल में परोक्षण किया तो उसमें एक मछली आ गई और वह मछली ने अपने वेदना में ही कहा राजा से क्या हे राजन्! मैं तुम्हारी शरण में आई हूँ, क्योंकि यहाँ प्रायः समुद्र में देखो, विशेष मछली छोटी मछली को अपने में आहार कर जाती है। वे मानो देखो, अपने में उदर परणित कर लेती हैं इसलिए मैं आपकी शरण में आई हूँ, मेरी रक्षा करो। तो कहते हैं कि भगवान मनु कमण्डलु में मछली को ले आए और उन्होंने कुछ समय तक वह कमण्डलु में पनपती रही। कुछ समय के पश्चात वही मछली मानो देखो, गढेले में रही और वह मछली मुनिवरों! देखो, बहुत प्रबल

हो गयी। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया क्या जब वह मछली प्रबल हो गयी, बलवती हो गयी, तो मछली ने ये कहा हे राजन्! अब मैं अपने समुद्र में गमन कर रही हूँ, और कुछ समय के पश्चात जल प्लावन आएगा और जल प्लावन में देखो, तुम एक नौका बनवा लेना और नौका में विद्यमान हो जाना और जब तुम्हारी नौका हिमालय से मिलान करेगी तो उस समय मेरे देखो, मेरे से इस मौका को जकड़ देना तुम्हारे प्राणों की रक्षा जो जाएगी। मेरे प्यारे! देखो, पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया था एक समय कि वह जल प्लावन जब जल प्लावन आया तो उस समय देखो, यह पृथ्वी जल मग्न हो गयी और वह नौका महाराजा मनु ने नौका का निर्माण किया था। वह नौका में विद्यमान थे और वह नौका गमन करने लगी। जब वह हिमालय से जा करके अपना मिलन किया तो वह मछली उन्हें प्राप्त हुई और मछली से उन्होंने अपनी नौका को जकड़ दिया और जकड़ देने के पश्चात वह अप्रताम् जल प्लावन शनैः शनैः समाप्त होने लगा और वह नौका भी गमन करने लगी। परन्तु देखो, नौका अपने में ब्रहेस्सतम और मछली अपने समुद्रों में गमन कर गई। तो विचार-विनिमय क्या कि हमारे यहाँ मछली से ले करके प्राणीत्व की जो रक्षा करता उसका नाम राजा है, वह अध्वर्यु है जो निर्माण देखो, राष्ट्र का निर्माण करने वाला है।

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने वर्णन कराया क्या भगवान मनु ने सबसे प्रथम राष्ट्र का निर्माण किया था और राष्ट्र का निर्माण इसलिए क्योंकि मानो प्राणी अपने कर्तव्य से जब विहीन हो जाता है तो राष्ट्र का निर्माण होता है। और वो राजा अपने राष्ट्र में मानो देखो, मनोनीतता लाता रहता है और वो मनोनीतता ही मानवीयता कहलाती है और उससे मानव के देखो, प्राणों की राजा रक्षा होती है।

राजा और राष्ट्र

जिस राजा के राष्ट्र में प्राण मानो देखो, प्राणी, प्राणी को भक्षण करता रहता है, सुरापान करता रहता है वह राष्ट्र मानो देखो, राष्ट्र अग्नि के मुख में चला जाता है।

जब राष्ट्र मानो राजा स्वयं हिंसक हो जाता है हिंसा में परणित हो जाता है तो राजा का राष्ट्र देखो, आज नहीं तो कल नष्ट होता चला जाएगा। तो विचार आता रहता है मैं ये कहता रहता हूँ, हे राजन्! तुझे अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है तो त्याग और तपस्या में परणित होना है। हे राजन्! यदि तुझे अपने राष्ट्र को महान बनाना है तो ये भिन्न भिन्न प्रकार की ईश्वर के नाम पर रूढ़ियाँ नहीं रहनी चाहिएँ, क्योंकि जितनी रूढ़ियाँ रहेगीं उतनी ही राष्ट्र में मानो देखो, राष्ट्र में अशान्ति रहेगी। एक प्राणी प्राणी को नष्ट करता रहेगा, विचारों में भिन्नता रहेगी। इसलिए देखो, विचारों में एकोकीकरण करने के लिए राजा को अध्वर्यु बन करके देखो, हिंसा से रहित हो करके और अपने राष्ट्र को ऊँचा बनाना है। और राजा के राष्ट्र में ये रूढ़ियाँ कैसे समाप्त होती हैं? रूढ़ियाँ जब समाप्त होती हैं जब प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों को राजा अपनी स्थली पर विद्यमान करता हुआ राजा ब्रह्मवेत्ता हो, वेद का ज्ञाता हो ज्ञान और विवेक उसमे समीप होना चाहिए और जब वह देखो, उन आचार्यों के मध्य में विद्यमान हो करके शास्त्रार्थ होना चाहिए और विचार-विनिमय करते हुए देखो, जो शास्त्रार्थ में देखो, जो विचार विज्ञान और मानवीयता और धर्म पे जो स्थिर हो जाएँ उसको अपनाना है और राजा को अपने राष्ट्र को उन्नत बनाना है। ऐसा मानो देखो, वेद का आशय कहता है, आचार्यजन कहते हैं।

तो विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को ये वर्णन कराता रहता हूँ, अपने विचार देता रहता हूँ क्या इस सँसार में देखो, यदि राष्ट्र को ऊँचा बनना है तो उसे ब्रह्मवेत्ता होना होगा अहिंसा से रहित मानो देखो, हिंसा रहित होना होगा। अहिंसा में अपने को परणित करना होगा क्योंकि हिंसा ही मानव की मृत्यु है और अहिंसा ही मानव का जीवन माना गया है।

इसलिए देखो, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे बहुत-सी वार्ताएँ प्रगट कराईं। मैं उनके वाक्यों की पुनरुक्ति करता रहता हूँ विचार देता रहता हूँ क्या हे राजन अम्रतम् ब्रह्मे मेरा जो अन्तर्हृदय है वो यजमान के साथ रहता है। क्योंकि ये वाममार्ग का काल

है यहाँ सुरा में और द्रव्य में मानव विशेषकर, देखो, अपने को ले जाता जा रहा है और ये अमृता न रहकर के ये केवल देखो, विष पान करता हुआ अपने जीवन को मृत्यु के आङ्गन में ले जा रहा है प्राणी। इसके मूल में राजा है। यदि राजा अपने जीवन को महान बनाना और राष्ट्र को उन्नत बनाना चाहता है तो हिंसा को नष्ट कर देना चाहिए। जितने अभक्ष्य पदार्थ हैं उन पदार्थों को पान नहीं करना चाहिए। राजा का ये कर्तव्य है। तो मैं ये कह रहा हूँ ये वाम मार्ग का काल है जो वर्तमान का काल चल रहा है ये वाम मार्ग है। वाम मार्ग उसे कहते हैं जो उलटे मार्ग पर गमन करता है।

यजमान को आशीर्वाद

हे यजमान! मेरा अन्तरात्मा तेरे साथ रहता है तू अपने द्रव्य का अपने गृह में सदुपयोग कर रहा है और दुरिता को अपने में शान्त कर रहा है मेरा अन्तरात्मा मानो तेरे साथ है। हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तू मानो देखो, अपने मनोहृदय में पवित्रता को लाने में सदैव तत्पर रहे ऐसा मेरा सदैव, मन्तव्य रहता है और मैं विशेष विचार देने नहीं आता हूँ, केवल मैं केवल अपने हृदय की वार्ता और मेरे हृदय में जो उद्गार हैं उन उद्गारों को उद्गीत गाने के लिए आता हूँ। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी! ने अपने बड़े विचित्र विचार राष्ट्र के सम्बन्ध में कि राष्ट्र कैसे उन्नत हो सकता है। इन्होंने बहुत प्रियता की वार्ता प्रकट की कैसे रूढ़ियाँ समाप्त हो सकती हैं। ये जो ईश्वर के नाम पर जो रूढ़ियाँ हैं कोई ईसा के मानने वाला है, कोई मौहम्मद के मानने वाला है और भी नाना प्रकार की जो रूढ़ियाँ हैं ईश्वर के नाम पर ये समाप्त होनी चाहिएँ और ये समाप्त जब होंगीं जब राजा स्वयं ब्रह्मज्ञानी बन करके और रूढ़िवादियों के आचार्यों के मध्य में विद्यमान हो करके वेद का शास्त्रार्थ हो उनके विचारों को श्रवण किया जाएँ और जो धर्म मानवता के ऊपर निर्धारित हो जाए उसको अपनाना

चाहिए। मेरे प्यारे महानन्द जी! के हृदय में कितनी दाह है, कितनी विडम्बना है। ये मैं प्रभु से कहता रहता हूँ कि हे प्रभु! ये विडम्बना शान्त होनी चाहिए और ये विडम्बना महानता में परणित हो जाए। समाज एक महानता का गीत गाने लगे और उन्होंने अपने हृदय को यजमान के साथ नियुक्त किया। तो आज का विचार-विनिमय क्या? कि हम परमपिता परमात्मा की महती अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय करते रहें और देखो, ये अपने हृदय से उद्गार जो राष्ट्रवाद है, भगवान मनु ने इसको निर्धारित किया इस राष्ट्रवाद को उन्नत बनाना यह हमारा कर्तव्य माना गया है और देखो, धर्म मर्यादा में परणित रहना चाहिए और प्रत्येक शब्द के ऊपर विचार-विनिमय महानता में गमन करना चाहिए। जैसा अभी हम उच्चारण कर रहे थे

कि परमपिता परमात्मा का ये जो ब्रह्माण्ड है ये एक प्रकार की यज्ञशाला है इसमें याग हो रहा है। इसमें प्रत्येक मानव याग कर रहा है। मेरी प्यारी माता याग कर रही है। ये सँसार रूपी याग देखो, यज्ञशाला अपने में गतिवान है ब्रह्मा यजमान है और देखो, ब्रह्मा ब्रह्मणे गुरुत्त्व उसमें बना हुआ है। आत्मा यजमान है। होतागण मानो ये पञ्चीकरण जो पञ्च महाभूत हैं और ये सर्वत्र अपनी-अपनी आभा में नृत्य हो रहा है।

कैसा मेरे प्यारे प्रभु का ये जगत है लोहाण ध्रुवांत प्रव्हे ये ध्रुवांश कहलाता है, मानो ये देखो, यज्ञ की नाभि कहलाता है। यज्ञ ही देखो, पृथ्वी की नाभि है जैसे माता की नाभि से बाल्य को अमृत प्रदान किया जाता है इसी प्रकार यज्ञशाला भी एक प्रकार की देखो, पृथ्वी को नाभि है और ये नाभि बन करके सुगन्धि देता रहता है। ये सुगन्धित करता है वो अमृत देता है प्रभु का बड़ा विशाल ये विज्ञानमयी भवन है जिसके ऊपर हम सदैव अपनी विचारधारा प्रगट करते रहते हैं।

आज का विचार-विनिमय क्या कि हमारा परमपिता परमात्मा की महती अनन्तता के ऊपर विचार-विनिमय होनेना चाहिए। ये है बेटा! आज का वाक अब समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चा कल प्रगट करूँगा। आज का वाक समाप्त, अब वेदों का

पठन पाठन होगा। ओ३म् ब्रह्म भा गश्चना आपा रथमं मान्यत्वाः। ओ३म् मनु गायनत्वाः आपा रथम् ब्रह्मा गायाऽम्।

6. महर्षि याज्ञवल्क्य और शतपथ ब्राह्मण-890814

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया। हमारे यहाँ, परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है। जिस पवित्र वेदवाणी में, उस महामना मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है। उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में, प्रायः वो मेरा देव ही दृष्टिपात आ रहा है क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। मानो याग उसका गृह है, उसका आयतन है और उसका सदन हैं क्योंकि वह यज्ञोमयी स्वरूप हैं। उस परमात्मा को हमारे यहाँ यज्ञोमयी स्वरूप माना गया है।

वेद में संसार की प्रतिभा

वास्तव में मानव जब किसी भी विचार विनिमय में प्रवेश करता है। तो चिन्तन करते, करते, जब वह अन्तिम सूत्र में प्रवेश करता है तो उसमें एक अनन्तता का उसे भास होता है और यह विचारता है कि ये संसार और मेरी जो विचार धारा है उसमें अन्त में एक अन्त अवृत्ति आ, उसमें अनन्तता मुझे दृष्टिपात आ रही है। उस अनन्तता के गर्भस्थल में, मानो उस परमपिता परमात्मा की प्रीति भी हमें प्रतीत होने लगती है।

तो आओ मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें विशेष विवेचना तो देने नहीं आया हूँ, विचार केवल हमारा यह है कि हमारे यहाँ वेदों की जो प्रतिभा अथवा उसका जो दर्शन होता रहा है। उस वेद के वाङ्गमय में संसार की प्रतिभा निहित रहती है। जब मानव अपने जीवन को महान और याज्ञिक बनाने के लिए तत्पर होता है तो मानो उसे भिन्न भिन्न प्रकार के, सहयोग की आवश्यकता होती है। जब मानव विज्ञान के वाङ्गमय में प्रवेश होता है और विज्ञान में जब काल्पनिक विचारों में संलग्न होता है

तो उसका जो वास्तविक दर्शन करता है वही दर्शन तो मानवीय दर्शन कहलाता है। तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेदमन्त्र क्या कह रहा है? कि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है मानो याग उसका गृह माना गया है। गृह का अभिप्राय यह है कि उसी में वह मानो संलग्न रहता है और वह उसी में ही समाहित रहता है। जैसे मानो अपने में अपनेपन का दर्शन करता हुआ, उसमें प्रायः वो समाहित हो जाता है। तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का हमारा, वेदमन्त्र आज की हमारी एक मौलिक धाराएँ, हमें मानवीय दर्शनों के ऊपर मानो देखो, दर्शाती रहती है। तो आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा वेदमन्त्र कुछ कह रहा था, कुछ प्रेरणा दे रहा था। जब हम उससे प्रेरित होते हैं और प्रेरणा को प्राप्त करते है तो मानो अपने में ऊर्ध्वगति करने लगते है तो हमारे जीवन में एक महानता अभ्योद प्रमाणं मानो आभा उसमें रत्त होने लगते हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज मैं तुम्हें कुछ यागों की चर्चाएँ, मानो देखो, कुछ वेद मन्त्रों में उसे परमपिता परमात्मा जो अग्निमयी स्वरूप माना गया है। मानो उसका वर्णन आ रहा था। आज मैं उसकी वर्णन शैली में तो जाना नहीं चाहता हूँ केवल यह कि हमारे यहाँ यागों का बड़ा महत्व माना गया है। परम्परागतों से ही, मानो याग के ऊपर ऋषि मुनियों ने बड़ा अनुसन्धान किया है। मानो संसार की प्रत्येक वस्तु का नामोकरण हमारे यहाँ याग के रूप में परणित किया गया है।

शतपथ ब्राह्मण

मेरे प्यारे! आओ, आज मैं देखो, एक आसन पर ले जाना चाहता हूँ। मेरे पुत्रो! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज, अपने आश्रम में, आसन पर विद्यमान रहते और नाना ऋषिवर, ब्रह्मचारी जन, उनके समीप आ करके मानो उन्होंने एक पोथी का निर्माण किया था। जिस पोथी का नाम शतपथ ब्राह्मण कहा जाता है। शतपथ ब्राह्मण नाम की पोथी का निर्माण मानो उसकी प्रतिभा का दर्शन, वो प्रायः अपने में ही करते रहते थे।

मेरे पुत्रो! देखो, एक समय उनके यहाँ कुछ ऋषि मुनियों का आगमन हुआ। वह अपने विद्यालय के प्रांगण में, शान्त मुद्रा में विद्यमान थे। मेरे प्यारे! कहीं से भ्रमण करते हुए महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि के यहाँ बेटा! माता अरूणधति और महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज भ्रमण करते हुए मेरे पुत्रों! देखो, वे याज्ञवल्क्य मुनि महाराज के विद्यालय में पधारे। याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! ब्रह्मवेत्ता का मानो अपने में दर्शन करते हुए मुनिवरों! देखो, उनको आसन दिया। वे आसन पर विद्यमान हो गए। महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि बोले कहो, ब्रह्मणं ब्रहे व्रत्तम हे ब्रह्मवेत्ताओ! तुम्हारा आगमन कैसे हुआ? मुनिवरों! महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले कि आज ऐसी इच्छा बन पाई कि चलो, महापुरुषों के दर्शन कर आए और अपने में मानो कुछ शङ्काओं का निवारण भी करें।

मेरे प्यारे! देखो, ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज बोले कि हे भगवन्! मैं नहीं जान पाता कि आप जैसे ब्रह्मवेत्ता, ब्रह्मनिष्ठों को भी शङ्कायें उपलब्ध हो जाती है। महर्षि वशिष्ठ मुनि बोले कि शङ्कायें क्या, संसार में जितना भी प्राणी जन्म लेता है अथवा जितना भी गम्भीर मुद्रा में मुद्रित हो जाता है, उसमें प्रवेश कर जाता है तो मानो देखो, वह जितना भी अध्ययन करता है इस संसार का, क्योंकि वह अभ्योव्रतः उसके गर्भ में जब वो प्रवेश करता है तो चाहे उसकी सहस्रों वर्ष की आयु हो जाए, परन्तु वह भगवान के राष्ट्र में एक मानो देखो, अध्ययन करने वाला विद्यार्थी कहलाता है। किसी भी वस्तु का अध्ययन करता है तो मानो वह विद्यार्थी है। वहाँ शङ्काएँ नहीं हुआ करती क्योंकि जानकारी करना, यह तो मानव का एक कर्तव्य माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, याज्ञवल्क्य ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, और माता अरूणधति और वशिष्ठ दोनों का उन्होंने स्वागत किया और कुछ कंदमूल इत्यादियों का पान कराया। पान कराते मानो देखो, आसन पर विद्यमान हो गए।

कन्या याग

माता अरूणधति बोली कि हे ऋषिवर! मैं आप से कुछ प्रसन्न करना चाहती हूँ?

उन्होंने कहा माता! प्रश्न नहीं, आप मातेश्वरी अरूणधती! मुझे आज्ञा दीजिए। मानो देखो, जो सेवा हो सकेगी, जानता हूँगा तो तुम्हें अवश्य मानो तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर दूँगा। माता अरूणधति ने कहा हे याज्ञवल्क्य! हम ये जानना चाहते हैं कि हम ब्रह्मे मानो देखो, हम वेद का अध्ययन कर रहे थे और वेद का अध्ययन करते, उसमें एक वेदमन्त्र आया था। कन्यां ब्रह्माः कन्यां रूद्राः कन्यां ब्रव्हे व्रतं देवाः पुत्रों! भवः यागां ब्रह्म वृत्ति देवाः मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधति ने यह वेद का मन्त्र, आख्यायिका उच्चारण की और यह कहा कि वेदमन्त्र भगवन्! यह कैसा है कि देखो, अन्नां ब्रहे कन्यां प्रव्हा वेद का वाक कहता है कि ये जो कन्या है। यह देव लोक में रहती हैं। कन्या जब देव लोक में रहती है तो मानो वो पितर लोक और मानो कुलेभ्यो ब्रह्मे मानो देखो, पति लोक को प्राप्त हो जाती है। तो हम ये जानना चाहते हैं भगवन्! हे याज्ञवल्क्य! क्योंकि आप तो दर्शनों के मर्म को जानते हैं और आख्यिकाओं को जानते हैं, वेदमन्त्र में आख्याकियाएँ आती रहती है। परन्तु हम ये जानना चाहते हैं कि वो कन्या का याग कौन सा है? जहाँ भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन है। जैसे वाजपेयी याग है, अग्निष्टोम याग है, अश्वमेध याग है, नरमेघ याग है, गौमेघ याग है, अजामेघ याग है मानो देखो, एक कन्या और देवी याग भी कहलाता है। तो मैं कन्या याग के सम्बन्ध में जानना चाहती हूँ जहाँ वेद में भिन्न भिन्न प्रकार के मन्त्रों की झड़ियाँ लगी रहती है। वहाँ मानो देखो, कन्या याग का वर्णन आता है, कन्या याग को जानने के लिए हम आए हैं।

देव लोक

मेरे प्यारे! याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि हे माता! मैं तुम्हारे प्रश्नों के उत्तर, जितना जानता हूँ मैं अवश्य दूँगा। माता अरूणधति बड़ी प्रसन्न हुई उन्होंने कहा बोलो ऋषिवर! मानो ये क्या है? तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपना वाक उच्चारण करते हुए कहा कि मेरे विचार में यह आता है कि कन्या जब संसार में आती है तो मानो इस पृथ्वी तल पर आती है। उस समय इस कन्या का मानो यह संसार

देव लोक बना रहता है। जब बाल्य काल होता है, तो कौन रक्षा करता है? मानो देवता जन उसकी रक्षा करते रहते हैं। देवताजन उसके अङ्ग प्रत्यंग में विद्यमान है। वह प्रेरणा को प्राप्त करके मानो प्रेरित हो करके मानो उसकी रक्षा करते रहते हैं। वह कन्यां ब्रह्मा देवत्याम् बाल्यकाल मानो देखो, संसार में मानव का देवलोक कहलाता है। उसमें देवता जनों से मानो बाल्य प्रेरणा प्राप्त करता रहता है। हे कन्या! जब तू इस संसार में, मानो आती है तो तेरा देवलोक इतना भव्य बन जाता है।

पितर लोक

मेरे प्यारे! देखो, इसी आभा को लेकर के ऋषि ने कहा द्वितीय लोक हमारे यहाँ पितर कहलाता है। मैंने पितर की चर्चाएँ बेटा! इससे पूर्व काल में वर्णन भी की कि पितर जन कौन होते हैं? मेरे प्यारे! पितर वह होते हैं जो मानव को देखो, ऊर्ध्व मार्ग की शिक्षा देते हैं। जो मानव को सदमार्ग पर मानो देखो, प्रेरित करते रहते है। वही सद्मार्ग मानव का देखो, पितर लोक कहलाता है। हमारे यहाँ पितरों की विवेचना करते हुए आचार्यों ने कहा है कि सूर्य हमारा देवता, सूर्य हमारा पितर कहलाता है और वह सूर्य कैसा पितर है मुनिवरों! देखो, द्यौ से वह ऊर्ज्वा लेता है और मुनिवरों! देखो, प्रकाश और ऊर्ज्वा देता रहता है। उसका द्यौ से समन्वय रहता है और समन्वय रह करके मुनिवरों! देखो, वह प्रकाश देता रहता है। वह जो प्रकाश देने वाला, वही तो पितर कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, वह उस कन्या का पितर लोक कहलाता है। पितर देखो, वह जो संरक्षण कराता है अथवा आचार्य कुल में प्रवेश करता हुआ ब्रह्मचारी अथवा ब्रह्मचारिणी मेरे प्यारे! अपने पितर लोक को ऊँचा बनाते रहते है और पितर मानो देखो, अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। पितरजन मानो देखो, उनकी रक्षा, उनकी दीक्षा नाना प्रकार के देखो, आभा में परिणित कर देते हैं।

पति लोक

मेरे प्यारे! देखो, जब उसका पितर लोक भी समाप्त होता है तो वह मानो देखो, अप्रतं ब्रह्माः अपनी युवावस्था को प्राप्त हो करके, वही कन्या मानो पितर लोक से मुनिवरों! देखो, कुलेभ्यां ब्रह्मा वाचाः वह पति लोक को प्राप्त हो करके बेटा! वहाँ उसे याग करने का अधिकार प्राप्त होता है। याग के अधिकार का अभिप्राय क्या? याग किसे कहते है? हमारे यहाँ याग के सम्बन्ध में माता अरूणधति ने कहा कि इस याग को तो हम भगवन्! जानते हैं जब पति लोक को प्राप्त होते हैं। परन्तु याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा हे माता, हे अरुणधती! एक समय मैं भ्रमण करता हुआ मानो देखो, मगध राष्ट्र में पहुँचा था और मगध राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, महर्षि वरतेन्तु मुनि अपने में मानो देखो, अध्ययन कर रहे थे। वरतेन्तु मुनि महाराज की पत्नी विद्यमान थी परन्तु वह पुत्रों! अवृतं ब्रह्माः वह याग के अधिकारी बनने जा रहे थे। मानो देखो, जब याग करते करते उनका तपस्यामयी जीवन बना तो उन्होंने भगवन्! कहा कि हम याग नहीं करेंगे। क्योंकि याग का और तपस्या का जो समन्वय है उसके प्रकरण की प्रतिभा मानो भिन्न भिन्न रूप में परणित हो जाती है। तो मेरे पुत्रो! देखो, जब ऋषि ने माता अरूणधति से ये कहा कि हे माता! हम मानो जब भ्रमण करते हुए मगध राष्ट्र से आए तो हमने यह प्रसन्न किया कि भगवन्! इसमें क्या कारण है जो मानो देखो, वह पति लोक को प्राप्त हो करके भी उन्होंने ये कहा कि मुझे याग करने का अधिकार नहीं रहा है। तो उन्होंने बेटा! इस प्रकार देखो, माता अरूणधति से उत्तर देते हुए, बोले कि इसके मूल में यह है कि मानो देखो, जब वे सम्भवः ब्रव्हे ब्रत्तम् जब तपस्या का जीवन बन जाता है। परमात्मा से संलग्न धाराओं में परणित हो जाता है। तो याग का विच्छेद मानो देखो, याग से मानो भौतिक याग से मानव का विच्छेद हो जाता है।

भौतिक और आध्यात्मिक याग

हमारे यहाँ दो प्रकार के यागों की प्रतिभा मानी जाती है। मानो देखो, हमारे यहाँ बेटा! भौतिक याग और आध्यात्मिक याग दोनों का वर्णन आता है। तो हमारे ऋषि

मुनियों ने मानो देखो, सन्तान को जन्म देना भी, याग के रूप में परणित किया है। यह भी एक याग है क्योंकि हमारे यहाँ वैदिक साहित्य में जब हम विचारने लगते हैं तो मानो देखो, प्रत्येक दिशा में, मानव याज्ञिक बना हुआ है। वही तो याग बेटा! देखो, पुत्रों! भवं ब्रह्मा मुनिवरों! देखो, वह पति के कुल में जाकर के मानो देखो, वही तो अपने याग करते रहते हैं। याग का अभिप्राय यह है यागां ब्रह्मलोकां यागाऽहं रूद्राः मेरे प्यारे! देखो, ये याग रुद्र है। ये याग ही मुनिवरों! देखो, विष्णु है। ये याग ही ब्रह्म कहा जाता है। जब हम ब्रह्म की आभा में रत्त होने लगते हैं तो मानो ये ब्रह्म ही ब्रह्म हमें दृष्टिपात आने लगता है।

हिरणाद्व याग

मेरे प्यारे! देखो, माता अरूणधति अपने में मग्न हो गई और मग्न होकर के यह कहा कि धन्य है प्रभु! आपने हमारे वाक्यों का निवारण किया है। आपको बड़ा धन्यं व्रहेः आप वास्तव में ऋषि है। मेरे प्यारे! देखो! माता अरूणधति और वशिष्ठ मुनि महाराज जब गमन करने लगे तो वशिष्ठ मुनि ने एक वाक कहा ऋषि से कि भगवन्! आपने जो यह शतपथ ब्राह्मण पोथी का निर्माण किया है इसमें यागों का बड़ा वर्णन है परन्तु हम यह जानना ओर चाहते हैं कि हमारे यहाँ एक हिरणाक्ति वाक आता है। कि जो हिरणाद्व याग हो रहा है मानो देखो, उसको द्विन्धं ब्रूह्मे व्रत्तम् जब मानो अपने में कृत्तियाँ हो जाती हैं तो इसको जानना चाहते है।

मेरे प्यारे! महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि कहते हैं कि हे ब्रह्मवेत्ता! तुम्हे यह प्रतीत है कि संसार में जितने भी याग है, उन यागों में एक मानो हिरणाद्व याग भी होता है। हिरणाद्व याग का अभिप्राय यह है कि जब मानो देखो, यज्ञमान अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हो करके, वह गम्भीरता पूर्वक अपना याग करता रहता है। गम्भीरता में रत्त हो करके मानो देखो, अपने में अभ्योदय होता रहता है। तो वो ही याग हमारे यहाँ सार्थक माना गया है।

पितरों के दर्शन

तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा कि प्रभु! देखो, एक समय हम उद्दालक गोत्र में पहुँचे थे और उद्दालक गोत्र में जो शिकामकेतु ऋषि महाराज है और उनकी पत्नी रम्भोवाचिक मुनि व्रतोः मानो देखो, उनकी पत्नी जो शकुन्तका थी वह दोनों अपने पितरों का दर्शन करते रहते। उन्होंने कहा यही तो विज्ञान है। कि मानो देखो, जब पितरों का दर्शन होता है। जैसे हमारे शब्द है, उन शब्दों के चित्र बनकर के अन्तरिक्ष में विद्यमान रहते है। मानो देखो, अपने यत्रों के द्वारा, विज्ञान के वाङ्गमय में प्रवेश होते हुए तो मेरे पुत्रो! उनके चित्रों में देखो, वो अपने पूर्वजों के शब्दों के साथ में, चित्रों के साथ में उनका क्रियाकलाप निहित रहता है।

तो मेरे प्यारे! विचार विनिमय क्या, आज जब हम वाणी के ऊपर अपना अनुसन्धान प्रारम्भ करते हैं अथवा अपने क्रियाकलापों में प्रवेश करते हैं तो हमारा क्रियाकलाप एक विचित्रता में परणित होने लगता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष विवेचना न देता हुआ, केवल यह कि हमारे यहाँ कन्या याग का बड़ा वर्णन आता रहता है। वैदिक साहित्य में भी मानो वेद मन्त्रों में भी इस प्रकार की विचार धाराएँ उद्बुद्ध होती रहती हैं। जिन विचार धाराओं को लेकर के मानव अपने में मानवीयता का दर्शन करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज मौन हो गए और महर्षि वशिष्ठ ने कहा कि तुम्हारा जो अध्ययन है ऋषिवर! वह बड़ा विचित्र है। आज मैं उस अध्ययन की प्रतिक्रियाओं में मानो देखो, रत्त होना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! देखो, वे ब्रह्मवेत्ता होते हुए, नाना प्रकार की धाराओं में रत्त होना और उन पर विचार विनिमय करना, जो अपनी आभा में रत्त रहने वाला, जो वाक है उसी वाक को अपने हृदय से, हृदयग्राही बना करके मानो देखो, उसका अन्तरिक्ष से समन्वय करना मेरे पुत्रो! देखो, वही तो सार्थक हृदयग्राही विज्ञान माना गया है। वो विज्ञान की तरंगों में, मानव की धाराएँ रत्त हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, उद्दालक गोत्र में नाना ऋषि हुए है। परन्तु उन ऋषियों में ये विशेषता रही है, उनमें यह विचित्रता रही है कि मानो देखो, वह ऋषिवर ज्ञान और

विज्ञान की विचित्र उड़ाने उड़ते रहते है। जहाँ मानव ब्रह्मवेत्ता बनता है वहाँ ब्रह्मवेत्ता बनने के लिए आध्यात्मिक उड़ान उड़ना भी और भौतिक उड़ान उड़ना भी उसमें दोनों का सम्मिलन होना यही तो बेटा! देखो, चित्रों का दर्शन करना है।

तो आओ मेरे प्यारे! देखो, मैं विशेष चर्चा न करता हुआ, देखो, विशेष वार्ता मैं प्रकट करने नहीं आया हूँ। आज तुम्हें मैं यह वाक प्रकट कर रहा हूँ कि परमपिता परमात्मा यज्ञमयी स्वरूप माने गए हैं। हमारे यहाँ ऋषि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने बेटा! बड़ा विचित्र वर्णन किया है। उन्होंने बेटा! एक लोलोक्ति और प्रकट की है कि मृत्युञ्जय बनने के लिए लोलोक्ति दी है। मानो उन्होंने बेटा! विज्ञान और मुनिवरों! देखो, ये जो प्राकृतिक कर्मकाण्ड है उसका दोनों का मानो सम्मिश्रण किया है। तो मेरे पुत्रो! मैं उस सम्मिश्रण में तुम्हें ले जाना चाहता हूँ। मुझे बेटा! वो काल स्मरण आता रहता है जब याज्ञवल्क्य मुनि महाराज और मुनिवरों! देखो, महर्षि वशिष्ठ, और माता अरूणधति तीनों एक दूसरे से परस्पर चर्चा का एक अनुवृत्त बन गया। एक वेदमन्त्र उनके स्मरण आया, वेदमन्त्र कहता है वृखोः ब्रह्माः वृखं वृत्तं वृखं व्रताः देवाः अस्सुतं यागाः मेरे प्यारे! देखो, यह वाक ऋषि ने प्रकट किया। उन्होंने कहा कि जब मैं वेद मन्त्रों को लेकर के, ऋषिवर अपनी लेखनी बद्ध करने लगा तो लेखनी बद्ध करते हुए वेदमन्त्र का आशय हमारे समीप आया। तो वेदमन्त्र कहता है कि वृख नाम के हमारे यहाँ बड़े पर्यायवाची शब्द है। वृख मानो चञ्चल और थर्वा को कहते हैं।

इन्द्र वत्रासुर संग्राम

मानो देखो, उसमें हिरण का नाम हमारे यहाँ आया है हिरणं ब्रह्माः मानो देखो, जब हिरण का नाम आया तो यह आया कि यागां ब्रह्मेः मेरे पुत्रो! इसका अभिप्राय यह हुआ कि याग को काला हिरण ले गया और जब कालिमा का हिरण ले गया तो मानो देखो, बड़ी दुविधा हुई कि यागां ब्रह्मे व्रतम् मुनिवरों! देखो, जब उनका संधर्ष हुआ तो हिरण ने वही याग मानो देखो, वत्रासुर को प्रदान कर दिया। वह

वत्रासुर में प्रवेश कर गया। याग वत्रासुर में चला गया। और जब वत्रासुर ने मानो याग को अपने में संग्रहित कर लिया तो उसी समय इन्द्र को यह प्रतीत हुआ कि देखो, याग को काले हिरण ने वत्रासुर को प्रदान कर दिया। तो मेरे पुत्रो! ऐसा वेद मन्त्रों में आया है कि मानो देखो, उन दोनों का संघर्ष हुआ, उन दोनों का भयंकर संग्राम होने लगा। इन्द्र का और वत्रासुर का।

तो मुनिवरों! देखो, वह संग्राम होता रहा। संग्राम होते, होते मेरे प्यारे! इन्द्र ने वत्रासुर ये मानो देखो, अपने वज्र का प्रहार किया। इन्द्र ने जब वज्र का प्रहार किया तो मुनिवरों! देखो, वत्रासुर छिन्न भिन्न हो गए और मुनिवरों! उन्होंने वृष्टि की और वृष्टि करने के पश्चात तो यहाँ एक वेदमन्त्र और आया है। गो व्रणं ब्रह्मे वृखं ब्रहा वाचन्नमं मृत्यु भ्रो मानो वही व्रभो सम्भव प्रति लोकाम् मेरे प्यारे! यहाँ देखो, वेद की एक ओर आख्यायिका आई कि देखो, जब वत्रासुर का छिन्न भिन्न होना, वृष्टि हो गई जब मानो देखो, वृष्टि प्रारम्भ हो गई, तो वृष्टि के प्रारम्भ होते ही, वह कहते हैं कि गो का बछड़ा जो वृख है मानो देखो, उसकी बलि होने लगी। जब उसकी बलि होने लगी तो मेरे प्यारे! देखो, यहाँ वृख की बलि का वर्णन आया।

बलि का अभिप्राय

हमारे वैदिक साहित्यों में मानो बलि का अभिप्राय केवल देखो, शरीर को नष्ट करना नहीं है। बलि का अर्थ यह नहीं है, कि हम प्राणी को नष्ट करने लगे। बलि का अर्थ यह है जैसे माता अपने पुत्र के लिए मानो देखो, सर्वत्र न्यौछावर कर देती है तो वह माता भी बलि कही जाती है क्योंकि माता अपने पुत्र को बलि प्रदान कर देती है। अपना सूत्र दे देती है, मानो देखो, अपने विचार और बाल्य के विचारों में एक महानता का प्रकर्षण करती है तो मानो देखो, वह अपने जीवन की बालक को बलि प्रदान कर देती है।

इसी प्रकार मेरे पुत्रो! देखो, यह जो वृख है, गो का बछड़ा है जब वृष्टि होती है तो पृथ्वी को क्षुधा लगती है कि मैं अपने में समाहित हो जाऊँ। तो मुनिवरों! देखो,

यह पृथ्वी अपने में अपने पन को लेकर के समाहित हो जाती है। बड़े विचित्र वाक है बेटा! कि मानो देखो, अपने विचारों में अपने में ही समाहित होना है। समाहित होने का अभिप्राय यह है कि मानो देखो, जब पृथ्वी को क्षुधा लगती है तो देखो, वह बीज की स्थापना की क्षुधा लगती है। वही क्षुधा मानो देखो, गो का बछड़ा पूर्ण करता है। पृथ्वी की चमडी को उधेड़ता है उसके गर्भ में बीज की स्थापना हो जाती है और भी नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थों की उत्पत्ति हो जाती है।

मेरे प्यारे! देखो, पृथ्वी के गर्भ में क्या नहीं है बेटा! मानो देखो, कहीं पृथ्वी के गर्भ में कहीं स्वर्ण है, कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है। मानो देखो, कहीं जल को शक्तिशाली बनाकर के, मानो वाहनों में क्रिया, वाहनों में गतियों का सञ्चार हो रहा है। वहीं माता के गर्भ में बेटा! नाना प्रकार के खाद्य और खनिज पदार्थ है। उसको वह मानव विज्ञानवेत्ता अपने में ग्रहण करते रहते हैं, राष्ट्र का सञ्चार होता रहता है।

बलि अर्थात कर्तव्य पालन

तो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने कहा कि हे प्रभु! मैं यह जान पाया हूँ, मेरा हृदय मानो इस अन्तिम निर्णय पर पहुँच गया है, अन्तिम चरण में चला गया हूँ कि मानो देखो, ये वृख नाम देखो, गो के बछड़े का है। बलि का अभिप्राय यही है, बलि का अर्थ है पुरुषार्थ करना, बलि का अर्थ है मानो देखो, अपने प्राण और मन को संलग्न करते हुए एक सूत्र में पिरोकर मानो अपने कर्तव्य के पालन का नाम हमारे यहाँ बलि प्रथा मानी गई है। मेरे प्यारे! ये परम्परागतों से है तो आज मैं नवीन बात प्रगट करने नहीं आया हूँ। वेद मन्त्रों में अनन्य समय में बेटा! बलियों का वर्णन है। परन्तु बलि का, अभिप्राय केवल प्राणी को नष्ट करना नहीं है। जैसा मेरे पुत्र महानन्द जी ने मुझे कई कालों में प्रकट कराया कि प्राणी प्राणी का भक्षण करना ही मानो आधुनिक काल में बलि कहलाती है। बलि का अभिप्राय यह होता है कि मानो देखो, पुरुषार्थ और अपने जीवन को दूसरों के

जीवन के लिए मानो जो क्रियात्मक क्रियाकलापों में परणित होता है, वह मानो देखो, बलि कर रहा है।

तो मेरे पुत्रो! देखो, विचार विनिमय क्या, किसी भी मानव के द्वारा मानव के रक्तपान करने का या रक्त को ग्रहण करने का हमें अधिकार नहीं होता। विचार केवल यह है कि मानो देखो, बलि का अभिप्राय है पुरुषार्थ। बलि का अभिप्राय एक दूसरे में समाहित होना है। तो मेरे पुत्रो! देखो, संसार के सम्बंध में जब विचारने लगोगे तो यह संसार एक बलि के रूप में दृष्टिपात आने लगेगा।

मन्त्रों पर अनुसन्धान

तो आओ मेरे पुत्रो! मैं विशेष विवेचना न देता हुआ आज बेटा! मैं तुम्हें यह निर्णय देने के लिए आया हूँ, मैं तुम्हें यह वाक प्रकट करने के लिए आया हूँ कि वेद का जो शब्द है उस शब्द के ऊपर मानव को मनन और चिन्तन करना चाहिए। क्योंकि मनन और चिन्तन करने से उसका वास्तविक स्वरूप, हमारे समीप आ जाता है। हमारे ऋषि मुनियों ने एक एक वेदमन्त्र के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है। मानो देखो, अपने में बड़ा पुरुषार्थ करते हुए और एकान्त स्थलियों पर विद्यमान हो करके मन और प्राण को एकाग्र करते हुए समाधिष्ट हो करके, एक एक वेदमन्त्र के ऊपर अध्ययन करना प्रारम्भ किया।

याग में मानवता

आओ मेरे पुत्रो! आज का हमारा ये विचार क्या कह रहा है? हम परमपिता परमात्मा की महिमा में संलग्न हो करके मेरे पुत्रो! देखो, यागां हमारे यहाँ कन्या याग का वर्णन आता है। कन्या याग का अभिप्राय यह है मानो देवोभ्यो पितरम्योः और मानो देखो, कुलेभ्योः को प्राप्त होकर के बेटा! अपने जीवन को मानो एकोऽहं बहुधा का पठन पाठन, चयन हमारे यहाँ प्रायः उसका वर्णन भी होता रहा है। तो मेरे पुत्रो! आज का हमारा वाक यह क्या कह रहा है, कि हम परमपिता परमात्मा के रचाए हुए इस ब्रह्माण्ड को अथवा उसकी कृतिका को हम विचार विनिमय में करते चले

जाएं जैसे बेटा! देखो, मैंने वृख ब्रह्माः बेटा! याग किसे कहते हैं? याग कहते हैं मानो जिसमें सुगन्धित हो, जिसमें विज्ञान हो जिसमें मानो देखो, मानव में मानवता का भास हो।

विभिन्न यागों का स्वरूप

मेरे प्यारे! देखो, माता याग कर रही है, राजा याग कर रहा है। यागों में लगे हुए हैं। नाना प्रकार के यागों का वर्णन हमारे वैदिक साहित्य में आता रहता है जैसा मैंने कई काल में वर्णन कराया बेटा! गौमेघ याग का अभिप्राय यह है कि जब आचार्य ब्रह्मचारी के अज्ञान को समाप्त कर देता है तो मानो देखो, वह गौमेघ याग कर रहा है। राजा जब प्रजा में देखो! अश्वमेध याग करता है तो प्रजा और राजा दोनों एक सूत्र में प्रवेश होकर के राष्ट्र का, मानव का पालन करते हैं। एक दूसरे की प्रतिभा को जानते हैं, ज्ञान का प्रसार होता है, प्रकाश होता है तो वो मानो अश्वमेध याग हो रहा है। अश्व नाम राजा का है मानो देखो, मेघ नाम प्रजा का। अश्वमेध याग जो करते है मेघां ब्रह्माः यागाम् मेरे प्यारे! देखो, अजामेघ याग करना अपने मानो जीवन को हमें विजय करना है। जो नाना प्रकार की प्रवृत्तियाँ हमारी चञ्चलता में प्रवेश कर जाती है।

तो मेरे प्यारे! देखो, इन्दियों को संयम में करने का नाम मुनिवरों! देखो, एक याग माना गया है। उसको हमारे यहाँ मेरे पुत्रो! देखो, याग के रूप में, उसे अजामेघ याग कहते हैं। अजा कहते हैं इन्दियों को, जो इन्दियों को संयम में करता हुआ, परमात्मा की प्रतिभा में समाधिष्ट हो जाता है। मेरे पुत्रो! अपने को लयकर देता हुआ, वह अजामेघ याग करता है। उसके और भी अवान्तर भेदन है जैसे अजा नाम बेटा! बकरी का है मानो अजा नाम के और भी शब्द है, अजा नाम मानो देखो, राजा द्वितीय राष्ट्रों के अन्धनम्, पापो को जब नष्ट करने के लिए तत्पर होता है तो वह अजामेघ याग करता है। मेरे प्यारे! देखो, इसी प्रकार हमारे यहाँ जैसे अग्निष्टोम याग है, मानो वाजपेयी याग है, भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का चयन

हमारे वैदिक साहित्य में होता रहता है।

आज मैं बेटा! याग के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न रूपों में जाना नहीं चाहता हूँ। केवल विचार विनिमय क्या कि हम परमपिता परमात्मा के रचाए हुए, मानो देखो, उस ब्रह्माण्ड रूपी याग के ऊपर कल्पना करते चले जाएँ। मेरे प्यारे! देखो, प्रभु ने जब इस संसार का सृजन किया तो मानो देखो, एक यज्ञशाला के रूप में, इस ब्रह्माण्ड की रचना की। इसी में एक ब्रह्म की उपाधि को प्राप्त करता हुआ मानो देखो, हूत कर रहा है। प्रहूत हो रहा है, देवतव हो रहा है। मेरे प्यारे! देखो, यह माता पृथ्वी वसुन्धरा के गर्भ में बेटा! देखो, हम सब विद्यमान हो जाते हैं। और जब इससे उपराम होते हैं तो प्रभु! के गर्भ में चले जाते हैं। वहाँ बेटा! देखो, प्रभु वसुन्धरा बन करके मानो देखो, अपने में लय कर लेता हैं।

मानव जीवन का दर्शन

तो विचार क्या मुनिवरों! मैं विशेष चर्चा न देता हुआ, केवल मैं व्याख्याता नहीं हूँ बेटा! मैं तुम्हें परिचय कराने के लिए चला आता हूँ और वह परिचय यह है कि जब हम किसी भी वस्तु के विशुद्ध रूप को स्वीकार कर लेते हैं तो मानो हमारा मानवीयतव पवित्रता में परणित हो जाता है। हम अपने मानव जीवन का दर्शन करना प्रारम्भ करने लगते हैं।

तो आओ, मेरे पुत्रो! आज का विचार क्या कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। यह है बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मुनिवरों! देखो, इस संसार सागर से पार हो जाएँ। ये है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा। मैं तुम्हें शेष चर्चाएँ कल प्रकट करूँगा। वाक यह चल रहा था कि माता अरुणधती, महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज और महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज तीनों का मानो देखो, परस्पर चिन्तन, परस्पर विचार विनिमय होना,

एक एक वेद मन्त्रों की झड़ियों में इस संसार का दर्शन करना, ये है बेटा! आज का वाक्, अब वेदों का पठन पाठन। ओ३म् देवं रथाः आभ्यां गतौ मा नाः वा या। ओ३म् तनु गन्धर्व वा या गतं मनुः आ पा। अच्छा भगवन्! शान्ति।

7. सूर्य विष्णु है।-920202

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं, और जितना भी ये जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते हैं, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी हैं और उसका ज्ञान और विज्ञान भी अनन्तमयी माना गया है, क्योंकि सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक नाना विज्ञानवेत्ता हुए है, परन्तु कोई विज्ञानवेत्ता ऐसा नही हुआ, जो उस परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान के ऊपर अपनी सीमा की वृत्तियां प्रारम्भ करने वाला हो, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा सीमा से रहित है, और वे सीमा में आने वाले नही हैं, इसीलिए हमारे यहां वेदज्ञ और एक एक वेद का मन्त्र हमें नाना प्रकार की प्रतिभा में ले जाता चला जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेदमन्त्र में उस परमपिता परमात्मा का ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है, क्योंकि प्रत्येक मानव परम्परागतों से अपने में यह चाहता रहा है कि मैं ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाऊं, और वह ज्ञान और विज्ञान में ही अपने को संलग्न करता रहा है। मुझे बहुत सा काल स्मरण आता रहता है, उस काल में बेटा! नाना विज्ञानवेत्ता विज्ञानं भू वर्णासुतं और विज्ञान अपने में बड़ा प्रियतव माना गया है। हमारे यहां दोनो प्रकार का ज्ञान और विज्ञान परम्परागतों से ही, मानवीय मस्तिष्कों में सदैव निहित रहा है। मानो एक भौतिक विज्ञान दूसरा आध्यात्मिक विज्ञान कहा जाता है, परन्तु ऋषि मुनियों की एक बड़ी विचित्र देन रही है, कि जहाँ पर यह भौतिक विज्ञान समापन होता है। वहाँ से आध्यात्मिकवाद का प्रारम्भ होता रहा है। नाना

प्रकार के प्रकृति के अवयों को जब तक नही जान पाते, परन्तु उसके पश्चात हम योगेश्वर बनने के लिए सदैव तत्पर होते हैं, और उस परमपिता परमात्मा का जो आध्यात्मिक है, जो आत्मा को प्रकाश में लाने वाला ज्ञान और विज्ञान है। वह मानव के समीप आ करके नृत्त करता रहता है, और वह अपने में यह जानता रहता है, कि अमृतं ब्रह्मा वर्णसुता क्या मैं परमात्मा के राष्ट्र में आ गया हूँ, क्योंकि उस भौतिक विज्ञान के पश्चात ही आध्यात्मिकवाद में और परमपिता परमात्मा के राष्ट्र में मानो अपने को स्वीकार करता है, और वह परमात्मा के राष्ट्र में चला जाता है। तो अन्धकार से दूरी हो जाता है, क्योंकि अन्धकार से पार होना और प्रकाश में जाने का नाम ही बेटा! देखो, जीवन माना गया है। और जो अन्धकार में सदैव रत्त रहते हैं, अथवा विज्ञान में परिणत हो जाते हैं, अमृतां भूतं ब्रह्मा वर्णो ब्रहे तो मेरे प्यारे! वह प्राणेश्वर को अपने में धारयामि बना लेते हैं। तो मैं आज इस सम्बन्ध में कोई विशेष तुम्हें चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ। विचार विनिमय बेटा! यह कई समय से हमारा एक वाक चल रहा है, हमारे यहां वैदिक साहित्य में भिन्न भिन्न प्रकार के सूक्तों का वर्णन होता रहा है, जैसे शिव स्रोत्र माना जाता है। इसी प्रकार देखो, ब्रह्मणा ब्रहा ब्रह्म स्रोत्रों का वर्णन किया जाता है। इसी प्रकार बेटा! देखो, विष्णु सूक्तों का पठन पाठन होता रहा है। क्योंकि परम्परागतों से विष्णु सूक्त अपने में बड़ा विचित्र और महानता में सदैव परणित होता रहा है, विचार क्या मुनिवरों! देखो, वह जो परमपिता परमात्मा वह विष्णु है, मैं विष्णु की विवेचना करता हुआ बहुत दूरी नही जाना चाहता हूँ। क्योंकि विष्णु हमारे यहां कात्य ब्रह्मा सतोवर्णो सुता मानो देखो, सतोगुणों को भी विष्णु कहा जाता है, जो सत्य में रमण करने वाला है, जो पालन करने वाला है, क्योंकि जो भी पालना का मूल में होता है। वही विष्णु है, तो बेटा! मैं जिस प्रकार की विवेचना तुम्हें देने आया हूँ, वह विष्णु नाम माता का है। विष्णु नाम परमपिता परमात्मा का है, और विष्णु आत्मा को भी कहते हैं और यज्ञोमयी विष्णु परन्तु देखो, याग का नाम विष्णु मैंने कई कालों में तुम्हें

विवेचनाएं दी हैं। परन्तु यहां वेद का मन्त्र कहता है विष्णु ब्रह्मणा सूर्य सुतं प्रकाशाम दिव्यां भविते कर्तव्यवाहा वेदमन्त्र यह कहता है कि जो प्रकाश में हमें पंहुचा देता है, उसका नाम विष्णु है। तो बेटा! देखो, जहाँ सूर्य का नाम भी विष्णु शब्दों से प्रतिपादन किया गया है, और यह कहा कि विष्णु नाम मेरे प्यारे! देखो, सूर्य का है। जो प्रकाश देता है, जो हमें जीवन देता है। जो जीवन को दे करके हमें ऊर्ज्वा दे करके और उनकी किरणों के साथ हम लोक लोकान्तरों का भ्रमण भी करते रहे हैं। तो आओ, मेरे प्यारे! आज का हमारा एक वेदमन्त्र आ रहा था और वह वेदमन्त्र यह कह रहा था विष्णु भवितां विष्णु कृतं देवाः विष्णु ग्रताः मेरे पुत्रों! देखो, वह विष्णु है जो कल्याणकारी है, और हमारे यहां जहाँ नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्दों की प्रायः विवेचना होती रही है, वहाँ हमारे यहां देखो, सूर्य का नाम विष्णु है, और विष्णु मुनिवरों! देखो, जो ऊर्ज्वा दे करके और ऊर्ज्वा को बिखेर देता है। और मानव को अन्धकार से प्रकाश में परिवर्तित कर देता है। जैसे बेटा! प्रातःकाल से मानव देखो, अपने प्रकाश को ले करके वह नाना प्रकार की ऊर्ज्वा दे करके मानो ओजस बना देता है, प्रकाश में परणित कर देता है, तो इसीलिए हम उस सूर्य का नाम विष्णु शब्दों से प्रतिपादन किया जाता है। क्योंकि वह पालना के मूल में विद्यमान है, जैसे माता अपने पुत्र का पालन करती है, जैसे मानो देखो, राजा विष्णु बन करके प्रजा को अनुशासन में ला करके उसको सतोगुण में परणित कर देता है। इसी प्रकार यह मानो सूर्य का नाम भी विष्णु कहा जाता है। जब मुनिवरों! देखो, सूर्य की किरणें चन्द्रमा पर जाती हैं। तो चन्द्रमा का समन्वय समुद्रों से हो जाता है, और समुद्रों से जलों का उत्थान हो करके बेटा! वह शीतल है, वह पालना के मूल में विद्यमान हो जाता है। वह नाना प्रकार का अमृत देता है। चाहे वह शिशु इस संसार में रमण कर रहा हो, चाहे वह माता के गर्भ स्थल में हो चाहे वह मानो देखो, चन्द्र लोकों सु और मङ्गल लोकों में गमन करने वाला हो। परन्तु देखो, उसका जो अमृतमयी जो रस है, वह रसों का अपने में स्वादन करता रहा

है। तो विचार आता रहता है, ब्रह्मणो व्रताप्रव्हा सूर्या तो बेटा! देखो, वह अपने में सूर्य अपने में देखो, ओजस बन करके वह पालना करने वाला है, तो जितना भी पालना का मूल है। उसी का नाम विष्णु कहा जाता है। मेरे प्यारे! प्रातःकाल में जब वह सूर्य उदय होता है, तो ऊषा नाम की एक किरण होती है, और वह ऊषा मानो देखो, सात्विकता की तरंगें ओत प्रोत कर देती हैं। मानव को जीवन बिखेर देती है, और जीवन जब बिखेरती है, तो देखो, वह माता के कहती है हे पुत्र तुम जागरूक हो जाओ। देखो, सूर्य उदय हो गया है, तुम अपने नेत्रों में प्रकाश को लेने का प्रयास करो। तो बेटा! देखो, इस प्रकार माता अपने पुत्रों! को एक उपदेश देती है अपने वाक प्रगट करने लगती है तो विचार आता है कि वह जो सूर्य विष्णु है, वह हमारा कल्याण करने वाला है। मेरे प्यारे! देखो, जब सूर्य की कोई किरणें जब एक स्थली से दूसरी स्थली से परिवर्तित होती हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, यह जलों का उत्थान करती हैं, और जलों का उत्थान करके उससे मेघ मण्डलों की उत्पति होती है, और उत्पति हो करके मुनिवरों! देखो, धीमी धीमी वह वृष्टि करता है, और वृष्टि करने से ही मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के अन्नाद को जन्म देता है। नाना प्रकार के अन्नाद को मूल में लाने का प्रयास करता है। जैसे मानो देखो, एक समय एक वाक्य स्मरण आता रहा है महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज से यह प्रश्न किया गया क्या महाराज यह ब्रह्मां कन्यां भूतं ब्रह्मा क्या हे प्रभु! यह अपने में देखो, यागां हिरण्यत्तम् ब्रह्मा क्या याग को एक समय हिरण्यात्त ले गया और उसमें ले जा करके मानो देखो, वत्रासुर को प्रदान कर दिया और वत्रासुर ने मुनिवरों! देखो, उसकी वृष्टि कर दी तो मुनिवरों! देखो, महर्षि याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने जब तब करने के पश्चात उन्होंने शतपथ नाम की पोथ का निर्माण किया। तो उस पोथी में एक वाक उन्होंने प्रस्तुत किया है उन्होंने कहा कि एक समय यागाम् यज्ञं प्रमाणं ब्रह्मे मानो याग को काला हिरण ले गया, और उस हिरण ने काले हिरण को वत्रासुर को प्रदान कर दिया, और वत्रासुर ने मुनिवरों! देखो, ले करके मानं ब्रह्मे

मानो देखो, इन्द्र का वत्रासुर का दोनों का संग्राम हुआ या उनकी पत्नी शचि ने कहा हे प्रभु! देखो, यह वत्रासुर यह दैत्य है, मानो इसको अभिमान हो गया है, इसके अभिमान को नष्ट किया जाएं। तो उस समय इन्द्र ने अपने वज्र को ले करके और मुनिवरों! देखो, उससे नष्ट किया उससे वृष्टि हो गई और वृष्टि हो करके वहाँ गऊ के बछड़े की बलि का वर्णन किया गया तो याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने इस प्रकार एक आख्यिका उन्हें प्रगट की, तो एक वाक उन्हें स्मरण आते रहते हैं मानो यह आलांकारिक चर्चा हैं, मैं कई समय से तुम्हें अलंकार की वार्त्ताएं प्रगट कर रहा हूँ। क्या एक स्थली पर मानो देखो, अलंकार को यदि हम अलंकार की दृष्टि से ही दृष्टिपात करेंगें, तो अलंकार मानो देखो, इतिहास में परणित नही होगा, और जब इतिहास और अलंकार को दोनों को तुम मानो अलंकार को तुम इतिहास में परणित कर दोगे। तो न तो अलंकार रहेगा और न इतिहास रहेगा, तो इसीलिए इतिहास की भूमिका नष्ट हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह शतपथ ब्राह्मण ने याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने देखो, वर्णन किया है, और वर्णन करते उन्होंने कहा वर्णनं हिरण्यत्तम् ब्रह्मा वह हिरण ले गया तो बेटा! हिरण क्या है? विचार आता है ऋषि ने जब एक समय यह कहा कि एक समय याग हो रहा था और याग की प्रतिभा को हिरण ले गया देखो, धुम्र को हिरण कहते हैं, हिरण्याद्दाम् अग्नं ब्रह्मा व्रतं ऐसा वेद में आख्यिका आई है, न्यौदा में वेदमन्त्र आए है। कि जब उसे काला हिरण ले गया तो हिरण ले जाने के पश्चात बेटा! उन्होंने वत्रासुर को प्रदान कर दिया तो वत्रासुर कहते है। मेघ मण्डलों को और जब वत्रासुर भी उसे अपने में धारण कर लिया। तो धारण करने मात्र से ही मानो देखो, अभिमान की जग गर्जना होती है, तो मुनिवरों! देखो, शचि ने इन्द्र से पुकार की तो मुनिवरों! देखो, शचि जो है वह इन्द्र की पत्नी है, और शचि नाम बेटा! देखो, ब्रह्मणो यहां विद्युत को कहा जाता है, विद्युत का नाम शचि है, और मुनिवरों! देखो, इन्द्र नाम वायु का है। जब शचि देखो, इन्द्र से मिलान करती है, तो इन्द्र महाराज कि यह देखो, क्या

हो रहा है वत्रासुर को अभिमान हो गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने अपने वज्र को ले करके और उन्होंने वज्र कहाँ से लिया वह कहते हैं कि दधीचि की अस्थियों का उन्होंने वज्र बनाया मानो देखो, अस्थियों का वज्र बना और वज्र को ले करके जब मुनिवरों! उन्होंने आक्रमण किया और जब आक्रमण किया तो वत्रासुर को उन्होंने छिन्न भिन्न किया और छिन्न भिन्न करने से मेरे प्यारे! देखो, वहाँ वृष्टि हो गई, और वृष्टि होने के से बेटा! गऊ के बछड़ों की बलि का वर्णन है, वहाँ बलि का अभिप्राय यह नही हैं किसी प्राणी को नष्ट किया जाएं बलि का अर्थ मेरे पुत्रों! देखो, पुरूषार्थ कहा जाता है, जो बलि का अर्थ वह मानो देखो, वह किसी प्राणी को हनन करना स्वीकार करते है। वह पामर व्यक्ति हुआ करते है। परन्तु देखो, अलंकार को जानने का प्रयास होना चाहिए। जब अलंकार को जानने का प्रयास करता है। तो अलंकार में मेरे प्यारे! देखो, बलि का अर्थ पुरूषार्थ है, परिश्रम है, और परिश्रम के द्वारा मुनिवरों! देखो, जो क्रियाकलापों में रत्त रहता है वह बलि अव्रतं वह अपने में बलि देखो, कहता है कि मैंने ऐसा कार्य किया है, कि मैंने अपने शरीर की बलि प्रदान कर दी है। तो बलि का अभिप्राय पुरूषार्थ बन गया है। मेरे प्यारे! देखो, शचि नाम विद्युत का है, अमृतं देखो, इन्द्र नाम बेटा! वज्र से तो बेटा! देखो, मानव ने पुरूषार्थ किया और गऊ के बछड़ों के साथ मे पुरूषार्थ किया तो पृथ्वी के मानो देखो, जहाँ वृष्टि हुई पृथ्वी की चमड़ी को उधेड़ करके उसके मांस में बीज की स्थापना की तो मुनिवरों! देखो, उसमें बीज की स्थापना करके नाना प्रकार का मानो देखो, अन्न इत्यादियों का जन्म हो गया है।

तो विचार आता है मेरे प्यारे! वेद का वाक कहता है अमृतं देवं ब्रह्मा अग्नं ब्रीहि व्रतां देवा मुखा व्रतं वेद का वाक कहता है कि यह जो अग्नि है, यह देवताओं का मुख है, और अग्नि में हुत किया जाता है उसी हूत को ले करके मैं मेरे प्यारे! देखो, सोम व्रतं ब्रह्मा कृतं मुनिवरों! देखो, वह उसे ले करके हिरण को प्रदान कर देता है, हिरण कहते हैं धुम्र को और धुम्रं ब्रहा जब घुम्र नही तो बेटा! वहाँ बैल

की बलि का वर्णन आता है। हमारे यहां भिन्न भिन्न प्रकार के यागों का वर्णन बेटा! वहाँ वाजपेयी याग बन जाता है। जिस वाजपेयी याग को मुनिवरों! देखो, हमारे यहां ऋषिजन नही देखो, राजा और प्रजा दोनों मिल करके ही मानो देखो, वाजपेयी याग का व्यवधान माना गया है। तो विचार आता रहता है याज्ञवल्क्य मुनि महाराज ने शतपथ ब्राह्मण में अपनी लेखनियाँ बद्ध करते हुए, उन्होंने कहा है क्या प्रत्येक मानव को अपने में देखो, विचारना है और मैं विष्णु की विवेचना कर रहा था बेटा! हमारे यहां देखो, विष्णु ही कल्याणकारी है। जो नाना प्रकार के वनस्पतियों में सहायक है। मेरे प्यारे! देखो, नाना पशु इत्यादियों में जो सहायक बना हुआ है, वही तो विष्णु कहलाता है और वह सूर्य में जो नाना प्रकार की ऊर्ज्वा को ले करके गमन करता है, वैज्ञानिक जन बेटा! उसके चरणों के साथ में अपने यन्त्र को गमन कराते हैं। वह लोक लोकान्तरों में रत्त हो जाते हैं। मुझे बेटा! वह काल स्मरण आता रहता है, जब मुनिवरों! देखो, महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहां विद्यालय में नाना ब्रह्मचारी अध्ययन करते रहे तो नाना ब्रह्मचारी जब अध्ययन करने लगे तो बेटा! देखो, उसके यहां जहाँ अध्ययन की प्रवृत्ति थी, तो अध्ययन को क्रियात्मक में लाना बहुत अनिवार्य है, जब तक हम अध्ययन को क्रियात्मक में नही लाते यह अध्ययन हमारा व्यर्थ बन जाता है। तो वेद का वाक कहता है अध्यानं ब्रह्मा वर्णनं ब्रह्मे तो महात्मा तत्त्व मुनि महाराज के यहां ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे तो अध्ययन करके उनके यहां नाना प्रकार की प्रयोगशाला थी जहाँ देखो, उनके यहां चन्द्र विज्ञान और देखो, सूर्य विज्ञान के ऊपर अन्वेषण होता रहता था वही मेरे पुत्रों! देखो, वहाँ नाना लोक लोकान्तरों में यातायात के यन्त्रों का निर्माण भी होता रहा है। तो बेटा! मुझे वह काल स्मरण है जब महात्मा तत्त्व मुनि महाराज बेटा! देखो, वहाँ अध्ययन करते थे और अध्ययनं ब्रह्मा ब्रह्मचारी नाना प्रकार की अपनी प्रयोगशाला में प्रयोग को अपना करके अपने में महानता का जन्म देना प्रारम्भ करते। तो बेटा! मुझे स्मरण है कि महर्षि तत्त्व मुनि महाराज के यहां नाना

ब्रह्मचारी अध्ययन करते थे और वह ब्रह्मचारी अपने में अध्ययन की वृत्तियों में रत्त हो करके बेटा! वह नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करते जब निर्माण करते तो बेटा! एक समय महात्मा तत्त्व मुनि महाराज ने कहा ऋषि ने ब्रह्मचारियों से कहा जाओ उड़ान उड़ो और लोक लोकान्तरों में जाने का प्रयास करो मेरे प्यारे! देखो, महर्षि भारद्वाज और महर्षि सोमकेतु के पुत्र वृधि और वृधि मानो देखो, दोनों ब्रह्मचारी अपने यन्त्र में विद्यमान हो गएं, और विद्यमान हो करके बेटा! ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगे, जब वह उड़ान उड़ने लगे तो पृथ्वी मण्डल से जब उन्होंने उड़ान उड़ी, तो सबसे प्रथम मानो वह मङ्गल मण्डल में वह सबसे प्रथम बुध में पंहुचे, और बुध मण्डल से उड़ान उड़ते हुए शुक्र में पंहुचे और शुक्र से उड़ान उड़ करके मेरे प्यारे! देखो, सम्ब्रह्मा वह मङ्गल में पंहुचे और मङ्गल के वायुमण्डल को उन्होंने दृष्टिपात किया और मङ्गल मण्डल में ऐसा ही वायुमण्डल है। जैसा पृथ्वी तल पर वायुमण्डल कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, मङ्गल में नाना प्रकार के वैज्ञानिक अपने में नाना विज्ञानशालों में रत्त रहे हैं, और इसी प्रकार आगे उड़ान उड़ते हुए वह मेरे प्यारे! देखो, मङ्गल से उड़ान उड़ी तो मुनिवरों! देखो, वह स्वाति में चले गएं, और स्वाति मण्डल से जब उड़ान उड़ी तो वहाँ जल प्रधान वाले प्राणी रहते हैं। मेरे पुत्रों! देखो, स्वाति से उड़ान उड़ करके वह व्रण केतु मण्डल में पंहुचे और व्रण केतु मण्डल में बेटा! वहाँ का वायुमण्डल भी उन्होंने दृष्टिपात किया और आगे उड़ान उड़ते हुए वह मुनिवरों! वह वशिष्ठ मण्डल में पंहुचे। वशिष्ठ मण्डल में भी पार्थिव तत्त्व प्राणी मानो गमन करते है और अरूणधति मण्डल में और वशिष्ठ मण्डल में प्रायः दोनों में इस प्रकार का प्रायः नृत्त होता रहा है। तो मेरे प्यारे! देखो, मैं विज्ञान के क्षेत्रो में नही ले जा रहा हूँ। केवल वेद के मन्त्रों के आधार पर मानो देखो, क्रियात्मक जो ऋषियों के जीवन रहे हैं। उन वार्त्ताओं को मैं तुम्हें प्रगट करा रहा हूँ। मेरे प्यारे! देखो, जब अरूणधति मण्डल से आगे उन्होंने उड़ान उड़ी तो वह त्रीत केतु मण्डल में चले गएं, और त्रेत केतु मण्डल से जब उन्होंने उड़ान

उड़ी तो वह रोहिणी केतु मण्डल में प्रवेश हो गएं और रोहिणी केतु मण्डल से उड़ान उड़ करके कृतिका मण्डल में और वहाँ के वायुमण्डल को दृष्टिपात करके बेटा! वह ब्रह्मचारी तत्त्व मुनि महाराज के आश्रम में जो अध्ययन करते थे। वह बेटा! बहतर लोकों का भ्रमण करते हुए, और वहाँ के नगर को दृष्टिपात करके वह पुनः शनैः शनैः इस पृथ्वी मण्डल पर आ गएं। तो मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने तत्त्व मुनि ने प्रश्न किया हे ब्रह्मचारियों! तुमने कहाँ कहाँ भ्रमण किया उन्होंनें कहा प्रभु! आपको हम तो निर्णय कराते रहे हैं, अब हम अमुक मण्डल में चले गएं हैं, अमुक मण्डल में चले गएं हैं अमुक प्राणियों से वार्ता प्रगट कर रहे हैं। क्या यह आपने श्रवण नही किया तत्त्व मुनि ने कहा कि मैंने श्रवण किया तो मेरे पुत्रों! देखो, विचार विनिमय क्या है हमारा क्या हम तुम्हें यह इसीलिए निर्णय अमृतं ब्रह्मा देखो, अस्वतम् और यह जो सूर्य की किरणों के साथ में यन्त्र अपने में गमन कर रहा है और गमन करता हुआ मुनिवरों! देखो, वह यन्त्र ऊर्ध्वा में गमन करता हुआ अवगत करा रहा है तो सूर्य विष्णु है। क्योंकि उसकी किरणों के साथ में जो यान गमन करता है वह सूर्य की किरणों के साथ में गमन करता रहता है, सूर्य की किरणों के साथ में गमन करने वाले जो मानो जो यान है बेटा! देखो, वहकहीं मङ्गल से ऊर्ध्वा में मानो देखो, वह अमृतं ध्रुव में भी गमन करते हैं। कोई ध्रुव की परिक्रमा करता है। कोई मानो देखो, सूर्य की आभा को दृष्टिपात करता है। मेरे पुत्रों! देखो, यह अपने में बड़ा विचित्र है एक विज्ञान है जो परमपिता परमात्मा की एक अनूठी रचना है। परमपिता परमात्मा का अनूठा ज्ञान है। जिसके ऊपर बेटा! मानव अपने में विचारता रहता है, जैसे मुनिवरों! देखो, माता मल्दाल्सा अपने पुत्रों! को नाना प्रकार की शिक्षा दे करके वह इस प्रकार के ज्ञान और विज्ञान को अवगत कराती रहती थी, मेरे पुत्रों! देखो, ब्रह्मचारी अपने में ग्रहण करता हुआ, अपने ओजस जीवन को महान बनाने का प्रयास करता रहा है। तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नही आया हूँ। केवल यह कि विष्णु की याचना कर

रहा हूँ, यह सूर्य का नाम विष्णु है, और जो विष्णु मुनिवरों! देखो, प्रकाशक है, अन्धकार को नष्ट करने वाला और प्रकाश को देने वाले का नाम ही बेटा! देखो, विष्णु रूप कहा जाता है। अमृतां विष्णु ब्रह्मणा ब्रहा देवत्वं इदं ब्रह्मा तो याग का नाम बेटा! हमारे यहां वसु कहा जाता है। वेदमन्त्र कहता है, यज्ञोमयी विष्णुः मेरे प्यारे! देखो, याग एक विष्णु है, और वसु कहलाता है, वसु इसीलिए क्योंकि उसमें बसते हैं जो वह मानव अच्छे क्रियाकलाप करता है, और याग कहते है। जितने भी सुकर्म है, जितने भी महान कर्म है, बेटा! देखो, वह सब याग है यागां ब्रह्मा बेटा! देखो, वह सब विष्णु के रूप में बस करके बेटा! देखो, वह यज्ञोमयी विष्णु बनते हैं क्योंकि वह वरते हैं। शुभ कर्म नही होंगें यदि शुभ कर्म नही होंगें तो बसोगे नही, यदि दुरिता में क्रियाकलाप तुम्हारे चलते रहेंगें तो कहाँ बसोगे, कौन से आङ्गन में तुम जाओगे। तो वेदमन्त्र कहता है यज्ञोमयी विष्णुः हे मानव! तू अच्छे कर्म कर। जिससे तू बसने के लिए तत्पर हो जा और तू विष्णु के आङ्गन में मानो तू अपने को वशीभूत करेगा। तो विचार विनिमय क्या मुनिवरों! देखो, वेद कहता है अमृतं सूर्याम् ब्रह्मा विष्णु मेरे प्यारे! यह विष्णु वसु है, और वसु में हम सब बसते हैं वह परमात्मा का नाम बेटा! विष्णु जिसके गर्भ में हम सब विद्यमान है, और माता के गर्भस्थल में शिशु मानो क्रीड़ा करता है मेरे प्यारे! जब माता के गर्भ में हम जैसे शिशु होते हैं। तो माता अपने में बसाने वाली है मानो देखो, उस माता का नाम वसु कहलाया गया है। मेरे प्यारे! माता की जितनी विचित्र भावना होंगी उतना ही मानो देखो, धर्म नही भावना होंगी उतने ही प्रिय पुत्र मानो बसते रहेंगें माता प्रसन्न होती रहती है। तो विचार आता है इदम् ब्रह्मा वसं ब्रव्हे विष्णु वसु हे माता! तू वसु है हमें अपने में बसाने वाली है माता के गर्भस्थल में अङ्ग प्रत्यंग का निर्माण हो रहा है। मेरे प्यारे! वह निर्माण करने वाला इसीलिए विष्णु है, परमपिता परमात्मा निर्माण कर रहा है। माता को ज्ञान नही हैं बालक देखो, शिशु की बुद्धि का निर्माण हो रहा है। बुद्धि, मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञा मेरे प्यारे! देखो, सबका निर्माण हो रहा

है। माता को प्रतीत नही है, कौन निर्माण कर रहा है? मेरे प्यारे! देखो, रजोंवृत्तियों का निर्माण कहीं मानो देखो, सूर्य प्रकाश देता है। कहीं चन्द्रमा अमृत देता है, कहीं वायु मेरे प्यारे! प्राण दे रही है, अग्नि कहीं उष्ण बना रही है कहीं मेरे प्यारे! देखो, आपो से घिरा हुआ वह शिशु अपने जीवन को ओढ़न और बिछौना प्राप्त हो रहा है। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितन विज्ञानवेत्ता है, जब मैं तेरे विज्ञान के ऊपर कल्पना करता हूँ, तो हृदय गद गद हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, उसी में मम् ब्रह्मा माता अपने में यह स्वीकार करती है कि मैंने एक पुत्र को जन्म दिया है, हे माता! जन्म नही देती तू बसाने वाली है। अपने में बसा रही है परन्तु निर्माण करने वाला प्रभु है। तुझे प्रतीत नही नेत्रों के गोलकनों का निर्माण कैसे हुआ है, तुझे यह प्रतीत नही श्रोत्रों के गोलकनों का कैसे निर्माण हुआ है अरे, सुगन्धि का दाता कोई और है परन्तु सुगन्ध आ रही है, एक यन्त्र स्थित कर दिया है, नेत्र मानो गोलकना है, गोलकने के पीछे पटल है, पटल के पीछे मानो एक चेतना सत्ता है चेतना में से प्रकाश आ रहा है। परन्तु माता को यह ज्ञान नही हो रहा है हे ममतव को धारण करने वाली हे माता! तू वसु है। तू बसाने वाली जब अपने में जब बसाती है, तो हमारा सब का कल्याण होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस माता का नाम विष्णु हैं, जो बसाने वाली है, हम उसी में वशीभूत रहते हैं।

तो आओ, मेरे प्यारे! जैसे इस पृथ्वी के गर्भ में हम बसते रहते हैं, जैसे मानो परमात्मा के गर्भ में यह विश्व वशीभूत हो रहा है। तो मुनिवरों! देखो, उसमें बसते रहते हैं। तो विचार आता रहता है मुनिवरों! देखो, यह सूर्य विष्णु है, जो ऊर्ज्वा देता है, प्रकाश देता है, नाना प्रकार किरणों के द्वारा वह ऊर्ज्वा दे करके मानव को प्रकाशमान बना करके चन्द्रमा के माध्यम से मुनिवरों! देखो, वह नाना प्रकार का अमृतयमी जीवन देता है। तो विचार आता रहता है कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और विष्णु सूक्तों का पठन पाठन करते हुए अपने में यह स्वीकार करते रहे हैं यज्ञोमयी विष्णु मानो देखो, यह वसु है हम इसी में बसते

रहते हैं, यदि सुक्रियाकलाप याग नही रहेंगें तो बसेंगे तो इसीलिए यह वसु कहलाता है। इसकी सुगन्ध चहु और मुनविरों! देखो, वह ओत प्रोत हो जाती है। जैसे मुझे स्मरण है कि भगवान राम ने अपनी प्रजा से यह कहा था कि हे प्रजाओं! तुम मानो देखो, प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए बेटा! कहीं सुगन्धि विचारों की होती हैं, और कही सुगन्धि बेटा! साकल्य की होती है, चरू की होती है अग्नि में जब वेदमन्त्र के साथ में जब चरू देते हैं, तो मुनिवरों! देखो, वह पुष्टिकारक देखो, मधु और पुष्टिकारक रोगनाशक और सुगन्धि तरंगों का जन्म हो करके वह हमें बसाने वाली है। मानो देखो, उनका हूत करते हैं। साकल्य प्रदान करते हैं, साकल्य की सुगन्धि है और एक मानव के विचार हैं माता पिता अपने एकान्त स्थलियों में विद्यमान हो करके वह विचार विनिमय करते हैं। हमारा गृह कैसे ऊँचा बनें, हम परमात्मा की प्रतिभा को कैसे जानें परमात्मा हमारें मानो अन्तर्हृदयों में विद्यमान है। जब इस प्रकार के विचार माता पिता करते हैं तो बेटा! देखो, श्रवण करने वाले बाल्य बालिका उनको श्रवण करके बेटा! देखो, अपने में बसते रहते हैं। गृह को बसाते हैं। तो इसीलिए देखो, वह वसु कहा जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं विशेष चर्चा प्रगट नही करने आया हूँ, विचार विनिमय क्या हम परमपिता परमात्मा विष्णु की याचना करते हुए और उस महान देव को अपने में धारण करते हुए उस संसार सागर से पार होने का प्रयास करें, आज का हमारा यह वाक क्या कह रहा है? क्या परमपिता परमात्मा बेटा! अनन्तमयी है। उसका ज्ञान और विज्ञान भी बेटा! अनन्तमयी माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस अनन्तवान की हम गोद में जाने का प्रयास करें, और उसको विष्णु स्वीकार करके क्योंकि वह पालन करने वाला है, और पालना के मूल में वे परमपिता परमात्मा विद्यमान रहता है। तो हम उस देव की महिमा को जानते हुए इस सागर से पार होने का प्रयास करें जो संसार रूपी सागर है। जिसमें मेरे प्यारे! देखो, यह क्या क्या कल्पना करते रहते हैं, इन कल्पनाओं में तो नही जाना चाहता हूँ।

केवल यह कि परमात्मा का ज्ञान सदैव नवीन रहता है। उसमें वृद्धपन नही आता। परमात्मा का जो रसोमयी ज्ञान है, वह सदैव एक रस बना रहता है। सदैव वह युवा बना रहता है। उसमें वृद्धपन नही आता तो हम उस परमपिता परमात्मा की महिमा उसकी महती को जान करके और इस संसार सागर से पार होने का पार होने का प्रयास करें। यह है बेटा! आज का हमारा वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट कर सकूंगा। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गायन्त्वा रथं। ओ३म् यशश्चाम् आ पा रेवाः आप्यां मनु। ओ३म् गृहितां आप्यां मधु मां आ पाहाम्। ओ३म् शनु गृहितां आप्यां मनु गायाहम्।

8. ब्रह्मवेत्ता-920203

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि यह परमपिता परमात्मा विज्ञानमयी हैं और ज्ञानमयी माने गएं हैं, तो हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र ज्ञान और विज्ञान की प्रायः उड़ाने उड़ता रहा है। जिस भी वेदमन्त्र के ऊपर तुम विचार विनिमय प्रारम्भ करोगे उसी में उस देव का सदैव ज्ञान और विज्ञान निहित रहता है। तो सृष्टि के आदि से ही, ज्ञान और विज्ञान के ऊपर ऋषि मुनि अपने में विचार विनिमय करते रहे हैं और आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों को एक ही रूप में लाने दोनों का विश्लेषण में किया है, क्योंकि एको को धारण करने वाला मानव प्रायः अपने में ही सन्तुष्ट हो जाता है। तो जितना भी ये भौतिक जगत और आध्यात्मिकवाद है, उन दोनों के लिए हमारे आचार्यों ने, परम्परागतों से बेटा! अपनी उड़ाने उड़ते रहे हैं और नाना लोक लोकान्तरों की भी उन्होंने उड़ाने उड़ी हैं। और कर्मकाण्ड की पद्धतियाँ भी बड़े विचित्र रहे हैं। क्योंकि कर्मकाण्ड अपने में बड़ा विश्वात विश्वत्रत माना गया है। जिसके ऊपर मानव कर्मकाण्ड के ऊपर, मानव अपने में कर्म करता हुआ, इस पृथ्वी मण्डल से वह मङ्गल मण्डल की उड़ाने उड़ने लगा है और भी नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों में जाने के लिए जो तत्पर रहा है। क्योंकि ये जो वेद है यह प्रकाश है, और जो भी मानव प्रकाश में चला जाता है, वह अन्धकार स्वतः ही समाप्त हो जाता है। तो इसीलिए मानव को चाहिए कि वह प्रकाश में जाने का प्रयास करता रहे और जब वह प्रकाश में रत्त हो जाता है कि यह स्वीकार करता है कि मैं परमात्मा के राष्ट्र में विद्यमान हूँ और मैं परमात्मा के आनन्द मे आनन्दित हो रहा हूँ। तो मुनिवरों! देखो, अपने में ही सन्तुष्ट रहता

है। अपने में अपनेपन को दृष्टिपात करता रहा है। तो इसीलिए आज का हमारा वेदमन्त्र, अपने में उद्गीत गा रहा है, यमं ब्रह्मणा व्रतं विष्णु मैं कई समय से विष्णु की याचना कर रहा हूँ, और विष्णु के बड़े प्रसंग आते रहें हैं, क्योंकि हमारे यहां वेदमन्त्रों में, जहाँ स्तोत्रों का वर्णन किया गया है वहीं ब्रह्म सूत्रों का भी वर्णन है जहाँ ब्रह्म सूत्रों का वर्णन है, वही विष्णु सूत्रों का भी प्रायः पठन पाठन करते रहे हैं, क्योंकि हमारे यहां विष्णु का एक ही स्वरूप माना गया है क्या वह पालन करने वाला है इसीलिए उसके नाना पर्यायवाची शब्द माने गएं हैं, और पर्यायवाची शब्दों में जब मानव अपने को ले जाता है, तो मानो देखो, वेद की आख्यिका उसके स्मरण आने लगती है तो वेदमन्त्र अपने में ये उद्गीत गाता है सम्भवं देवं प्रमाणां ब्रहे कृतं देवाः क्या वह जो नाना प्रकार के सूत्रों से मानो सूत्रित हो रहा है, इसी प्रकार वेदमन्त्र, एक मनके सदृश्य माना गया है, उस वेदमन्त्र के ऊर्ध्वा में, और ध्रुवा में ओ३म् की प्रतिभा का वृत होता रहा है। और जब वेदमन्त्र देखो, ओ३म् सूत्र से सजातीय बना दिया जाता है। तो मानो प्रत्येक वेद का मन्त्र मनका बन करके वह सूत्रों में सूत्रित हो जाता है। तो इसीलिए मानव को अपने को सूत्र और मनका बना करके और मुनिवरों! देखो, उसमें धारयामि होना चाहिए। जो मानव अपने को मनका स्वीकार करता है, और जिन परमाणुओं से हमारे शरीर का निर्माण हुआ है, उन परमाणुओं को भी मनका ही मनके के सदृश्य दृष्टिपात करता है। तो मुनिवरों! देखो, वह मनका और मनकों से घिरी हुई माला, और माला से घिरा हुआ ये जो हमारा मानवीय शरीर है, मानो देखो, एक महान मनका बन करके, और वह ब्रह्मसूत्र जो उसमें पिरोया जाता है, अथवा उसकी रक्षार्थ रक्षा करने वाला वे परमपिता परमात्मा सत्यमयी है। और अथवा वह विष्णु है, जिस सूत्र में मुनिवरों! देखो, ये मानवीयतव अपने में रत्त रहता है। जैसे याग में नाना प्रकार के मानो देखो, मनके पिरोऐ जाते हैं, और वह मनके ब्रह्मणा वृतं देवत्वां एक समय शिकामकेतु उद्दालक से महर्षि तत्व मुनि महाराज ने ये प्रश्न किया था, क्या महाराज! ये मनका

और माला क्या है? मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि तुम आध्यात्मिक विज्ञान वेत्ता हो या भौतिक विज्ञानवेत्ता हो क्या महाराज तत्त्व मुनि ने कहा कि महाराज! मैं तो दोनों स्वरूपों को जानना चाहता हूँ, मानो देखो, मैं आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों की एक माला को अपने में धारण करना चाहता है। तो उन्होंने कहा कि लोक लोकान्तरों की जो माला है, और माला में पिरोया हुआ जो सूत्र है, मानो देखो, वह तो भौतिकवाद है, और देखो, जो मन से प्राणों से ले करके, जैसे प्राण है, प्राणं भूतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, प्राण को अपान में पिरोया जाता है, और अपान को व्यान में पिरोया जाता है, और व्यान को समान में पिरोया जाता है, और समान को उदान में पिरोया जाता है, तो बेटा! ये मानो देखो, पञ्च मनकों की माला है। इसी प्रकार पांच ज्ञानेन्द्रियाँ भी इसी में पिरोई जाती हैं, तो मानो देखो, इनके विषय वह मनके बन करके और उस अमृतं ब्रह्मा वह प्राण सूत्र में पिरोए जाते हैं, और वह जो प्राण सूत्र है, मानो वह चेतना में पिरोया जाता है। तो ये मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिकवाद क्योंकि उन्हीं मनकों में मानो जब माला बन जाती है तो उस माला को गतिवान बनाने वाला इस शरीर में आत्मा विद्यमान रहता है। आत्म तत्त्व रहता है। तो आत्मां भूतं ब्रह्मा वर्णनं क्योंकि जैसे ये मन है, ये प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु माना गया है। परन्तु देखो, ये सूक्ष्म होने से यह मुनिवरों! देखो, आत्मा के प्रकाश में क्रियाकलाप करता है, और देखो, यही मन है, जो स्वप्न में प्रवेश कर जाता है। यही मन है, जो जागरूक में रहता है, यही मन है जो मानो देखो, मन, अपने में देखो, ऊर्ध्वा भाग में देखो, बुद्धि की वृत्तियां बन जाती हैं, और बुद्धि मुनिवरों! देखो, मेधावी बन जाती हैं, और बुद्धि ऋतम्भरावीं बन जाती हैं, और बुद्धि में देखो, प्रज्ञा बन करके देखो, प्रभु के इस संसार रूपी वृक्ष को अपने में दृष्टिपात करने लगता है। तो मानो देखो, जो एक आध्यात्मिक आन्तरिक जगत की माला है। जिसमें मुनिवरों! देखो, मन, बुद्धि, चित, अहङ्कार मानो उसी में रत्त रहते हैं। और देखो, वर्णनं ब्रह्मा कृतं देवत्वां मना यही मेरे प्यारे! देखो, ये किसी के प्रकाश

से प्रकाशित हैं। परन्तु ये प्रकृति के सूक्ष्म अव्वय माने गएं हैं।

तो विचार आता है, मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिक जो एक जो माला बनी है और उस माला को धारण करने वाला इस मानवीय शरीर में बेटा! देखो, पञ्च महाभूतों के लोक में, एक आत्मा विद्यमान है, जो आत्मां ब्रूणं ब्रह्मे मुनिवरों! देखो, जैसे यह हमारे यहां सम्भूतं ब्रह्मे व्रतं जैसे जालवी ऋषि ने कहा कि आत्मा का लोक ये पञ्च महाभूत है। तो मेरे प्यारे! देखो, आत्मा के लोक में जाना, हमें और उसको जानना ये आध्यात्मिकवाद से घिरा हुआ जगत है, आत्मा इसमें विद्यमान रहता है इसको आध्यात्मिक और जितना ये बाह्य जगत है, वह मन का जगत कहलाता है और मन का जितना भी जगत है वह भौतिकवाद कहलाता है। उसमें ज्ञान है विज्ञान है एक परमाणु को दूसरे से मिलाना है एक दूसरे परमाणु से मिलान करता हुआ यन्त्रों का निर्माण करता है। मेरे प्यारे! देखो, आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट नही करना चाहता हूँ, महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां प्रायः जब ब्रह्मचारी कवन्धि और सुकेता दोनों मुनिवरों! देखो, एक माला को दृष्टिपात करते रहे हैं। अपने विद्यालय में तो मुनिवरों! देखो, दोनों ही तो मनके हैं। मानो शिष्य और आचार्य दोनों एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं। एक दूसरे में पिरोऐ हुए हैं, मेरे प्यारे! देखो, जैसे माता और पुत्र दोनों एक दूसरे में पिरोऐ जाते हैं। जैसे मानो एक संसार के प्राणियों की माला बन जाती है। एक दूसरे प्राणियों का प्राणी ही मानो देखो, सखा कहलाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, अपने में यह पिरोया जाता हैं। जैसे जगत मानो यह परमात्मा का यह जो जगत हैं। यह बड़ा अनूठा आज मुझे दृष्टिपात आ रहा हैं। जब मैं इसके ऊपर विचार विनिमय वैज्ञानिक यन्त्रों का अथवा माला का निर्माण होता रहता है, तो बेटा! माला कैसी बनी हुई है, जब मैं विचारता रहता हूँ विचार आता रहता है, विज्ञान के माध्यम से और विज्ञान के ऊपर अन्वेषण करते रहतें हैं। तो बेटा! विज्ञान में मानो पृथ्वियों की माला बन जाती है हम यह विचारते रहते हैं, कि हमारा जीवन क्या है? मानो देखो, बहुत सूक्ष्मतम ऐसा जीवन है। मानो जिसे हमें दृष्टिपात भी

नही आता रहा है, परन्तु जब विज्ञान के रूप में हम इस संसार को प्रायः दृष्टिपात करते हैं। तो एक वेदमन्त्र आज के हमारे पठन पाठन में आ रहा था पृथम् मालां ब्रहे वर्णासुतं वर्णासुतं ब्रहे व्रतं दूरी असुता कृता वेद का मन्त्र यह कह रहा था क्या नाना पृथ्वियों की माला बन जाती है। बेटा! मालाओं की चर्चा मैंने कई काल में तुम्हें प्रगट कराई है। नाना पृथ्वियों की माला बन जाती है। परन्तु देखो, जब शिकामकेतु उद्दालक के यहां पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण होने लगा अनुसन्धान होने लगा तो बेटा! देखो, उन्होंने लगभग तीस लाख पृथ्वियों के ऊपर अन्वेषण किया क्या तीस लाख पृथ्वियाँ है। मेरे प्यारे! भारद्वाज मुनि की विज्ञानशाला में ब्रह्मचारी सुकेता और कवन्धि ने भी इसी प्रकार मुनिवरों! देखो, पृथ्वियां की गणना की हैं। परन्तु जब इसकी गणना करने लगे तो गणना करते करते एक दूसरे में बेटा! यह पृथ्वियाँ पिरोई गई तो इन पृथ्वियों की माला बन गई तो इन पृथ्वियों में प्राणी मात्र अपने में वास करता रहा है। तो मेरे प्यारे! जब इसकी माला बन गई तो माला को कौन धारण करता है? मेरे प्यारे! देखो, जैसे हमारे यहां मुनिवरों! देखो, मातां ब्रह्मा माता मल्दाल्सा के पुत्र क्रेत केतु ने कहा कि हे माता! इन पृथ्वियों को कौन धारण कर रहा है तो माता मल्दाल्सा ने यह कहा था कि पृथ्वियों को धारण करने वाला सूर्य है वेद की आख्यिका कहती है सूर्याणां ब्रह्मा देवतम ब्रव्हा मानो देखो, सूर्य ही तो धारण कर रहा है तो मेरे प्यारे! देखो, तीस लाख पृथ्वियों की माला बनी एक एक मनका एक एक पृथ्वी में मानो एक एक मनका है और वह मानो देखो, पिरोया हुआ है ब्रह्म सूत्र में और वह पिरोने से बेटा! उसकी माला बन करके उसको धारण करने वाला सूर्य है, ये सूर्य इतना विशाल मण्डल है, जिसमें बेटा! देखो, अमृत ब्रह्मा तीस लाख पृथ्वियाँ जिसमें समाहित हो जाती है। तो मेरे प्यारे! देखो, योगी इन पृथ्वियों का दृष्टिपात करता रहा है। और विज्ञानवेत्ता भी इनको दृष्टिपात करता रहा है। जब मुनिवरों! देखो, ब्रह्मवेत्ता अपनी अन्तरात्मा को मन मस्तिष्क को जब ये ब्रह्मरन्ध्र में ले जाता है, तो बेटा! ये पृथ्वियों की गणना

करने लगता है। मुझे बेटा! स्मरण आता रहता है मंगलं ब्रहे व्रतं देवाः बेटा! महर्षि कागभुषुण्ड जी का जीवन, कागभुषुण्ड जी ने देखो, जब उन्होंने बारह अनुष्ठान करने के पश्चात जब वह अपने में मानो देखो, जब अस्तु बन करके वह अपनी आत्मा को बेटा! ब्रह्मरन्ध्र में ले गएं, तो पृथ्वी की गणना करने लगे मेरे प्यारे! वह सूर्यों की गणना करने लगे। तो बेटा! विचार आता है कि ब्रह्मरन्ध्र के ऊर्ध्वा भाग में ब्रह्मरन्ध्र में बेटा! इस पिपाद होता है और पिपाद में पङ्खड़ीयां होती हैं जब वह गमन करती है तो गमन करके बेटा! देखो, उसमें से नाना प्रकार की झड़ी लग जाती है। और झड़ी लग जाने के पश्चात, मेरे प्यारे! देखो, वह लोक लोकान्तरों को वह अपने में दृष्टिपात करने लगता है। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि शिकामकेतु उद्दालक के यहां भी इस प्रकार का नृत्त होता रहा है। इनकी विज्ञानशाला में भी उनके भौतिकवाद जीवन में भी प्रायः इसी प्रकार का नृत्त होता रहा है।

बेटा! आज मैं ऋषि मुनियों की चर्चाओं में विशेष न जाता हुआ केवल यह कि मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणे व्रतं देवतव प्रव्हा तो वेद का आचार्य वेद का मन्त्र अपने में गुण गान गाता है, मेरे प्यारे! देखो, एक वेदमन्त्र में प्रश्न किया गया, क्या सूर्याणां ब्रव्हे कृतं क्या सूर्यों की भी तो कोई माला है? या सूर्य किसी की माला है। तो मेरे प्यारे देखो, सूर्य की एक सहस्र सूर्यों की माला बनती है तो इसे बृहस्पति अपनें मे धारण करता है, और एक सहस्र बृहस्पतियों की माला बनती है तो आरुणि उनको अपने में धारण करता है, और एक सहस्र आरुणि मण्डलों की माला बनी तो उनको ध्रुव मण्डल अपने में धारण करता है। बेटा! ये कैसा विशाल जगत है, आज जब इसके ऊपर हमारे चिन्तन करने लगते हैं, तो यहां अमृतं ब्रह्मा देखो, ये संसार हमसे ओझल हो जाता है। यह संसार हमारे समीप नही रहता एक प्रभु का संसार प्रभु का जगत हमारे समीप आ जाता है। जिसको हम ब्रह्म विद्या में परणित करते हुए, आध्यात्मिकवाद में ले जाते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! जब मंगलं ध्रुव मण्डल इतना विशाल है ध्रुव मण्डलों की माला बनती है तो उसको स्वाति नक्षत्र

अपने में धारण करता है देखो, स्वाति नक्षत्रों की जब माला एक सहस्र स्वाति नक्षत्रों की माला बनी तो उसको बेटा! अचंग मण्डल ने अपने में धारण कर लिया, एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी तो उसको मुनिवरों! देखो, पुष्प नक्षत्र ने अपने में धारण कर लिया, और उनकी जब माला बनती है। तो मुनिवरों! देखो, वह पुष्पं ब्रह्मा वर्णनं जब पुष्प नक्षत्रों की माला बनी, उसको मुनिवरों! देखो, श्वेत और अचंग मण्डल अपने में धारण कर लेता है अचांगाम ब्रहा कृति देवं पणं मानो देखो, एक सहस्र अचंग मण्डलों की माला बनी उसको व्रेतकेतु मण्डल अपने में धारण करने लगता है, और व्रेतकेतु मण्डलों की माला बनी मेरे प्यारे! देखो, उसको गन्धर्व अपने में धारण कर लेता है। बेटा! गन्धर्व इस माला का अन्तिम सूत्र है, अन्तिम मनका कहलाता है, सूत्र का तो बेटा! इतने मण्डलों का और भी अनन्य मण्डल हैं परन्तु देखो, इन मण्डलों का एक सौर मण्डल बन जाता है। बेटा! सौर मण्डलों की एक माला बनी है, इन देखो, लोकों की माला बनी सौर मण्डलों की माला बन जाती है और मुनिवरों! देखो, लगभग एक अरब छयानवें करोड़ उन्नतीस लाख उन्नचसवें हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग उनकी मानो देखो, इतने सौर मण्डलों की एक माला बन करके मेरे प्यारे! देखो, एक आकाश गंगा बनती है। आकाश गंगा का जब निर्माण हो जाता है, तो सम्भूति ब्रह्मणा वर्णसुतं ब्रह्मे जब ब्रह्म सूत्र का तुम पठन पाठन करोगे तो बेटा! यह तुम्हें दृष्टिपात आयेगा क्या एक अमृतं ब्रह्मा मेरे प्यारे! देखो, लगभग एक अरब छयासी करोड़ उन्नतीस लाख बावन हजार पांच सौ इक्कसठ के लगभग इतनी आकाश गंगाओं की बेटा! एक निहारिका बन जाती हैं। मेरे प्यारे! देखो, पौने दो अरब निहारिकाओं की एक अवन्तिका बन जाती हैं। तो बेटा! देखो, ऋषि वहाँ आ करके मौन हो जाता है। ऋषि मौन हो जाता है कि यह संसार इतना विचित्र है। क्या मैं कहाँ गणना करने के लिए जाऊं और क्या मैं सूर्यों की गणना कर सकता हूँ, क्योंकि मैं प्रभु राष्ट्र एक राई के तुल्य सामान्य मानो सूर्यों को दृष्टिपात कर रहा हूँ। मानो देखो, पृथ्वी भी बहुत सूक्ष्म है,

और मैं अपने में अभिमानी बना हुआ हूँ, परन्तु वह अभिमान की क्या गणना हो सकती है। तो मेरे प्यारे! देखो, प्रभु का अनन्तमयी जो यह ब्रह्माण्ड हैं इस ब्रह्माण्ड के ऊपर हमें विचार विनिमय करना चाहिए और यह ब्रह्माण्ड सर्वत्र मानो देखो, हमारे मन मस्तिष्कों में मानो विद्यमान होता है। मानो गागर में सागर की जब कल्पना करोगे तो मानो देखो, यह ब्रह्माण्ड शून्य बिन्दु में हैं, और बिन्दु मानो देखो, संसार में हैं, और संसार पुनः बिन्दु में प्रवेश हो जाता हैं। तो मेरे प्यारे! देखो, इसके ऊपर जब हम विचार विनिमय करते हैं, तो हमारा अन्तर्हृदय गद गद हो जाता हैं, और हम यह कहते हैं कि वेदाम् भूतं ब्रह्मा वेदों प्रमाणं ब्रहे व्रताः मानो वेद की जो यह पवित्र विद्या है। इसको जानने से हम ज्ञान और विज्ञान में रत्त हो जाते हैं। और ज्ञान और विज्ञान की चर्चाएं जब हम प्रारम्भ करते हैं तो हमारा अन्तरात्मा महान और पवित्रता में परणित हो जाता है। तो आओ, मेरे प्यारे! देखो, मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा न देता हुआ जब बेटा! शिकामकेतु उद्दालक के यहां इस प्रकार का निर्णय होने लगा उनकी विज्ञानशालाओं में एक परमाणु की माला बनी तो दूसरे परमाणु में पिरोई गई उन परमाणुओं की माला बनी तो मानो देखो, यह प्रकृति जगत दृष्टिपात आने लगा। इसी प्रकार बेटा! देखो, माता के गर्भस्थल में एक बिन्दु है, बिन्दु में शिशु है और शिशु मानो देखो, बिन्दुओं में जो माला है, उन मालाओं से पिरोया हुआ है, परमाणुओं की तरंगों की जो माला है। उस मालाओं से बेटा! देखो, मानवतव का निर्माण होता हैं, और वही मानो देखो, वह मानव के रूप में जगत में आता है। वही अनुसन्धान करता है, वही श्वासं भूतं प्रहे वह योग में परणित हो करके मानो देखो, संसार को अपने में दृष्टिपात करता है, और वह बेटा! अपने में सन्तुष्ट हो जाता है। अपने में ही अपनेपन को दृष्टिपात करता हुआ संसार रूपी सागर से पार होने का प्रयास करता है। तो मेरे प्यारे! देखो, परमात्मा के जगत में नाना वार्त्ताएं और नाना विषय है जिसके ऊपर मानव चिन्तन और मनन करने के लिए तत्पर रहे जिससे मानव का जीवन एक देवतव

बन जाएं। क्योंकि मानव को ही तो देवता बनाना है, और वह देवता जब बनता है जब वह परमात्मा की सृष्टि को निहारता है। परमात्मा के जगत में ओत प्रोत हो जाता है। मेरे पुत्रों! देखो, उसी में जब वह रत्त हो जाता है, तो अपने में ब्रह्माण्ड को और ब्रह्माण्ड को अपने में दृष्टिपात करके वह ब्रह्मवेत्ता बन करके बेटा! ब्रह्म को अपने में दृष्टिपात करता है। जैसे आचार्यों ने कहा है कि ब्रह्मणां ब्रह्मे लोकं जैसे ब्राह्मण कौन है? आचार्य कहता है ब्राह्मण कौन है? एक समय बेटा! देखो, महर्षि श्वेतकेतु के यहां जब ब्रह्मचारी गौतम अध्ययन करने के लिए आए तो गौतम से यह प्रश्न किया गया क्या ब्राह्मण कौन है? अमृतं देखो, इतने में महर्षि याश्काचार्य और मुनिवरों! देखो, व्रेतं भूतं ब्रव्हा मानो देखो, दाण्डवत ऋषि महाराज वहाँ पधारे और दण्डेत्वर ऋषि ने कहा कि महाराज! इस संसार ब्रह्मे व्रतं ब्राह्मण कौन है? तो कहता है कि ब्राह्मण वह कहलाता है, जो एक एक कण कण में ब्राह्मण, परमपिता परमात्मा ब्रह्म को दृष्टिपात करता है, और दृष्टिपात करके जो अपने में ही मानो देखो, वह अपने में ही ब्रह्म को दृष्टिपात करता है। तो वह ब्राह्मण कहलाता है। आगे कहता है कि महाराज! ब्रह्मचारी कौन है? ब्रह्मणां ब्रह्मे क्योंकि आपके यहां पर ब्रह्मचारी अध्ययन करते हैं, यह ब्रह्मचारी कौन है? तो उन्होंने पुनः कहा कि पहले ब्राह्मण का प्रश्न करो उन्होंने पुनः कहा कि महाराज! यह ब्राह्मण कौन है? उन्होंने कहा कि ब्राह्मण वह है, जो अपने को कर्मकाण्ड युक्त हो करके और उस कर्म को मानो देखो, ब्रह्म में पिरोने वाला है। ब्रह्म को जो अपना सूत्र स्वीकार करता हैं, और अपने प्रत्येक कर्म को उसमें पिरोता है तो वह ब्राह्मण है पुनः प्रश्न किया कि महाराज! ब्राह्मण कौन है? उन्होंने कहा कि ब्राह्मण कौन है? ब्राह्मण वह है कि जो परमात्मा की सृष्टि को निहारता रहता है। मानो देखो, नेत्रों में ब्रह्म को दृष्टिपात श्रोत्रों में ब्रह्म को दृष्टिपात मानो देखो, वह घ्राण में भी ब्रह्म है, और रसना में भी ब्रह्म है, त्वचा में भी ब्रह्म है, और ब्रह्म का ही विषय बन करके बेटा! देखो, एक सूत्रों को जो साकल्य बनाना जानता है, और हृदय रूपी यज्ञशाला में वह याग

करना जानता है, वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने बड़ा ऊर्ध्वा में यह विचार दिया परन्तु देखो, अमृतं ब्रह्मा वृतं असुतं देवत्वां तो उन्होंने पुनः कहा कि प्रभु! मैंने जो तीन प्रश्न किए हैं। उन्होंने कहा इन तीन प्रश्नों में सर्वत्र जगत निहित रहता हैं, ब्राह्मणां ब्रह्मे व्रतं देखो, जो ब्रह्म सूत्र है, वह ब्रह्म सूत्र में ही तो मुनिवरों! देखो, वह जगत पिरोया हुआ है, ऐसा उद्गीत गा करके ऋषि मौन हो गएं। जब ऋषि मौन हो गया तो ऋषि ने प्रश्न किया कि महाराज! ब्रह्मचारी कौन है? क्योंकि आपके आश्रम में ब्रह्मचारी अध्ययन करते हैं, उन्होंने कहा कि ब्रह्मणां ब्रहा कृतं मानो देखो, ब्रह्मचारी वह है जो अपने को ब्रह्म चरी का पालन करता है चरी कहते हैं प्रकृति को जो प्रकृति के नियमों का पालन करता है। मानो देखो, वह ब्रह्मचारी है। प्रकृति के नियम जितने भी हैं, वह सर्वत्र मानो देखो, चरी कहलाते हैं। उनमें जो चरने वाला है उनमें जो विचरण करने वाले को ब्रह्मचारी कहते हैं जब पुनः आचार्य कहता है कि महाराज! ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी वह है, जो ब्रह्म और चरी को एक सूत्र में पिरो देता है, मानो देखो, ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को और चरी कहते हैं प्रकृति को मानो देखो, जो ब्रह्म को चरी में चरी को ब्रह्म में और ब्रह्म को चरी में मानो स्वीकार करता हुआ, मेरे प्यारे! देखो, जब प्रभु का चिन्तन करता है, चरी को जानने लगता है बेटा! तो वह ब्रह्मचारी है, ब्रह्मणां ब्रह्मा चरिष्यामि देव प्रव्हा लोकां आगे वेद का ऋषि कहता है कि ब्रह्मचारी कौन है? जब यह प्रश्न किया गया कि ब्रह्मचारी कौन है? तो वह कहता है क्या जो मानो देखो, अपने जीवन को अपने शरीर को वह ब्रह्म से सजातीय बना लेता है, उसके प्रत्येक अङ्ग से मानो देखो, ब्रह्म की सुगन्धि आने लगती है, वह जहां भी विद्यमान होता है नवीन प्रकाश होता है। द्वितियों को प्रकाश में दृष्टिपात होने लगता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! पुनः जब यह प्रश्न किया कि महाराज ब्रह्मचारी कौन है? वह कहता है कि ब्रह्मचारी वह है जिसका मानो देखो, प्राण, अपान में अपान व्यान में और व्यान समान में और समान उदान में प्रवेश होता है, तो यह

मानो देखो, तीनों मनके पांच मनके एक सूत्र में पिरो करके और जो प्रत्येक श्वांस के साथ में प्रत्येक श्वांस का मनका बनाना जानता है, और मनका बना करके मानो उसका सूत्र ब्रह्म को स्वीकार करके जो उस माला को जो धारण करता है। वह ब्रह्मचारी कहलाता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार वाक प्रगट किए तो वह अपने में मौन हो गएं चिन्तनं ब्रह्मा कृतं देवाः वह कहता है कि ब्रह्म की चरी को भी वही चरने वाला है, तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने यह कहा कि मेरे आश्रम में यह ब्रह्मचारी अध्ययन करते हैं। परन्तु उनको प्रयास करता हूँ कि प्रत्येक इन्द्रियों का इन्द्रियों का विषयों का साकल्य बनाया जाएं और साकल्य बना करके मानो देखो, मधु, सुगन्धित और रोगनाशक इस प्रकार का साकल्य जब इन्द्रियों से उत्पन्न हो जाता है। उनका साकल्य बना करके हृदय रूपी यज्ञशाला में जब वह हूत करता है, तो वह स्वाहाः कहता है, तो परमात्मा के हृदय से उसके हृदय का देखो, दोनों का समन्वय हो जाता है दोनों का समन्वय हो जाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, वह ब्रह्म में प्रवेश कर जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा प्रगट नही करूंगा क्योंकि आज का हमारा वेदमन्त्र यह उद्गीत गा रहा है वेदमन्त्र नाना प्रकार की वार्त्ताएं प्रगट कर रहा है। मैं आज तुम्हें बहुत सूक्ष्मतम विषय में ले गया हूँ, विचार विनिमय ये हो रहा था कि रक्षतां ब्रह्मा वह जो विष्णु है, मैं विष्णु सूक्तों की वार्ता प्रगट कर रहा था, क्या विष्णु सूत्र मेरे प्यारे! जो ब्रह्म में पिरोया जाता है। ब्रह्मणं ब्रह्मे जो रक्षा करने वाला है। हमारे यहां पर्यायवाची शब्दों में बेटा! विष्णु नाम परमात्मा का है, विष्णु नाम माता का है, विष्णु नाम राजा का है, विष्णु यज्ञोमयी विष्णु और विष्णु नाम सूर्य का है। यहां भी रक्षा का प्रसंग आता है, वहीं मुनिवरों! देखो, विष्णु शब्द आता है। सूर्य का नाम भी विष्णु है, जो नाना प्रकार की किरणों से मानव की रक्षा करता है प्राणी मात्र की रक्षा करता है इसी प्रकार रक्षतां रक्षं ब्रह्मणं मानं सम व्रतम् देवाः यह रक्षा करने वाला मानो देखो, कौन विष्णु कहलाता है? माता

अपने गर्भ के ले करके पांच वर्ष की अवस्था तक उसे मानो पवित्र बना देती है। सुयोग्य बना देती है। माता का नाम विष्णु है। मेरे प्यारे! जो रजोगुण से सतोगुण में ला देती है, सतोगुण को ब्रह्म में प्रवेश करा देती है, तो माता कहलाती है तो मेरे पुत्रों! देखो, इस प्रकार आचार्यों ने अपनी विवेचना देते हुए कहा क्या हम परमपिता परमात्मा की महती उसकी अनन्तता और मानो देखो, उसका जो ज्ञान और विज्ञान है, वह बड़ा अनन्तमयी माना गया है हम उसके ज्ञान और विज्ञान को दृष्टिपात करते रहते हैं, बेटा! सूर्य कैसे रक्षा कर रहा है? मुझे स्मरण आता रहता है बेटा! विज्ञान वेत्ताओं ने महर्षि भारद्वाज मुनि के यहां ब्रह्मचारी सुकेता ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी कवन्धि और पणपेतु ऋषि महाराज मानो देखो, जब विद्यालय में अध्ययन करते थे वेदमन्त्रों का, तो वेदमन्त्रों में आता रहा है क्या सूर्य जब अपनी किरणों को देता है, तो मानो देखो, ऊर्ज्वा से सनी हुई ऊर्ज्वा से ओत प्रोत मानो देखो, उसमें प्राणवर्धक जो तत्त्व होते हैं उनको ले करके पृथ्वी मण्डल पर आती है, नाना पृथ्वियों की माला अपने में धारण करता है। तो मानो देखो, जिस भी काल में विकृतता आ जाती है, विज्ञान पराकाष्ठा पर चला जाता है, तो उसमें मानो विकृतता पूर्व में आ जाती है। मानो प्रकृति के नाना प्रकार के प्रकोप होने लगते हैं, और वह प्रकोप इसीलिए होते हैं क्योंकि वह उनका जो खनिज है मानो उसका सदुपयोग न होने से, मेरे प्यारे! देखो, उसमें नाना प्रकार वृत्तियां और छिद्रां ब्रहे ब्रहा छिद्र उसमे उत्पन्न प्रवेश अग्रति हो जाते हैं। तो बेटा! मैं इस सम्बन्ध में विज्ञान के युग में नही ले जा रहा हूँ, विचार विनिमय में केवल ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, और परमपिता परमात्मा के इस अमूल्य जगत को जानने वाले बनें, और जान करके ही मुनिवरों! देखो, मानव में मानवता का प्रसार होता है, योगी जब अपने अन्तर्हृदय में हृदय में जब ये साकल्य बनाना जान लेता है, और उसका याग करना जानता है तो बेटा! वह योगी कहलाता है, और जो इनकी माला को जानने लगता है, एक दूसरे की माला को ऐसे पिरोई जाती

है, तो बेटा! वह वैज्ञानिक बन जाता है। और विज्ञानवेत्ता मानो देखो, इसको सबको चरने वाले को वह ब्रह्मचरिष्यामि वह ब्रह्म चरी बन करके बेटा! देखो, ब्राह्मण कहलाता है। और जो ब्राह्मण को भी चरने वाला है। बेटा! वह एक एक कण का मनका बना करके वह ब्रह्म सूत्र में पिरो करके मेरे प्यारे! देखो, अपने को देखो, ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म में सदैव मानो देखो, अपनं ब्रह्मा वह हृदय को ग्राही को बना करके वह परमात्मा के हृदय में प्रवेश करता हुआ, बेटा! परमात्मा को प्राप्त हो जाता है।

तो आओ, मेरे प्यारे! मैं आज इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा तुम्हें प्रगट करने नही आया हूँ मैं कोई व्याख्याता नही हूँ, केवल तुम्हें परिचय देने के लिए चला आता हूँ, और वह परिचय क्या है, कि हम परमपिता परमात्मा की महती को जानते हुए अपने में आध्यात्मिक और भौतिकवाद को जानते हुए ब्रह्मवेत्ता बन करके बेटा! अपने को ब्रह्मणां ब्रह्मा व्रतं मानो देखो, ब्रह्म को अपने में जान करके अपने में सन्तुष्ट रहना चाहिए। यह है बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह क्या हम मुनिवरों! देखो, यज्ञनं ब्रह्मा मानो देखो, विष्णु ब्रह्मा मानो देखो, विष्णु को जाने और विष्णु जो रक्षा करने वाला है, उस रक्षा करने वालों में परमात्मा है। माता है, सूर्य है, आत्मा है, क्योंकि आत्मा इसीलिए रक्षक है। जब तक यह पञ्च महाभूतों के लोक में रहता है। तब तक यह अपने क्रियाकलाप करता रहता है। आत्मा के निकट जाने के पश्चात यह पञ्च महाभूतों का जो लोक है। यह अपने अपने स्वरूप में प्रवेश हो जाता है। तो मुनिवरों! देखो, आत्मा इस शरीर की रक्षा करता है। इसीलिए आत्मा विष्णु है और सूर्य विष्णु के रूप में जो ऊर्ज्वा देता है, और देखो, यह चन्द्रमा में चन्द्रमा के द्वारा अपनी आभा दे करके इसको मानो देखो, उसको शीतलता प्रदान करता है। उस शीतलता से अमृत बनता है। अमृत बन करके बेटा! समुद्रों को अपने में धारण करने वाला है तो यह है बेटा! आज का वाक अब मैं

समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट की सकूंगा आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मानो देखो, मानव अपनी मानवता की आभा में परणित हो जाएं। अपने को जानने लगे बेटा! यही वेद का सन्देश है और यह वेद का वाक हमें नाना प्रकार के अवृत्तियों में ले जाता है उसके साथ यह वाक समाप्त अब समय मिलेगा मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा अब वेदों का पठन पाठन । ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गतं आप्यां लोकाः। ओ३म् तनु मां रेवं मना वाचन्नमाः वाया। ओ३म् रथं मन्था वायु गतं मा देवाः।

9. विष्णु की विवेचना-920804

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हे प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेदमन्त्रों का पठन पाठन किया, हमारे यहाँपरम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में, उस परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी है, और यज्ञोमयी स्वरूप माने गएं हैं। याग उसका आयतन है, उसका गृह उसका सदन है, और वह प्रायः उसी में वास करता रहता है। तो वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप क्योंकि वह निर्माण करने वाला है, इस संसार रूपी यज्ञशाला का उसी ने निर्माण किया है। मानो जितने होता हैं, अध्वर्यु हैं। उद्गाता है ब्रह्मा और पुरोहित जन है, जिनके द्वारा यह संसार रूपी यज्ञशाला संचालित हो रही है। अथवा उसका क्रियाकलाप चल रहा है। तो विचार आता है कि वे परमपिता परमात्मा अनुपम है, और एक एक कण कण में वह याग कर रहा है। कोई भी स्थली ऐसी नही हैं, जहां वे परमात्मा न हो साधक जब अपनी स्थली पर विद्यमान होता है, तो साधक यही विचारता है कि मैं कहां जाऊं? जहां मेरा मन जाता है। जहां भी प्रतिभा जाती है। वही वे परमपिता परमात्मा विद्यमान है। कोई स्थली ऐसी नही, जहां हम पापाचार, अनाचार के विचार अपने मन में ला सकूं, यदि हम गम्भीरता से उस परमपिता परमात्मा को जान लेते हैं, परन्तु जब हम उसे जान नही पाते, तो अज्ञान व्याप्त हो जाता है। तो वह अज्ञान नही रहना चाहिए। इसीलिए वेद का मन्त्र कहता है, यज्ञनं ब्रह्मा यज्ञसुताः क्या वह जो परमपिता परमात्मा है, वह यज्ञमयी स्वरूप है, और वह यज्ञमयी माना गया है। परमपिता परमात्मा ने जब संसार का सृजन किया और साधको ने इस संसार में विचार विनिमय किया तो इस संसार में भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद दोनो ही रूपों से इसका निरूपण किया है। और ये विचारा है कि वह परमपिता परमात्मा तो

ज्ञान और विज्ञान में निहित रहने वाले हैं। और जब वैज्ञानिकों ने इसको विचारा, तो तीन प्रकार के परमाणुओं को ले करके मानो इसके विज्ञान की रचनाओं में लगे, जितना भी विज्ञान है, चाहे वह मानो अस्त्रों शस्त्रों का निर्माण है, चाहे वे और भी यन्त्रों का निर्माण है, चाहे वे अन्तरिक्ष में रमण करने वाला यान हो, चाहे वह पृथ्वी के गर्भ में समुद्रों की तरंगों में रमण करने वाला क्यों न हो, परन्तु उसमें तीन प्रकार की प्रतिभा होती है। परमाणु होते हैं, और उन परमाणुओं से नाना प्रकार के यन्त्रों का निर्माण करता है। तो सबसे प्रथम मानो तेजोमयी, तरलतव और गुरूतव यह तीन प्रकार के परमाणु हैं। इन परमाणुओं को गति देने वाली वायु है, और अवकाश में यह रमण करते रहते हैं जिसे अन्तरिक्ष कहते हैं, तो मेरे प्यारे! विज्ञानवेत्ता पृथ्वी के गर्भ में जाते हैं, तो नाना प्रकार का खाद्य और खनिज उन्हें दृष्टिपात आने लगता है जब अन्तरिक्ष में रमण करते हैं। तो परमाणु एक दूसरे में संघर्ष होते हुए दृष्टिपात आते हैं, परन्तु जब स्वः मे जाते हैं, तो वहां परमाणु अपने में लय हो जाते है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि मुनियों ने एक वेद के मन्त्रों के ऊपर विचार विनिमय किया आज मैं इस सन्दर्भ में नही ले जा रहा हूँ। केवल विचार विनिमय यह कि वे परमपिता परमात्मा विष्णु है, हमारे यौगिक आचार्यों ने जब दो शब्दों के ऊपर विचार विनिमय किया, एक शब्द रूढ़ि होता है, एक यौगिक होता है। जैसे विष्णु शब्द है, वह यौगिक शब्द है, और विष्णु का शब्द वहां प्रयोग किया जाता है जहां रक्षा का सम्बन्ध हैं। जहां भी रक्षा का मूलक है, वही यौगिकवाद है। मेरे प्यारे! देखो, वह विष्णु नाम हमारे यहां परमपता परमात्मा का जो रचना करता हुआ, पालन कर रहा है। और विष्णु नाम माता का है, जो हमारा पालन करने वाली है और विष्णु नाम सूर्य का है, जो ऊर्ज्वा दे करके प्रकाशक बना रहा है, और विष्णु नाम राजा का है। जो पालक है, प्रजा में अनुशासन और स्वयं अनुशासन में रहता है, और यज्ञोमयी विष्णु विष्णु नाम यज्ञ का है। क्योंकि याग नाना प्रकार की ऊर्ज्वा को मानो शान्तं ब्रह्मा वर्णसुतं वह प्रदूषण को समाप्त करता है। ऊर्ज्वा

को देता है तो यहां आत्मा का नाम भी विष्णु है, क्योंकि आत्मा शरीर में, जब तक है, ये चेतनित रहता है। शरीर क्रियाशील रहता है परन्तु जब आत्मा इससे निकस जाता है, तो क्रिया शून्य हो जाता है। तो इसी प्रकार विष्णु शब्द कहां आता है, विष्णु कहते हैं, जो पालन करने वाला है पालना के मूल में कौन है विष्णु है। तो हम विष्णु की याचना करते रहते हैं। विष्णु भवितं ब्रह्मा विष्णु वेद का वाक कहता है, देखो, विष्णु की महिमा का वर्णन करता है, हमारे आचार्यों ने देखो, बेटा! विष्णु शब्द का बड़ा ऊर्ध्वा में विश्लेषण किया है। परन्तु आज मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चा नही, केवल ये कि यज्ञोमयी विष्णुः मेरे प्यारे! देखो, राजन्नमं ब्रव्हा मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है क्या प्रत्येक रूप में बेटा! यज्ञ ऋषि मुनियों ने बेटा! बड़ा अनुसन्धान किया है और उन्हें रूढ़ि से यौगिक और रूढ़ि को यौगिक में दोनों को एक दूसरे में कटिबद्ध किया है और वह कटिबद्ध क्या मैं आज तुम्हें एक ऋषि के आसन पर ले जाना चाहता हूँ जहां ऋषि मुनियों की चर्चाएं होती रही है और उनका विचार विनिमय होता रहा है बेटा! याग के सम्बन्ध में याग को भी कहीं आध्यात्मिकवाद में तो कहीं भौतिकवाद को आध्यात्मिकवाद में कटिबद्ध किया है, क्योंकि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों एक दूसरे के पूरक कहलाते हैं तो अथवा एक दूसरे में रत्त हो करके बेटा! अपनी क्रियाओं में रत्त होते रहते हैं। तो विचार आता रहता है बेटा! भौतिकवाद और आध्यात्मिकवाद दोनों रूपों ही मानव अपने में विचार विनिमय करता रहा है, राष्ट्रवाद में जब हम मानो राष्ट्र में जब आध्यात्मिक और भौतिकवाद दोनों को दोनो उन्नत होते हैं तो मुनिवरों! देखो, राष्ट्र अपने में भव्यता को प्राप्त होता है, और वही विज्ञान बेटा! देखो, जब विद्यालयों में आचार्यों के समक्ष जाता है। तो आचार्य ब्रह्मचारियों को याग के द्वारा मृत्यु से पार करा देते हैं। मृत्युंजम ब्रह्मा यागाः यह आचार्य कहता है हे ब्रह्मचारी! आओ तुम्हें मैं मृत्यु से पार करना चाहता हूँ। बेटा! वह याग के पात्रों से मैं तुम्हें निर्णय कराता रहता हूँ। बेटा! आज मैंने तुम्हें कई कालों में नाना प्रकार की चर्चाएं की हैं, अथवा विचार

विनिमय किया है आज मैं तुम्हें विशेष विचार तो तुम्हें देना नही चाहूँगा, केवल यह कि हमारा वेदज्ञं ब्रह्मा वे परमपिता परमात्मा यज्ञोमयी स्वरूप है। वह सृष्टि का रचयिता विष्णु है। पालन कर रहा है। मेरी प्यारी माता का नाम विष्णु कहलाता है। क्योंकि माता जब लोरियों का पान कराती है, तो वह पालक बनी हुई है, और पालना कर रही है। तो उसका नाम विष्णु है। मेरे प्यारे! विष्णु नाम सूर्य का है। प्रातःकाल में मानो देखो, रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है, अन्धकार को अपने में धारण करके मानो देखो, ऊर्ज्वा दे करके प्रकाश देता है। वह प्रकाशक है, और प्रकाश ही पालना का मूल है। मेरे प्यारे! देखो, पालना के मूल में ब्रीहि है और जब यह अमृतं ब्रह्मा यज्ञं ब्रहे वे परमपिता परमात्मा का याग मुनिवरों! देखो, जब आत्मा इस शरीर में व्याप्त रहता है तो वह मानो नाना प्रकार के क्रियाकलापों में रत्त रहता है। परन्तु जब आत्मा इसके निकट जाता है, आत्मा शरीर का दोनों का विच्छेद हो जाता है। तो शरीर में नेत्र होते हुए एक प्रकाश से शून्य रहता है वाणी होते हुए वाक नहीं उच्चारण कर सकता, नासिका होते हुए सुगन्ध को नही ग्रहण कर रहा है, नेत्र होने से दृष्टि नही पात कर रहा है। बेटा! देखो, कौन है, पालक कौन है मुनिवरों! देखो, जो इसमें वास करके चैतन्य बना रहा वह आत्मा है। मेरे प्यारे! देखो, ऋषि कहता है कि आत्मा को जानने का प्रयास करो। हे मानव! तू प्रातःकाल से सांयकाल तक उदर की पूर्ति करने में लगा रहता है। नाना प्रकार के क्रियाकलाप करता रहता है परन्तु जिसके कारण तेरा ये यन्त्र गति कर रहा है और जिससे तू गतिवान हो रहा है, उस आत्मा के लिए कोई प्रयत्न नही करता ये अज्ञान है तो मानो देखो, आत्मा को जानने के लिए, मानव को कोई न कोई अपने में अपनेपन को धारण करना चाहिए। तो विचारवेत्ताओं ने कहा ब्रह्मणे आत्मां भूतं ब्रह्मा कि इस आत्मा को जानने का प्रयास करो, मेरे प्यारे! देखो, आत्मा विष्णु है आत्मा शाश्वत है मुझे एक समय हम कुछ ऋषि मुनियों की चर्चाओं में अपने तन्मय रत्त हो गएं तो महर्षि कौटिल्य ऋषि ने कहा था, कौटिल्य ने कहा

कि यह जो विष्णु है, यह आत्मा है। मानो देखो, यह विष्णु अक्षय क्षीर सागर में रहता है। तो उन्होंने बेटा! एक अलंकार को एक शब्द कटिबद्ध किया तो मेरे प्यारे! विष्णु चार भुजों वाला है, और वह अक्षय क्षीर सागर में रहता है। अक्षय क्षीर सागर नाम मानो देखो, नारद अपनी वीणा को लिए हुए रहता है। और गन्धर्व गान गा रहा है, मेरे प्यारे! लक्ष्मी चरणो में ओत प्रोत है। वेद का ऋषि इस सम्बन्ध में उद्गीत गा रहा है। मेरे प्यारे! देखो, आत्मा जब अक्षय क्षीर सागर में विद्यमान होता है। जब यह अक्षय क्षीर सागर नाम बेटा! ज्ञान और विवेक को कहा जाता है। जब ज्ञान और विवेक हो जाता है। जो यह नारद है, नारद नाम बेटा! मन का है। जो अपनी चञ्चलता को ले करके अपनी वीणा को शान्त कर देता हैं। चञ्चल रूपी वीणा को लिए हुए यह आत्मा रूपी विष्णु के चरणो में रहता है, और गन्धर्व नाम बुद्धि का है, यह गान गाने लगती है। विष्णु का मेरे प्यारे! शेष नाग की शैय्या पर विद्यमान है। शेष नाग कौन है? बेटा! काम, क्रोध, मद, लोभ, मद इत्यादि यह चेतना में इसको योगी अपने नीचे दबा करके बेटा! उसके विश्राम करता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब विश्राम करता है। तो लक्ष्मी चरणों में ओत प्रोत हो जाती है, और वह वन्दना करने लगती है। बेटा! जिस लक्ष्मी के रूप में मानो देखो, संसार अपने में ही मानो देखो, अपनी नाना प्रकार की वृत्तियों में रत्त रहता है। तो मुनिवरों! देखो, विष्णु नाम आत्मा का है। इस आत्मा को जानने वाल यह आत्मवेत्ता बन करके ही बेटा! आत्मा की पुकार में आत्मिकता को अपने में प्राप्त कर लेता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा आत्मां भूतं ब्रह्मा आत्मा देवत्वां विष्णु यह आत्मा विष्णु है, जो मुनिवरों! आत्मा को जो नही जानता वह वृत्ति कहलाता है, वह अज्ञान में रत्त रहता है। अरे, कैसा आश्चर्य पञ्च महाभूतों में रहने वाला इस पञ्चीकरण में आत्मा विद्यमान हैं। परन्तु आश्चर्य यह कि इस शरीर को नही जानता, जिसमें यह पञ्च महाभूत में विद्यमान रहता है। क्योंकि इसीलिए नही जान पाता क्योंकि यह परोक्ष है, यह शाश्वत है, और यह बाह्य जगत से बाह्य इन्द्रियों से वर्णन नही किया जाता।

तो मेरे प्यारे! देखो, आत्मा का नाम विष्णु है, और विष्णु नाम सूर्य का है, सूर्य प्रातःकाल में उदय होता है, प्रकाश को ले करके आता है। रात्रि को अपने गर्भ में धारण कर लेता है। यहां बेटा! रात्रि नाम अहिल्या को कहा गया है, और देखो, गौतम नाम चन्द्रमा को कहा गया है। गो कहते हैं बेटा! अन्धकार को और तम कहते हैं। प्रकाश को तो गौतम देखो, रात्रि के अन्धकार को अपने में धारण करता रहता है। मेरे पुत्रों! देखो, जब धारण करता है, तो अहिल्या का नाम रात्रि और इन्द्र मानो देखो, इन्द्र इनको दोनों को वह अपृतं मानो वह चन्द्रमा समिधा बन जाता है, और रात्रि मानो देखो, इसको इन्द्र के गर्भ में प्रवेश हो जाती है। तो मेरे प्यारे! यहां इन्द्र नाम सूर्य का है, और चन्द्रमा नाम गौतम का है। रात्रि को अहिल्या कहा जाता है। तो वेद का ऋषि कहता है अलंकारं भूतं ब्रव्हे इस आलांकारिक भाषा को जानना चाहिए अलंकारों को मानो साहित्यिक रूप नही लेना चाहिए, न यह साहित्य रहेगा, और न अलंकार रहेगा। तो इसीलिए हमें विचारना चाहिए कि हमारा देखो, विष्णु नाम सूर्य का है। जो विष्णु देखो, नाना प्रकाश को ले करके आता है। रात्रि को अपने में धारण अन्धकार को नष्ट कर देता है, और प्रकाश में ले जाता है। समाज को मानो यह जगत संसार में निहित हो जाता है। तो विचारवेत्ताओं ने कहा कि विष्णुं ब्रहे यह प्रातःकाल से ले करके सांयकाल तक मेरे प्यारे! नाना प्रकार की ऊर्ज्वा बिखेरता रहता है, और कहीं यह पृथ्वी के गर्भ में नाना प्रकार के खनिज और खाद्य को तपाता रहता है। और कहीं जल को शक्तिशाली बनाता है। तो कहीं स्वर्ण जैसी धातु का निर्माण कर रहा है। कहीं रत्नों की धातु का निर्माण हो रहा है, हे मां वसुन्धरं तू प्रथम ब्रह्मा लोकां तू वसुन्धरा है। मानो तेरे गर्भ में नाना प्रकार का खाद्य और खनिज पदार्थ विद्यमान रहता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह कौन सूर्य निर्माण कर रहा है रत्नों का निर्माण हो रहा है, कहीं जल को शक्तिशाली बनाया जा रहा है, चन्द्रमा और सूर्य की किरणों के द्वारा वही वाहनों में क्रियाकलाप कराता रहता है। वाहन गति करने लगते हैं। उसी जल

की सहायता से वह जल सूर्य की नाना प्रकार की किरणों से वह पालक बना हुआ है, इसीलिए हमारे यहां विष्णु नाम बेटा! सूर्य को कहा गया है। तो वेद का ऋषि कहता है, सम्भवं ब्र्व्हे देवां देखो, वह विष्णु नाम राजा का है, कौन से राजा का नाम विष्णु है। आओ बेटा! देखो, मैं आज तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ। जहां बेटा! देखो, राम प्रातःकालीन याग करते थे तो उसमें कर्मकाण्ड की पद्धति में सर्वश्रेष्ठ एक क्रियाकलाप माना गया है। जो अग्नि देवताओं का मुख है और देवता अग्नि के मुख में मानो जो चरू साकल्य प्रदान किया जाता है, वह देवताओं को प्राप्त होता है। देवता जब उसे अपने में ग्रहण करते हैं, पृथ्वी ग्रहण करती है, तो नाना प्रकार के व्यंजनों वाली बन जाती है। वनस्पतियां पान करती है तो नाना प्रकार का औषध देती है, नाना प्रकार के रसों में रसित बन जाती हैं। तो विचार आता है कि वह अप्रतं है मेरे प्यारे! देखो, अम्ब्रहा कृति देवाः तो वसुन्धरं ब्रह्मा लोकां वचस्सुतं देवत्वां तो मेरे प्यारे! देखो, यह विष्णु ब्रह्मा ब्रहे यह हमारे यहां मुनिवरों! देखो, नाना प्रकार के आभा में परणित करने वाला यह जगत है, और मुनिवरों! देखो, राजा के राष्ट्र मंत्र राजा का नाम भी विष्णु है। जो मुनिवरों! देखो, राजा देखो, मुझे देखो, भगवान राम का जीवन जब स्मरण आता है, तो प्रातःकालीन वह अपनी यज्ञशाला में विद्यमान हैं। नाना ब्रह्मवेत्ता एक स्थली पर हैं एक पंक्ति लगी हुई ब्रह्मवर्चोसि की एक पंक्ति लगी हुई है। ब्रह्मचारियों की द्वितीय पंक्ति लगी हुई है, मेरे प्यारे! देखो, तीन प्रकार के ऋषियों का आगमन होता रहता है। सबसे प्रथम ब्रह्मवेत्ता वह है जो ब्रह्म को अपने में अपने को ब्रह्म में स्वीकार करता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्म को अपने में ही दृष्टिपात करता रहता है, और द्वितीय ब्रह्मर्चोसी है, ब्रह्म वर्चसुतं जो ब्रह्मवर्चोसि बेटा! देखो, एक ऋषि जब प्रश्न करता है कि ब्रह्मवेत्ता कौन है? ब्रह्मवर्चोसि कौन है? मुनिवरों! वह कहता ब्रह्मवर्चोसि जो ब्रह्म जो चरता है अथवा ब्रह्म को धूने वाला है, जैसे कामधेनु गऊ को धू करके मानो उसके दुग्ध की अपने में धारयामि बनाता है। पौष्टिक बनता है। इसी प्रकार देखो, ब्रह्मवर्चोसी

वह जो ब्रह्म के आभा और उसकी कृति को निहारता रहता है, और अपने में मानो उसका व्यवधान करता रहता है, वह ब्रह्मवर्चोसि है। वेद कहता है कि ब्रह्मचारी कौन है? वह कहता है कि ब्रह्मचारी वह जो अपने ब्रह्मवर्चोसी की रक्षा करता है उन्होंने पुनः कहा कि ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने द्वितीय उत्तर देने वाला देता है कि ब्रह्मचारी वह है जो ब्रह्म और चरी को जानने वाला है। ब्रह्म कहते हैं परमात्मा को चरी कहते हैं प्रकृति को जो दोनों को अङ्गो और उपांगों से जानने वाला है। वह ब्रह्मचारी है। उन्होंने पुनः कहा कि वह ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा ब्रह्मचारी ब्राह्मण है कौन जो सत्य को ही दृष्टिपात करता रहता है। जो ब्रह्मणे लोकां वाचसुतं देवत्वां वेद का वाक कहता है, ब्राह्मण वह है जो ब्रह्म को अपने में और अपने को ब्रह्म को जो दृष्टिपात करने वाला है। वह ब्राह्मण कहलाता है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणां ब्रव्हे कृतं देवाः जो सत्यमयी सत्य रत्त रहने वाला है। पुनः प्रश्न कर्त्ता कहता है क्या ब्रह्मचारी कौन है? उन्होंने कहा कि ब्रह्मचारी वह जो एक एक श्वांस का मनका बना लेता है, और मनका बना करके, ब्रह्म सूत्र में पिरोता है, वह ब्रह्मचारी कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो, ऋषि ने नाना प्रकार के प्रश्न उत्तरो में, सर्वत्र ब्रह्माण्ड को मापने का प्रयास किया। तो विचार आता रहता है, कि साधक अपने में साधना करता रहता है। परन्तु आज मैं बेटा! दूरी न चला जाऊं, मैं भगवान राम की चर्चा कर रहा था, कि मैं त्रेता के काल में, जहां मुनिवरों! देखो, ब्रह्मचारी ब्रह्मवर्चोसि और ब्रह्मवेत्ता बेटा! देखो, तीन प्रकार की श्रेणी के मानो देखो, ब्रह्मचारियों की पंक्ति लग जाती है यज्ञशाला में, तो प्रातःकालीन बेटा! वह याग करते और याग के पश्चात उनकी उपदेश मंजरी प्रारम्भ होती। और उपदेश मंजरी क्या प्रारम्भ, एक समय उपदेश उन्होंने प्रारम्भ किया, क्या हमारे यहां राजा का नाम विष्णु है, जब विष्णु की याचना हो रही थी और विष्णु शब्द का प्रतिपादन हो रहा था, तो उन्होंने कहा कि राजा का नाम विष्णु है और विष्णु के मानो देखो, चार भुज कहलाते हैं। राम ने कहा कि जो विद्यालयों में अध्ययन करते थे, तो महर्षि वशिष्ठ मुनि महाराज ने

मुझे देखो, जब विष्णु शब्द की विवेचना की तो विष्णु मानो देखो, अन्तरिक्ष में गमन करने वाले तारामण्डलों का नाम विष्णु कहा जाता है। क्योंकि वह यौगिक शब्द है, और राजा का नाम विष्णु है जो प्रकाश का द्योतक है। जितेन्द्रिय राजा होना चाहिए उन्होंने कहा राजा वह विष्णु कहलाता है। जिस राजा के चार भुज होते है, विष्णु के चार भुज कहलाते हैं। बेटा! चार भुजों में क्या सबसे प्रथम भुज मे पदम होता है, और द्वितीय भुज में गदा होती है, और तृतीय में चक्र होता है, चतुर्थ में शङ्ख होता है। तो मेरे प्यारे! देखो, यह चार प्रकार के नियम राजा के राष्ट्र में होते हैं। मानो देखो, इसी प्रकार जैसे परमात्मा की चार प्रकार की सृष्टि कहलाती है, सबसे प्रथम स्थावर सृष्टि और द्वितीय सृष्टि का नाम अण्डज है, और तृतीय का नाम जंगम है, और चतुर्थ का नाम देखो, वह उद्भिज कहा जाता है। यह चार प्रकार की सृष्टि प्रभु की है। वह चार प्रकार के नियमों से इस प्राणियों की रक्षा करता है। उनकी उत्पति के मूल में रहता है। इसी प्रकार चार प्रकार के राजा के राष्ट्र में मानो देखो, नियमावली होती है। इसीलिए वह विष्णु का भुज कहलाता है। भुज का अभिप्राय यह है कि नियम होने चाहिए सबसे प्रथम भुज में मुनिवरों! देखो, पदम होता है, जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र होता है, वह राष्ट्र ऊँचा होता है पदम कहते हैं। बेटा! देखो, चरित्र को देखो, प्रतीक वही कहलाता है। अमृतं ब्रह्मा वृतं देवत्वां वेद का वाक कहता है क्या राजा जब जितेन्द्रिय होता है तो उसके एक भुज में एक नियम में मानो चरित्र होता है, और पदम होता है, पदमं ब्रह्मा देखो, एक कन्या छोर से राष्ट्र से द्वितीय छोर से चली जाएं, उसको पुत्री और भोजाई की दृष्टिपात करने वाला समाज होना चाहिए। इस प्रकार का मुनिवरों! देखो, एक नियम प्रथम होना चाहिए द्वितीय नियम मानो देखो, गदा होनी चाहिए राजा के राष्ट्र में देखो, गदाधर अमृतं प्रमा देखो, वह क्षत्रिय ऊँचे होने चाहिए और जितेन्द्रिय हों और गदा होनी चाहिए गदा नाम बेटा! कहीं ज्ञान का प्रतीक माना है। क्या ज्ञान से समाज को ऊँचा बनाएं जाएं यदि ज्ञान से भी वह अज्ञान में रहे तो गदा से उसका

प्रहार कर दिया जाएं। जिससे राष्ट्र में अज्ञानता न आए राष्ट्र में ज्ञान का ही तारतम्य ज्ञानं ब्रहे उद्देश्य है, तो मेरे प्यारे! देखो, राजा के द्वितीय भुज में गदा होनी चाहिए, और तृतीय भुज में मानो चक्र होना चाहिए, चक्र कहते हैं बेटा! संस्कृति को, राजा के राष्ट्र में बेटा! अपनी संस्कृति हो अपना वैदिक विचार हो अमूल्य ज्ञान से जितेन्द्रियता में, जिसके ज्ञान विज्ञान से सना हुआ विचार होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, वह चक्र कहलाता है। पुनः मुझे स्मरण आता रहता है भगवान राम का जीवन मैंने इससे पूर्व काल में तुम्हें चर्चाएं की, देखो, राजा भगवान राम ने देखो, जब वह राष्ट्र में पालक बने, तो उन्होंने मुनिवरों! देखो, रक्षा के लिए गदा को अपनाया, चरित्र को अपनाया, जितेन्द्रिय बने और उसके पश्चात चक्र को अपनाया। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने सबसे प्रथम निषाद को राजन्न ब्रहे कृतं मानो निषाद को शोधन करके मानो देखो, भूमि का अहिल्या का कल्याण किया। राम ने बेटा! जिस भूमि में चले गएं, वह भूमि वज्र के तुल्य थी। परन्तु देखो, निषाद से, कृषकों से कहा कि तुम इसमें अन्न उत्पन्न करो। इसका उद्धार होना चाहिए। विचारवेत्ता कहते हैं बेटा! कैसे बेटा! मुझे स्मरण है राम ने आगे देखो, चक्र को ले करके विभीषण को राज दे करके लंका में कुरीतियों को उन्होंने नष्ट कर दिया पातालपुरी में उन्होंने अहिरावण को नष्ट करके ही मानो मकरध्वज देखो, हनुमान के पुत्र को उन्होंने पातालपुरी का राज बनाया, क्योंकि हनुमान जी, महाराज सुग्रीव के यहां सुग्रीव की पुत्री से उनका संस्कार हुआ था, एक ही पुत्र हुआ, उसका निधन हो गया था, तो मेरे प्यारे! देखो, मकरध्वज हनुमान का पुत्र देखो, पातालपुरी में रहता था, तो विचार आता है कि ब्रीहित नाम का राजा मेरे प्यारे! देखो, नारायन्तक को नष्ट करके वहां अपनी संस्कृति का प्रसार किया तो विचारवेत्ताओं ने बेटा! अपनी बहुत सी अमृतं ब्रह्मा साहित्य साक्षी है और इतिहास कहता है राम ने चक्र को देखो, सर्वत्र राष्ट्र में मुनिवरों! देखो, पृथ्वी का राष्ट्र मानो नही चाहा मुनिवरों! परन्तु उसने संस्कृति का प्रसार किया मेरे प्यारे! देखो, राम ने ब्रह्मणे व्रतं अप्रतं देवां ब्रव्हा

उन्होंने कहा कि राष्ट्र में याग होने चाहिए। यज्ञोमयी विष्णु राजा का नाम जहां विष्णु है वहां याग को विष्णु कहते हैं, परन्तु देखो, उन्होने कहा कि राजा के चतुर्थ नियम में मानो देखो, वह ब्रव्हे व्रत्यं देखो, अमृतं ब्रीहि व्रतं शङ्ख होना चाहिए। वह जो शङ्ख हो, तो काहें का नाद करता है, वेद मन्त्रों का नाद करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, वेद मन्त्रों की जटा पाठ में गाता है, कहीं घन पाठ कही उदात्त अनुदात्त में वेद मन्त्रों का ब्राह्मण पाठ करता रहता है। राजा के राष्ट्र में बेटा! ब्राह्मण होने चाहिए, वेदज्ञ होने चाहिए, जो वेद का उद्घोष करने वाले हों, अपनी शङ्ख ध्वनि को ले करके ही, मुनिवरों देखो, राष्ट्र को ऊँचा बनाया जा सकता है। जब राजा के राष्ट्र में बुद्धिमान ब्रह्माण जब उदगीत माला पाठ में जब वेद मन्त्रों का उद्गीत गाता है, तो मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र में एक महान ध्वनि होने लगती है तो विचार आता रहता है, सम्भवं ब्रह्मा लोकां वाचसुतं मेरे प्यारे! देखो, विष्णु नाम राजा का है, राजा जब जितेन्द्रिय होता है, तो यह चार प्रकार के नियम बनाता है, अपने राष्ट्र में सबसे प्रथम चरित्र और द्वितीय मानो देखो, वह गदा शिक्षा का प्रतीक है, और वह मानो देखो, जो अराजकता है, उसका मृत्यु का प्रतीक भी माना गया है। मेरे प्यारे! देखो, ब्रह्मणां ब्रहे कृतं चक्र का अभिप्राय अपनी संस्कृति, अपना मानवीय विचार है, जिससे राष्ट्र ऊँचा बनता है और मुनिवरों! देखो, शङ्ख ध्वनि, जिस राजा के राष्ट्र में ब्राह्मण होते हैं और ब्राह्मण भी वेदज्ञ हों, वेद का पठन पाठन करने वाले हों, और विवेकी हों जिससे राष्ट्र मानो देखो, तो बुद्धिमानो से ऊँचा बनता है गृह भी जब बनता है बुद्धिमानो से गृह ऊँचा बनता है मूर्खों से नही बना करता है। तो विचार आता रहता है कि राष्ट्र को राजन्नं ब्रहे राष्ट्र में एक निर्वाचन पद्धति होनी चाहिए, परन्तु देखो, वह महानता की होनी चाहिए, परन्तु देखो, वह महानता की होनी चाहिए। जिससे विवेकी पुरूषों में उसका नामोकरण होना चाहिए।

तो आओ मेरे प्यारे! भगवान राम जब प्रातःकालीन मानो अपनी यज्ञशाला में याग करते थे तो याग में बेटा! ब्रह्मवर्चोसि, ब्रह्मचारी अपनी अपनी पंक्तियों में विद्यमान

हो करके, अपना विचार देते। परन्तु राम ने अपने में ये घोषणा की, क्या देखो, अयोध्या राष्ट्र में याग होना चाहिए, जिससे अयोध्या ऊँची बने, और अयोध्या में मानो देखो, सुगन्ध हो जाएं देखो, प्रजा में दो प्रकार की सुगन्धि होती है। एक विचारों की सुगन्धि होती है और एक साकल्य की सुगन्धि होती है, जो अग्नि में तुम देखो, अग्नि को देवताओं का मुख बना करके, उसकी सुगन्ध चरू प्रदान करते हो और विचारों की सुगन्धि होती है, जहां मानो विद्यमान हो वहां अपनी आत्म चर्चा करे गृह की चर्चा हो एक दूसरे में मानो समाहित होने की चर्चा होनी चाहिए, जिससे समाज ऊँचा बने। तो बेटा! देखो, आज का विचार मैं विशेष नही दूंगा केवल विचार विनिमय यह कि राम ने यह घोषणा की अपने राष्ट्र में प्रातःकालीन यह घोषणा करते कि मेरे राष्ट्र में प्रत्येक गृह में याग होना चाहिए। ब्रह्मचारी याग करे, गृह आश्रम में याग हो, क्योंकि ब्रह्मचारी याग से ऊँचा बनता है, पति पत्नी याग से ऊँचे बनते हैं। और मुनिवरों! देखो, वानप्रस्थ विद्यालय में यागों से ऊँचे बनते हैं। मुनिवरों! देखो, आध्यात्मिक विचार जब मुनिवरों! देखो, भौतिकवाद से दोनों से सना हुआ होता है तो वही विचार मुनिवरों! देखो, मानव समाज को ऊँचा बना देता है तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल विचार विनिमय यह कि हम परमपिता परमात्मा को यज्ञोमयी स्वरूप कहा करते हैं क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है। अब मानो देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् यशश्चमां भूतां भुवनं सविते मनाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! भद्र समाज! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, क्योंकि ये गागर में सागर को भरण कर देते हैं। सूक्ष्म से विचारों सूक्ष्म से समय अपने इतने अनन्तमयी विचार हमें देते हैं कि हम उसमे धन्य हो जाते हैं। तो आज देखो, जहां यह हमारी आकाशवाणी जा रही है, वहां एक याग का सम्पन्न हुआ है, और मेरा अन्तरात्मा यज्ञमान के साथ रहता है,

हे यज्ञमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, और तेरे गृह में द्रव्य का सदैव सदुपयोग होता रहे। क्योंकि यह जो काल है, मैं इसे वाममार्ग का काल कहता रहता हूँ, पूज्यपाद गुरुदेव तो बहुत ऊँची कल्पना करते रहते हैं, मैं इस आधुनिक काल के सम्बन्ध में निम्न कल्पना करता रहता हूँ, और वह कल्पना यह कि आज का मानव सुरा और सुन्दरी और द्रव्य की लोलुपतता में लगा हुआ है, यह द्रव्य की लोलुपतता में और देखो, सुरापान में लगा हुआ है अपने द्रव्य का दुरूपयोग कर रहा है, एक समय आता है कि द्रव्य उसको त्याग देगा विचार आता रहता है मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ कि आधुनिक काल में वर्तमान में राजा भी वाममार्गी है, और प्रजा भी वाम मार्गी वाममार्ग उसे कहते हैं जो उल्टे मार्ग पर गमन करता हो, आज का राजा कहता है कि हम धर्म निरपेक्ष हैं, परन्तु हे राजा! यदि तेरे यहां धर्म नही रहा तो राष्ट्र ही क्या, मानो देखो, जब मैं ये कहता हूँ धर्मज्ञं ब्रह्म देखो, धर्म ही इन्होंने क्या स्वीकार किया कहीं मोहम्मद के मानने वालों को धर्म स्वीकार कर लिया, कहीं ईसा को के मानने वालों को धर्म कहते हैं कहीं और भी नानक के मानने वालों को धर्म कहते हैं। अरे, धर्म यह नही हैं मेरे पूज्यपाद गुरुदेव कहते हैं कि धर्म एक वचन है, बहुवचन नही होता। क्योंकि धर्म एकं ब्रह्मस धर्म एक है, और अनेका और रूढ़ि अनेक कही जाती है। रूढ़ियों को धर्म नही कहा जाता है, यह रूढ़ि कहलाती है। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने अभी अभी यौगिक शब्द की रचना में कितना अपना मन्तव्य दिया है, एक विष्णु देखो, यौगिक शब्द है। जहां पालन का मूल है, वही विष्णु है इसी प्रकार देखो, जहां मानव की इन्द्रियां सुक्रियाकलाप करती है। उसी का नाम धर्म है। पूज्यपाद गुरुदेव से बहुत समय हुआ जब हम देखो, अध्ययन करते थे तो एक समय यह प्रश्न आया कि धर्म क्या है? तो नेत्रों में उन्होंने कहा देखो, नेत्रों से सुदृष्टिपात करना धर्म है, नासिका से सुगन्ध लेना उसका धर्म है, वाणी से देखो, यथार्थ उच्चारण करना उसका धर्म है, श्रोत्रों से यथार्थ धर्म चर्चा देखो, परमात्मा की चर्चा ही श्रवण करना धर्म और

देखो, धर्म कहां है? धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। देखो, आधुनिक काल में धर्म कहां स्वीकार कर लिया? धर्म देखो, रूढ़ियों के देखो, जो देखो, देवालय उनमें धर्म नही होता, उनमें तो रूढ़ियां व्याप्त रहती है, अरे, रूढ़ियों को त्यागने का प्रयास करो हे राजन! जब तक तेरे राष्ट्र में रूढ़ि रहेगी जब तक तेरा राष्ट्र पनपेगा नही, हिंसा समाप्त नही होगी। हिंसा को यदि नष्ट करना है, नर संहार को समाप्त करना है, तो रूढ़ियों को त्यागना होगा, तो रूढ़ियों को नष्ट करने के लिए राजा को बल देना चाहिए, मैं अपने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कहता रहता हूँ, क्या प्रत्येक रूढ़ियों के आचार्यों की एक सभा होनी चाहिए, और राजा की मध्यस्थता में उस सभा में निर्णायक होने चाहिए और एक दूसरे का विचार विनिमय हो, जो धर्म और विज्ञान से जो विचार स्थिर हो जाएं उसी का नाम धर्म कहा जाता है। परन्तु देखो, जब राजा अपना निर्णायक देखो, धर्म को अपनाए और देखो, रूढ़ियों को त्यागने का प्रयास करे मुझे बड़ा शोक्त हो जाता हूँ, जब राजा आधुनिक काल में राजा ये कहता है कि हम सब धर्मों को मानते हैं, अरे, भोले प्राणी तैंने अध्ययन तो किया है, परन्तु तू स्वार्थ में आ गया है। क्यों स्वार्थ क्योंकि देखो, स्वार्थ यह है क्या तुझे अपने पद की लोलुपता में देखो, रूढ़ियों को धर्म कह रहा है। अरे, रूढ़ियां तो रूढ़ियां हैं। धर्म नाना नही होते धर्म एक होता है। रूढ़ियां अनेक कही जाती हैं। परन्तु देखो, मुझे आश्चर्य होता रहता है मैं विशेष चर्चा तो प्रगट नही करूंगा पूज्यपाद गुरुदेव को मैं यह अपना वाक प्रगट करता रहता हूँ, मेरे हृदय में विडम्बना रहती है, प्रत्येक मानो मानव को नष्ट करना चाहता है। इसके मूल में मानो देखो, राजा की धृष्टता है। राजा का अयोग्य है, राजा जब अयोग्य होता है मूर्खों का निर्वाचन किया हुआ राजा मूर्ख हुआ करता है, और बुद्धिमान का देखो, निर्वाचन किया हुआ देखो, विवेकी होता है, वह राष्ट्र को ऊँचा बनाता है, परन्तु जब अपठित समाज राजा को निर्वाचित करती है, तो राजा देखो, अपठितता में मुखाँ ब्रव्हे व्रतं पामरों की प्रवृत्ति में मानो रत्त हो जाता है उसको स्वार्थ के स्थान

में देखो, द्वितीय वस्तु उसे समाहित होती तो इसीलिए स्वार्थ ही पामरों का राज्य कहलाता है। पामरों की प्रतिभा कहलाती है। आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि राजा की मध्यस्थता में धर्म को अपनाना चाहिए, धर्म मानव की इन्द्रियों में समाहित रहता है। मानो धर्म किसी भी रूढ़ि में हो वही धर्म कहलाता है। मानव का देखो, किसी भी रूढ़ि का मानव नेत्रों से सुदृष्टिपान करेगा, तो वही उसका धर्म है, मानो देखो, धर्म को अपनाओ और अधर्म और रूढ़ियों को नष्ट करने का प्रयास करो, यह आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा जहां यह याग हुआ मैं अपने यज्ञमान को हे यज्ञमान! ऐसे काल में तेरे गृह में द्रव्य का सदुपयोग हो रहा है, और देवां पूजां ब्रह्मे पूज्यपाद गुरुदेव ने तो गागर मे सागर भरा ही है। परन्तु देखो, यह कि तेरे गृह में सदैव द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, और देखो, शुभ कार्यों में तेरे द्रव्य की लोलुपता बनी रहे ऐसा मानो देखो, मेरा विचार रहता है। तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, ऐसी मेरी कामना इसके साथ मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से अवकाश पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने दो शब्द उच्चारण किए, इनके विचारों में कितनी विडम्बना है राष्ट्र के प्रति कितनी विडम्बना लगी हुई है, समय आयेगा जब इनकी विडम्बना पूर्ण होगी अभी तो ब्रहे कृतं देवत्वां देखो, यह रूढ़ियों का नष्ट करना इन्होंने बहुत सुन्दर वाक कहा है, क्या रूढ़ियां अनेक हैं, धर्म एक है, धर्म बहुवचन नही है धर्म एकोकी वचन है। रूढ़ि बहुवचन कहलाती हैं, तो बहुवचन को त्याग करके एको वचनो में पालन करना चाहिए यह आज का विचार अब सम्पन्न होने जा रहा है, समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं कल प्रगट करेंगें आज का वेदों का पाठ होना वेदों का पठन पाठन होगा। ओ३म् देवाः यम सर्वं मां रथाः वाचन्नमाः ग्राहणां त्वाः।

10.चरित्र और मानवीयता-920808

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है, क्योंकि वे परमपिता परमात्मा अनन्तमयी है, और वह प्रकाश स्वरूप है। वह अग्निमयी स्वरूप माने गएं है, हमारा प्रत्येक वेदमन्त्र उस परमपिता परमात्मा के गुणों का वर्णन करता रहता है। इसीलिए वे परमपिता परमात्मा सर्वत्र जगत में निहित है, और जितना भी यह जड़ जगत अथवा चैतन्य जगत हमें दृष्टिपात आ रहा है, उस सर्वत्र ब्रह्माण्ड के मूल में प्रायः वे परमपिता परमात्मा दृष्टिपात आते रहते है। इसीलिए हमारे आचार्यों ने कहा है कि इस परमपिता परमात्मा की महिमा का यशोगान गाना चाहिए, प्रत्येक मानव अपनी स्थली पर विद्यमान हो करके उसकी जो महिमा है, उसको अपने में निहारना चाहिए और उसी में संलग्न हो करके ध्यानावस्थित हो जाना चाहिए। हमारा वेद का एक एक मन्त्र अपने में यशोगान गा रहा है, नाना प्रकार की विद्याओं का वर्णन कर रहा है, आज के हमारे वेद के पठन पाठन में प्राण का बड़ा महत्व आ रहा था, प्राणं ब्रव्हे चन्द्र वो रुद्रा आचार्य ने कहा है कि यह प्राण रुद्र है, जब यह शरीर से निकल जाते है। यह संसार को रुला देते है। तो इसलिए रुद्र कहा जाता है। तो प्राणं ब्रह्मण व्रते देवा तो हमारे आचार्य ऋषि मुनियों ने इन प्राणो के ऊपर बड़ा अनुसन्धान किया है, जैसे प्राण अपान, उदान, समान और व्यान यह पांच प्राण कहलाते है, और साधक जब अपनी साधना में प्रवेश होता है। तो वह प्राण को अपान में प्रवेश करता है, और अपान को व्यान में और व्यान को समान में और समान को उदान में ले करके वह चित्त का दर्शन करता है। तो मानो देखो, योगीजनों ने अपने में मानो इसको जानने का प्रयास

किया मेरी प्यारी माताओं ने पूर्व कालों में साहित्यिक चर्चाओं में आता रहा है, क्या प्राण और अपान को मिलान करके व्यान में प्रवेश करती हुई मेरी प्यारी माताएं अपने गर्भ के शिशु से वार्ता प्रगट करती रही है। मानो इस प्रकार प्राणों का अपना बड़ा एक विचित्र महत्व माना गया है, तो आज में बेटा! देखो, प्राणों के सम्बन्ध में कोई विशेष चर्चा नहीं केवल यह क्या प्राण अपने में मानो देखो, महत्वदायक है, और प्राण को अपान में, अपान को व्यान में व्यान को समान में और समान को उदान में प्रवेश करते हुए बेटा! ऋषि मुनि अपने जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को चित्त मण्डल में दृष्टिपात करते रहे हैं। तो आज बेटा! मैं योगियों के सम्बन्ध में नही जाना चाहता हूँ, केवल यह कि आज का हमारा जो वेदमन्त्र जो हमें उद्गीत गा रहा है, अथवा जो प्रेरित कर रहा है। उन वार्त्ताओं में तुम्हें मैं सूक्ष्म सा परिचय देने के लिए आया हूँ। परन्तु जहां प्राण के ऊपर ऋषि वृत्तियों में रत्त होने के लिए, उन्होंने अपना उद्गीत गाया है, वहीं आज के वेद मन्त्रों में अपना बड़ा उद्गीत गाया है, और यह कहा है कि राष्ट्र अपने में पवित्र होना चाहिए। राजा वह होता है जो जितेन्द्रीय होता है। और जितेन्द्रीय जब राजा होता है तो प्रजा भी उसी के अनुसार बरतती रहती है। बाल्य बालिका भी उसी के अनुसार बरतते रहते है, तो संसार अपने में ऊर्ध्वा में उड़ाने उड़ने लगता है। तो विचार आता रहता है कि राष्ट्रीय ब्रह्मा व्रत्यम देवत्वां राष्ट्रा तो राष्ट्र के ऊपर बड़ी विचित्र चर्चाएं आ रही थी, तो बेटा! देखो, राष्ट्र को अपने में ऊंचा बनना चाहिए। तो जहां राष्ट्र की चर्चाएं आती है, जहां साधकों की चर्चाएं, वैदिक साहित्य में आती रही है, वहां मानव के जीवन को ऊंचा बनाने के लिए, नाना प्रकार की हमें प्रेरणाएं प्राप्त होती रही है।

तो आओ मेरे प्यारे! इस सम्बन्ध में मैं विशेष चर्चा न करता हुआ केवल आज हमें तुम्हें राष्ट्रवाद के ऊपर कुछ चर्चाएं देना चाहता हूँ, आओ आज मैं तुम्हें त्रेता के काल में ले जाना चाहता हूँ, जहां बेटा! देखो, विद्यालयों में विराजमान हो करके राजा इत्यादि देखो, अपने अपने विचार विनिमय करते रहे है। मुझे वह काल

स्मरण आता रहता है जिस काल में बेटा! देखो, राजा रावण के यहां नाना प्रकार की विज्ञानशालाएं रही है, और उन विज्ञानशालाओं में समय समय पर मानो उनकी गोष्ठियां होती रही और विचार विनिमय होता रहता था एक एक परमाणु के ऊपर अणुओं के ऊपर उनका विचार विनिमय होता रहा है। मेरे प्यारे! देखो, एक समय मेरे प्यारे! देखो, एक समय, राजा रावण के यहां एक विज्ञान भवन में विचार विनिमय होने लगा जिसमें बेटा! देखो, उनके विधाता कुम्भकरण और महर्षि भारद्वाज मुनि के आश्रम में जो मानो विज्ञानवेत्ता थे ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारी कवन्धि, और गार्गेपथ्य थे वे सब वैज्ञानिक सभा में विद्यमान थे, और भी नाना ऋषि मुनियों का मानो देखो, विचार विनिमय हो रहा था। तो एक परमाणु के ऊपर विचार विनिमय प्रारम्भ होने लगा, क्या यह गुरूतव क्या है? तो गुरूतव के ऊपर विचार विनिमय करके बेटा! देखो, उन्होंने किसी ने कहा ये गुरूतव ही पिण्ड का निर्माण करता है। परन्तु इतने में देखो, वह नारायन्तक ने कहा रावण के पुत्र ने क्या पिण्ड जब ही बनता है, जल तरलतव का इसमें मिश्रण होता है। परन्तु देखो, केवल गुरूतव इकला क्या करता है। परन्तु इसके ऊपर और विचार विनिमय हुआ परन्तु इतने में देखो, ब्रह्मचारी कवन्धि ने कहा और सुकेता ने अमृतम ब्रव्हे कृतं देवत्वाम वेद का वाक उच्चारण करके उन्होंने कहा क्या यह अपने में यथार्थ है परन्तु जब तक गुरूतव में तरलतव तेजोमयी का मिश्रण नहीं होता, जब तक पिण्डों का निर्माण नहीं होता जैसे माता के गर्भस्थल में पिण्डों का निर्माण होता है। शिशु वह शिशु अमृतम माना देखो, पिण्ड का निर्माण हो जाता है। यह मानव एक पिण्ड के रूप में है। इसी प्रकार जब परमात्मा इस संसार का सृजन करता है, तो यह नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों के पिण्ड के रूप में प्रायः यह दृष्टिपात आता रहता है। तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, उनका विचार विनिमय हो रहा था परन्तु अन्तिम चरण यह हुआ कि अपने में निमटारा नहीं हो सका। प्रातः काल से सायंकाल हो गया और सायंकाल तक जब निमटारा नहीं हो सका, तो मेरे परे देखो, राजा

रावण का मन मस्तिष्क अशान्त हो गया अशान्त हो जाने के पश्चात सायंकाल को अपने अपने कक्ष में सब जा पहुंचे, राजा रावण भी अपने कक्ष में जा पहुंचा, परन्तु देखो, विचार विनियम करने लगे कि अमृतम ब्रव्हे ऋणाम दन ब्रव्हा असुतम देवत्वाम लोकाः क्या मैं अपने में क्या कर सकता हूँ, परन्तु देखो, विचार विनिमय करते बेटा! रात्रि में निद्रा में नहीं तल्लीन हुए, निंद्रा न आने का कारण देखो, चिन्तन में लग गएं, प्रातःकाल हो गया प्रातःकाल के अन्तिम चरण में यह विचार आया क्या मेरे मन मस्तिष्क में जो अशान्ति आ गई है, मैं इससे सान्त्वना को प्राप्त करने के लिए किसी ब्रह्मवेत्ता का आश्रय चाहिए। क्योंकि बिना ब्रह्मवेत्ता के मानव को देखो, मन मस्तिष्क में शान्ति की स्थापना नहीं होती, जब तक हम ब्रह्म का विचार विनिमय नहीं करेंगे, जब तक प्राण को अपान में अपान को पान में नहीं ले जाएं तो मानो देखो, मानव के मन मस्तिष्क में शान्ति की स्थापना नहीं होती, तो राजा रावण ने अपने मंत्री गणों को निमन्त्रित किया, प्रातः काल में जब मंत्री गणों का आगमन हुआ उन्होंने कहा हे मंत्रीगणों! मैं तुम इस राष्ट्र को ऊर्ध्वा में ले जाओ, और मैं देखो, किसी महापुरुष के दर्शन करके भयंकर वनों में जाऊंगा, और उनके यहां में अपना विचार विनिमय करूंगा, मेरा मन मस्तिष्क अशान्त हो गया है उन्होंने कहां बहुत प्रियतम। मेरे प्यारे! देखो, मंत्रियों ने कहा जैसे प्रभु आपकी इच्छा हो, वैसा ही आप भ्रमण और ऋषि मुनियों का आप दर्शन कीजिए। तो मेरे प्यारे! मुझे ऐसा स्मरण आ रहा है, कि राजा रावण अपने वाहन में विद्यमान हो करके, और वहां से उन्होंने प्रस्थान किया भ्रमण करते हुए मुनिवरों! देखो, भयंकर वनों में महर्षि पारेत्वर मुनि महाराज का स्थान उन्हें प्राप्त हुआ, पारेत्वर ऋषि ने उनका स्वागत किया, कुछ आत्म चर्चाएं हुई, परन्तु उनकी आत्मा में शान्ति की स्थापना न हुई। वहां से भी उन्होंने प्रस्थान किया। तो महर्षि श्वेतकेतु के द्वार पर पहुंचे। महात्मा श्वेतकेतु ने कहा आईए भगवन! परन्तु उनका स्वागत किया और उनका विचार विनिमय होने लगा परन्तु विचार विनिमय होते उनके हृदय में भी कोई शान्ति मन

मस्तिष्क में शान्ति न आने से वहां के लिए उन्होंने गमन किया। और भ्रमण करते हुए, मुनिवरों! वह महात्मा कुक्कुट मुनि के द्वारा पर पहुंचे, महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज ने उनका स्वागत किया। और सायंकाल का समय हो गया था। उन्होंने बेटा! उनके आश्रम में जो कन्दमूल इत्यादि थे वह उन्हें प्रदान किए वह अपने में तृप्त हो गएं और तृप्त हो जाने के पश्चात उन्होंने कहा कहो रावण! आज आपका मन मस्तिष्क मुझे अशान्त प्रतीत हो रहा है। उन्होंने कहा प्रभु! मेरा मन मस्तिष्क अशान्त है, उन्होंने कहा कारण? कि कारण यह कि देखो, इससे पूर्व काल में मेरी विज्ञान भवन में एक सभा हुई वैज्ञानिकों की, और वैज्ञानिको में गुरूतव परमाणु के ऊपर विचार विनिमय हो रहा था। परन्तु अपने में कोई निमटारा न हो सका। तो मेरा मन मस्तिष्क अशान्त हो गया, हे प्रभु! में अपने में शान्ति की स्थापना के लिए आपके चरणों की वन्दना में समर्पित हुआ है। हे प्रभु! मेरा मन मस्तिष्क शान्त होना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, महर्षि कुकुट मुनि महाराज वायु गोत्रीय थे, और महर्षि वायु मुनि महाराज के साढ़े तीन हजार वे पड़पौत्र कहलाते हो तो उनसे विचार विनिमय होने लगा, महात्मा कुकुट ने कहा रावण! तुम्हें आचार्यों ने जो कुछ अब तक तुम्हें कोई उद्गीत गाया, उसे उच्चारण कीजिए क्या आचार्यों ने गुरुओं ने क्या उपदेश दिया है अब तक? तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा प्रभु! मुझे उपदेश तो सर्वत्र दिया है, परन्तु जाकर स्वप्न, सुषुप्ति का भी उपदेश दिया है परन्तु मुझे स्मरण नहीं रहा है। मैं मानो देखो, राष्ट्रीय वृत्तियों में रत्त हो करके, मेरे से वह विचार ओझल हो गएं है। उन्होंने कहा धन्य है। तो वह महात्मा कुक्कुट मुनि महाराज और राजा रावण दोनों का विचार विनिमय होने लगा, और विचार विनिमय होकर उन्होंने कहा हे रावण! आत्मा का जो सम्बन्ध है, वह मानो अपने में चेतना कहलाती है। और मन उसी के आश्रित हो करके चेतनित रहता है। मेरे प्यारे! देखो, महात्मा कुक्कुट ने कहा मनम ब्रह्मे मनं सुतं कृत देवा प्रकाश में जब रमण करता है तो मानो देखो, जब नेत्रों के साथ में जागरूक सुषुप्ति से अमृतम क्योंकि मानव के शरीर की ये

देखो, चार प्रकार की अवस्थाएं कहलाती है। सबसे प्रथम अवस्था का नाम उन्होंने वर्णन करते हुए कहा, सबसे प्रथम जागरुक है स्वप्न और सुषुप्ति और तुरीया के रूप में वर्णित रहती है। मानो देखो, सबसे प्रथम जागरूक है, जब ये मन नेत्रों के साथ होता है, प्राण की प्रतिक्रिया को ले करके, तो नेत्र मानो देखो, नेत्र और मन दोनों दृष्टिपात करते रहते है, संसार का विभाजन करते रहते है। ये विभक्तता में परणित करता रहता है। एक पंक्ति लगी, उसमें माता है, भौजई है, उसी में पत्नी है, और पुत्री है। सर्वत्र मानो देखो, एक पंक्ति लगी हुई है। मन देखो, इनका विभाजन करता रहता है। ये एक मां है, ये महा मां है, ये पुत्री है, ये पत्नी है ये विभाजन कौन कर रहा है? बेटा! यह आत्मा के प्रकाश में मानो देखो, मन नेत्रों के साथ में गमन करता हुआ यह विभक्त क्रिया में लगा हुआ, विभाजन करता रहता है। राष्ट्र वादों का भी विभाजन करता रहता है। तो ये विभक्त क्रिया में लगा हुआ है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा इसका नाम जाग्रत अवस्था कहा जाता है। शरीर की अवस्था का नाम जागरूकता है। और जाग्रत में देखो, मन और नेत्र दोनों का समन्वय होता है, और मन प्राणों की पुट लग करके, मानो गतिवान होता रहता है। तो यह गतियों में रमण करने वाला, मानो यह मनस्तव कहलाया गया है। मेरे प्यारे! देखो, आगे उन्होंने कहा कि दूसरी अवस्था का नाम स्वप्न कहा जाता है। यह जो स्वप्न है, क्योंकि मानव के, मानव के शरीर में मुनिवरों! देखो, नद नदियां नहीं होती, परन्तु ये मन आत्मा के प्रकाश में रत्त हो करके मुनिवरों! देखो, यह नद नदियों का निर्माण कर लेता है। शरीर में पत्नी नहीं होती, पत्नियों का निर्माण हो जाता है। पति नहीं होते पतियों का निर्माण हो जाता है, मेरे प्यारे! देखो, राष्ट्र नहीं होते, राष्ट्रों का निर्माण कर लेता है। मेरे पुत्रों! देखो, यह निर्माण में लगा रहता है कहीं समुद्रों का निर्माण कर रहा है परन्तु देखो, वह जो चित्त में अङ्कुर सूक्ष्म रूप से विद्यमान है, उन अङ्कुरों को संस्कारों को, ये साकार रूप में भोग लेता है आत्मा के प्रकाश में उसका नाम स्वप्न अवस्था कहा जाता है स्वप्नम ब्रह्म

वर्णा देवत्वाम परन्तु देखो, यह अमृतम् अवृत्ति देवत्वाम शरीर में बेटा! देखो, योगाभ्यास करता है, कहीं मानो देखो, द्रव्यपति से, द्रव्यपति बन जाता है। कहीं द्रव्यपति से द्रव्यहीनता को प्राप्त हो जाता है। मेरे प्यारे! ये नवीन जगत का निर्माण करता रहता है। भोगतव्य में प्रवेश कर जाता है तो मुनिवरों! देखो, उस अवस्था का नाम ही मानो स्वप्न कहा जाता है। परन्तु वह आत्मा के प्रकाश में यह मन प्रकृति का सूक्ष्म तंतु होने से मेरे पुत्रों! देखो, उसी के प्रकाश में यह संस्कारों को भोगता रहता है। क्योंकि संस्कार प्रकृति के मण्डल में निहित रहते है, यही संस्कार चित्त के मण्डल में प्रवेश करते रहते है। तो मेरे प्यारे! देखो, उस अवस्था का नाम स्वप्न कहा जाता है, और जब मुनिवरों! देखो, यह मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार अपनी साम्यावस्था में प्रवेश हो करके जब यह मन शान्त हो जाता है। तो इन्द्रियां भी शान्त हो जाती है। तो यह इसको सुषुप्ति कहा जाता है। सुषुप्ति उसे कहते है जहां मानव यह कहता है कि आज में ऐसी निद्रा में तल्लीन हो गया क्या मुझे संसर का कोई भान नहीं रहा है, मैं ऐसा अचेतता में चला गया तो विचार आता है कि यह मन अपनी स्वप्नावस्था में चला गया है। मेरे प्यारे! देखो, मन, बुद्धि में और बुद्धि चित्त में और चित्त अहङ्कार में प्रवेश करके बेटा! यह सुषुप्ति उसे ही कहा जाता है। विचार आता है कि मुनिवरों! अमृतम ब्रह्म देवत्वाम यह मन है, जब यह मन प्रकृति का सूक्ष्म तन्तु होने से जब यह और सूक्ष्मतता में जाता है। तो बेटा! देखो, चार प्रकार की बुद्धियों का निर्माण होता है। सबसे प्रथम बुद्धि है बुद्धि के पश्चात मेधा, ऋतम्भरा और प्रज्ञावी कहलाता है। जिसमें परमात्मा का दर्शन करता है। प्रज्ञावी में मेरे प्यारे! ऋतम्भरा में ज्ञान करके मौन हो जाता है। और प्रज्ञाम भूतम ब्रहे और अव्रतम देखो, मेधाम भूतम ब्रह्मा वर्णो सुते देवत्वा वेद का वाक कहता है मुनिवरों! जब यह बुद्धि से मानावृत्ति का रत्त होता है। तो बुद्धि दृष्टिपात करती है। जब यह प्रज्ञा में प्रवेश करता है। तो मुनिवरों! देखो, यह मेधावी बन करके संसार का निर्माण करता है। नाना प्रकार के यन्त्रों में प्रवेश कर जाता है,

और ऋतम्भरा में जा करके मौन हो करके वह प्रभु चेतना में प्रवेश कर जाता है। तो उन्होंने कहा हे वर्णनं ब्रह्म हे रावण! इसी का नाम सुषुप्ति कहा जाता है। परन्तु जब देखो, यह मन, बुद्धि, चित्त और अहङ्कार जब एक दूसरे में लय हो करके और आत्मा का अमृतम देखो, और मन इसमें लय हो जाता है। तो उस समय प्राणां आत्मान भूतं प्रव्हे जागा स्वप्तं देवत्वा मेरे प्यारी देखो, उस समय देखो, यह प्राण आत्मा के साथ में ही मानो श्वांस की गतिया प्रारम्भ होती रहती है। परन्तु देखो, अमृतां ब्रह्मे देवत्वां और यदि यह मन अपने में रत्त हो करके बेटा! जब मन और प्राण का दोनों का संयोग होता है। दोनों का मिलान हो जाता है। तो उसी का नाम बेटा! तुरीया अवस्था में परणित हो जाता है। जब तक मन और प्राण का दोनों का दोनों का संयोग नहीं होता दोनों का मिलान नहीं होता तब तक मुनिवरों! देखो, यह मानव अपनी मानो शान्त अवस्था को प्राप्त नहीं होता यह मानो देखो, ब्रह्मणा ब्रव्हा कृतं यह अपने में तुरीया तक को प्राप्त नहीं होता तो मेरे प्यारे! देखा इसलिए मन और प्राण दोनों का मिलान करते हुए मानव प्रयत्न करता रहा है। आचार्यजनों के नाना प्रकार के प्राणायाम से खेचरी मुद्रा में चला जाता है। कहीं मेरे प्यारे! देखो, यही रेचक और कुम्भक में प्रवेश कर जाता है, नाना प्रकार के प्राणों को अपने में संयोग से लाता रहता है, और प्राण और मन का दोनों का ही मिलान करता हुआ मुनिवरों! देखो, अपने में परणित होता रहा है। तो मन और प्राण का दोनों का संयोग और दोनों का मिलान हो जाता है। तो वहीं मुनिवरों! देखो, एक पगडण्डी है, उसे मोक्षाम्, भूतम् प्रव्हाणाम् ब्रहे वह मोक्ष को जाने की एक पगडण्डी मानी गई है। तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार का उपदेश दिया और उपदेश देते हुए विचार विनिमय करते, उन्हें मुनिवरों! देखो, सायंकाल से प्रातःकाल हो गया प्रातःकाल हो गया तो राजा रावण के अन्तर्हृदय में आत्म शान्ति की स्थापना हुई। उन्होंने कहा हे रावण! मेरे महापिता थे एक मानो मेरे सांतवें महापिता का नाम शौभनी ऋषि था और शोभनी ऋषि ने एक समय यह विचारा वेद मन्त्रों

का अध्ययन करते हुए क्या मैं अपने जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों को उद्बुद्ध करना चाहता हूँ। जो मेरे चित्त में विद्यमान है, क्योंकि वेदमन्त्र यह कहता है मोक्षाण भूतं ब्रह्मे मोक्षां चित्यां भूतां संस्कारा विघ्मावृत्ति देवत्वाम तो मानो, उन्होंने वेद मन्त्रों में यह अध्ययन किया क्या मोक्ष उसे कहते है जब चित्त में जब कोई संस्कार नहीं रहेगा, बिना देखो, चित्त में कोई संस्कार नहीं रहेगा तो उसी का नाम क्योंकि चित्त निरसंस्कारों से जब संस्कारों से रहित हो जाने का नाम मोक्ष है। तो मेरे प्यारे! वह परमानन्द की प्राप्ति कही जाती है। तो उन्होंने जब यह अपने में वर्णन किया, तो वर्णनां ब्रव्हे देवत्वाम भूताम भूतम ब्रह्म लोकाम तो मेरे प्यारे! देखो, जब ऋषि ने इस प्रकार अपना मन्तव्य दिया तो मेरे पूज्यपाद महापिता मानो देखो, वह पिच्चासी वर्ष तक मौन हो गएं, और मौन हो करके उन्होंने विचारा कि मैं क्या प्रायः ऐसा कौन सा मैं यत्न कर सकता हूँ? जो मोक्ष के संस्कार मेरे जागरूक हो जाए, उन्होंने बेटा! कहीं वायु का सेवन करते थे, प्राण के माध्यम से कहीं मानो औषधियों का पान करते उन्होंने पिच्चासी वर्ष तक मौन रह करके मेरे प्यारे! देखो, एक लाख पिच्चासी हजार पांच सौ इक्कसठ जन्मों के संस्कारों को बेटा! वह जागरूक में ला सके, तो वेद का ऋषि कहता है हे रावण! देखो, इस प्रकार हमारे आचार्यों ने प्रयत्न किया है, प्राण को और मन दोनों का सम्मिलान करने का प्रयास किया क्या देखो, जिससे हमारी अन्तरात्मा का साक्षात्कार और चित्त में कोई संस्कार न रहे जिससे हमारी चेतना में चेतना का हमें भास हो जाए। मेरे पुत्रों! देखो, मुझे स्मरण है। जब राजा रावण अपने में शान्त हो गएं उन्होंने कहा धन्य है। प्रभु आपने मुझे अन्धकार से प्रकाश में पहुंचाया है। प्रभु!मेरी इच्छा यह है क्या आप को लंका में पधारे बहुत समय हो गएं है, आप मेरी लंका का भी भ्रमण करें। मेरे प्यारे! कुक्कुट मुनि ने कहा कि मुझे इतना समय नहीं है। जो आज मैं तुम्हारी लंका का मैं भ्रमण करूं। क्योंकि मैं परमात्मा के चिन्तन में ही सदैव रत्त रहता हूँ। उन्होंने कहा नहीं भगवन! राजा रावण नम्र थे, और ऋषियों का हृदय तो प्रायः उदार होता ही है।

उन्होंने बेटा! वहां से गमन किया और अपने वाहन में विद्यमान हो करके वह लंका में उनका आगमन हुआ, लंका में जब आगमन हुआ तो सबसे प्रथम राष्ट्र गृह में ऋषि का आगमन हुआ, महारानी मंदोदरी ने उनका स्वागत किया और स्वागत किया और नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराया राजा रावण ने कहा प्रभु! आप अपनी उदर पूर्ति में लग जाइये, कुछ पदार्थों का पान कीजिए। मैं मंत्रियों से वार्ता करके आपके समक्ष आता हूँ। मेरे पुत्रों! देखो, राजा रावण ने वहां से गमन किया और वह मंत्रियों में ही जा पहुंचे, परन्तु देवी ने उन्हें नाना प्रकार के पदार्थों का पान कराया, और मन्दोदरी ने अपने देवर्षि से यह उच्चारण करने लगी, हे प्रभु! आप लंका से प्रस्थान करोगे तो मेरा पति अमृतम ब्रव्हा मेरे पति मं मानो कोई दोषारोपण हो अथवा मेरे देवम ब्रहा इसमें अभिमान की मात्रा हो तो कोई ऊंचा उपदेश देते जाना मेरे प्यारे! महात्मा कुकुट ने कहा देवी! में प्रयत्न शील रहूँगा मुनिवरों! देखो, यह हमारे यहां एक परम्परागतों का नियम रहा है क्या कोई मेरी पुत्री यह नहीं चाहती क्या मेरे पति में किसी प्रकार का अवगुण हो. सदैव यह चाहती है कि मेरे पति में सर्वत्र गुण होने चाहिए। ब्रह्मवेत्ता भी हो, ब्रह्मवर्चोसि भी हो, और वह नाना प्रकार के गुण धानम गुणों को धारण करने वाला हो, सदैव मेरी पुत्रियों के हृदय में यह कामना परम्परा से रही है। तो यही कामना को ले करके महारानी मंदोदरी ने अपने विचार व्यक्त किए, ऋषि बड़े प्रसन्न हुए, परन्तु यह विचार विनिमय चल रहा था इतने में राजा रावण का आगमन हुआ, उन्होंने कहा आईए भगवन! मैं आपकी लंका को भ्रमण कराता हूँ, उन्होंने कहा तो चलो दोनों ने वहां से प्रस्थान किया भ्रमण करते सबसे प्रथम वह कुबेर भवन में ले गएं, उन्होंने कहा, महाराज यह जो भवन है, यह महाराजा कुबेर ने इसका निर्माण किया है। मानो देखो, मेरे पूर्व लंका का स्वामी महाराजा कुबेर था, जिसका यह भवन है, और महाराजा कुबेर से पूर्व महाराजा महिदन्त यहां के राजा थे, और महाराजा महिदन्त से पूर्व यहां के मानो देखो, शिव राजा थे, और शिव से पूर्व यहां का राजा महाराजा

आत्मिक ज्ञान

विक्रम था और विक्रम राजा से पूर्व लंका राजा का स्वामी कात्यायनी था, और कात्यायनी से पूर्व लंका स्वामी रेणकेतु था, और रेणकेतु से पूर्व लंका का स्वामी मानकृति था, और मानकृति से पूर्व लंका का स्वामी मानधाता था, और मानधाता से पूर्व लंका का स्वामी कातवेतु था, और कातवेतु से पूर्व लंका का स्वामी यशोधर्मा था, और यशोधर्मा से पूर्व लंका का स्वामी मौनकृति था मौनकृति राजा से पूर्व लंका का स्वामी सोमभानु था, और सोमभानु से पूर्व लंका का स्वामी नारायण वृत्ति था, और नारायणवृत्ति से पूर्व लंका का स्वामी स्वाभावु था, और स्वाम्भुव से पूर्व लंका का स्वामी मेनमृति था तो बेटा! मैं लंका का वंशलज वर्णन करने नहीं आया हूँ। विचार विनिमय केवल यह क्या राजा रावण ने बेटा! देखो, ऋषि की नाना भवनों का निरीक्षण कराया, उन्होंने कहा प्रभु! यह कुबेर भवन है और यह जो भवन में आपको दृष्टिपात करा रहा हूँ, इसका निर्माण महाराजा शिव ने किया था यह स्वर्ण का भवन है। तो मुनिवरों! देखो, वह बड़े प्रसन्न हुए, ऋषि ने कहा रावण मुझे यह प्रतीत नहीं था क्या तुम्हारा यह लंका इतना महान है। इतना मानो उज्ज्वलशील है, और अपने में मानो अद्वितीय है। जब ऋषि ने इस प्रकार वर्णन किया तो उन्होंने कहा आओ भगवन! वह उसके पश्चात विज्ञान भवन में ले गएं। तो जहां मुनिवरों! देखो, पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हो रहा था, उन्होंने कहा प्रभु! यह मेरा यहां विज्ञान है, विज्ञानशाला है, पृथ्वी, विज्ञानशाला यहां पृथ्वी के ऊपर अनुसन्धान हो रहा है। यह मानो देखो, प्रथां भवं ब्रह्मे देवत्वां मेरे उन्होंने कहा देखो, भगवन! यह नान वैज्ञानिक पृथ्वियों के ऊपर अनुसन्धान कर रहे है। पृथ्वियों में कितना परमाणु कितनी दूरी पर कौन सा खनिज कितनी दूरी पर है। कौन सा खाद्य कैसे उत्पन्न होता है, और कैसे यह बलवती हो सकता है। इसके ऊपर विचार विनिमय कर रहे है उन्होंने कहा धन्य है। उन्होंने कहा यह द्वितीय विज्ञानशाला है, जो आपो मानो देखो, जल के ऊपर अनुसन्धान हो रहा है, या आपाम भूतम ब्रह्मा यह आपो ही तो जीवन है। आपो ही मानो देखो, प्राणों का देने वाला है, इसके ऊपर वैज्ञानिक

अपने में अनुसन्धान कर रहे है। उन्होंने कहा धन्य है राजन्! तुम्हारा राष्ट्र बड़ा उन्नत है। उन्होंने कहा प्रभु! यह मेरे यहां सूर्य अनुसन्धान शाला है। यहां सूर्य के ऊपर अनुसन्धान और सूर्य की ऊर्ज्वा के साथ में यन्त्र भ्रमण कर रहे है, एक यन्त्र का यहां निर्माण हुआ है, जो सूर्य की किरणों से वह गमन करता रहता है। उसकी ऊर्ज्वा से यह मानो सूर्य की परिक्रमा कर रहा है। कोई यन्त्र पृथ्वी की परिक्रमा कर रहा है। कोई ध्रुव की परिक्रमा कर रहा है। यह नाना प्रकार के वैज्ञानिक यन्त्रों का निर्माण कर करके, उनका वायु दे करके भ्रमण करा रहे हैं। उन्होंने कहा धन्य है। यह चन्द्र शाला है। यहां चन्द्रमा के ऊपर अनुसन्धान होता रहता है, यह चन्द्रमा कितना सोम लेता है। समुद्रों से और सोम की कौन वृष्टि करता है। इसके ऊपर विचार विनिमय करते रहते है। यन्त्रों का निर्माण करते रहते है, और चन्द्रमा में गति कैसे होती है। मेरे प्यारे! देखो, वह नारायन्तक के द्वार पर पहुंचे यह मेरा पुत्र है, नारायन्तक। यह यन्त्रों में गमन करते रहते है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा क्या तुम चन्द्र यात्री हो उन्होंने कहा महाराज! कहीं भ्रमण कर आता हूँ, उन्होंने कहा कितनी गति है, तुम्हारी जाने की उन्होंने कहा कि मैं एक रात्रि और एक दिवस मेरे लिए पर्याप्त हैं। मैं चन्द्रमा में प्रवेश कर जाता हूँ। मैं चन्द्रमा में मेरा गमन हो जाता है। वहां के वैज्ञानिकों से भी वार्ता प्रगट करके चला आता हूँ। उन्होंने कहा और तुम्हारी कितनी गति है। उन्होंने कहा मेरा जो आचार्य है, वह महर्षि भारद्वाज रहे है, और भारद्वाज की विज्ञानशाला में मैंने विज्ञान की शिक्षा को प्राप्त किया है। मैंने ऐसे ऐसे यन्त्रों का निर्माण किया, एक यन्त्र में विद्यमान होता हुआ यहां से जो यन्त्र उड़ान उड़ता है। तो यहां से उड़ान उड़ता है, तो सबसे प्रथम चन्द्रमा में, चन्द्रमा से उड़ान उड़ी तो बुध में, और बुध से उड़ान उड़ी तो शुक्र में, और शुक्र से उड़ान उड़ी तो मानो देखो, मङ्गल में और मङ्गल से उड़ान उड़ी तो मानो देखो, मृचिका मण्डल में मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो मृवेकेतु मण्डल में, मृवेकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी तो मानो देखो, मङ्गल में और मङ्गल से उड़ान उड़ी तो मानो देखो,

मृचिका मण्डल में मृचिका मण्डल से उड़ान उड़ी तो मृवेकेतु मण्डल में श्रेतकेतु मण्डल से उड़ान उड़ी, तो अरूणधति में अरूधति मण्डल से उड़ान उड़ी तो वशिष्ठ मण्डल में, और वशिष्ठ मण्डल से उड़ान उड़ी तो मैं माना देखो, स्वाति नक्षत्र में चला जाता हूँ, और स्वाति नक्षत्र से उड़ान उड़ता हुआ मूल नक्षत्र में चला जाता हूँ, और मूल नक्षत्र से उड़ान हुआ मैं मौन अवृत्ति मण्डलों में प्रवेश कर जाता हूँ। तो उन्होंने कहा नारायन्तक ने भगवन! में बहतर लोकों का भ्रमण करके मेरा यान मेरी विज्ञानशाला में पुनः प्रवेश कर जाता है। मेरे प्यारे! देखो, उन्होंने कहा धन्य है, अमृतम ब्रह्मा लेवसुति वह अपने में मौन हो गएं। राजा रावण ने कहा प्रभु! यह मेरे यहां विज्ञानशाला है, नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्रों का निर्माण होता रहता है। यहां आग्नेय शान्त और देखो, ब्रह्मास्त्रों का प्रायः निर्माण होता रहता है। यह विज्ञानशालाएं है मेरे प्यारे! देखो, वहां से भ्रमण करते हुए वह चिकित्साशाला में पहुंचे जहां मुनिवरों! देखो, महात्मा भुञ्जु के दोनों पुत्र अश्विनी कुमार देखो, इसके ऊपर अन्वेषण करते सुकेन बेटा! देखो, उनके मध्य में विद्यमान थे उन्होंने चर्चाएं प्रगट की कि तुम्हारी इस आयुर्वेद में कितनी गति है। उन्होंने कहा प्रभु! हम मानव के मस्तिष्क को कण्ठ के ऊपरले भाग को भी हम दूरी कर देते है। उसे पुनः गति दे देते है, और मानव के हृदय को निकास करके और शरीर से पृथक करके औषधियों दोनों को निहित कर देते है, और छह माह के पश्चात पुनः उसमें गति प्रदान कर देते है। मानो देखो, इस प्रकार का हमारा यह चिकित्शालाएं है, चिकित्साशालाओं में और भी नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहता है। कहीं मानो इस प्रकार की बुटियाँ हैं। जिनके मानो मान करके मानव देखो, भिन्न प्राणियों की भाषा को जानने लगते है, तो इस प्रकार मुनिवरों! देखो, जब उन्होंने दृष्टिपात कराया तो ऋषि बड़े प्रसन्न हुए और प्रसन्न चित्त हो करके भ्रमण करके बेटा! मार्गशालाओं के जो विशेषज्ञ थे, जहां मार्गों के निर्माण हो रहे थे मार्गो में, मानो देखो, ऊर्ध्वा में मार्ग थे, उन्होंने कहा प्रभु! यह मार्गशालाएं है, यहां देखो, मार्ग के विशेषज्ञ है, और यहां निर्माण होता

रहता है। मेरे प्यारे! देखो, सर्वत्र लंका का भ्रमण करने के पश्चात राजा रावण ने ऋषि के चरणों में ओत प्रोत हो करके बोले, हे प्ररम ब्रह्मे हे भगवन! में यह जानना चाहता हूँ आपको मेरी लंका कैसी प्रतीत हुई, उन्होंने कहा रावण! तुम्हारा राष्ट्र तो बड़ा विचित्र है। मानो तुम्हारा तो विकासवादी राष्ट्र है, राजन्! तुम्हें धन्य है, परन्तु मुझे देखो, सर्वत्र लंका को भ्रमण करने के पश्चात मुझे ऐसा प्रतीत हुआ है जैसे तुम्हारी लंका में अग्नि प्रदीप्त होने वाली है। मेरे पुत्रों! जब ये कहा तो रावण ने नत मस्तिष्क हो करके कहा प्रभु! आपने ऐसा क्यों कहा? उन्होंने कहा मैंने इसलिए कहा है अमृतम व्रते देवत्वाम मानो देखो, तुमने मुझे ऊंचे ऊंचे भवनों का दर्शन कराया है, स्वर्ण के भवनों का दर्शन कराया है, तुमने मानो देखो, जल अनुसन्धानशाला, पृथ्वी अनुसन्धान शालाएं, सूर्य अनुसन्धान शालाएं, चन्द्र अनुसन्धान शालाएं, लोक लोकान्तरों में जाने वाले यात्री यन्त्र विद्यमान है। परन्तु नाना प्रकार की चिकित्शालाएं है, और मार्गशालाएं है, हे रावण! तुमने मुझे सब कुछ दृष्टिपात कराया, परन्तु तुमने मुझे कोई चरित्रशाला का दर्शन नहीं कराया है, और जिस राजा के राष्ट्र में चरित्र नही होता उस राजा का राष्ट्र आज नही तो कल अवश्य देखो, अग्नि का काण्ड बन करके रहेगा, तो मेरे प्यारे! देखो, राजा रावण नतमस्तक हो गएं और उन्होंने कहा प्रभु! वास्तव में विज्ञान में ही लगा रहा है, परन्तु देखो, चरित्र का वास्तव में अभाव है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा राजा रावण तुम्हें यह प्रतीत है, जिस समय तुम्हारा राज्यभिषेक हुआ था उस समय देखो, महात्मा पुलस्त्य ऋषि महाराज ने मुझे सभापति बनाया और सभापति बना करके यह कहा कि तुम इसका राज्यभिषेक करो मैंने तुम्हारे मस्तिष्क का अध्ययन किया और मस्तिष्क की अध्ययन करके यह कहा पुलस्त्य से कि यह राष्ट्र को चरित्र नहीं दे सकता यह राष्ट्र को विज्ञान दे सकेगा, भवन दे सकेगा, विज्ञान में पहुंचा देगा लोक लोकान्तरों का यात्री बना सकता है। परन्तु यह चरित्र नहीं दे सकेगा, इसलिए में इसका राज्यभिषेक नहीं करूंगा। तो तुम्हें प्रतीत है कि महात्मा भुञ्जु ने तुम्हारा

राज्यभिषेक किया था मेरे प्यारे! देखो, इतना उच्चारण करते हुए महात्मा कुक्कुट मुनि महाराजा ने नतमस्तकं वर्णो ब्रह्मा अच्छा अब राजन! मुझे आज्ञा दो। मैं अपने आश्रम में गमन करता हूँ। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा धन्य है, प्रभु! तो मुनिवरों! देखो, सर्वत्र लंका का भ्रमण करने के पश्चात वह अपने आश्रम चले गएं, तो विचारों का अभिप्राय यह कि हमारे यहां वैदिक साहित्य में राष्ट्र का अपना बड़ा महत्व माना गया है। परन्तु राष्ट्र बिना चरित्र के ऊंचा नहीं बनता, गृह बिना चरित्र के ऊंचे नहीं बनते, विद्यालयों से चरित्र होता है। तो मानवीयता होती है, तो विद्यालय ऊंचे बनते हैं। विचार विनिमय देने का हमारा अभिप्राय यह क्या मुनिवरों! देखो, राष्ट्र अपने में महान है। उसमें चरित्र उसमें मानवता हो तो मुनिवरों! देखो, यह वेद का मन्त्र कहता है, वेद का मन्त्र कहता है राष्ट्रब्रह्म ब्रव्हे राष्ट्रं कृतं देवाः हे राजा! तू अपने में जितेन्द्रीय बन और जितेन्द्रीय बन करके तू अपने राष्ट्र को ऊंचा बना।

तो मेरे प्यारे! आजका हमारा अभिप्राय क्या है आज मैं वेद मन्त्रों को तो मैंने इतना उद्गीत रूप में नहीं गाया, तुम्हें बेटा! मैं साहित्यिक विवेचना में ले गया, क्या हमारा साहित्य हमारा इतिहास अपने में क्या पुकार रहा है कि बेटा! देखो, हमारे यहां चरित्र और मानवीयता होनी चाहिए, बेटा! आज का वाक आज के वाक उच्चारण करने का अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा का गुणगान गाते हुए उसको निहारते रहें अपने में मानो धारण करते रहे, और धारण करके उसको अपनेपन मस्तिष्क में सान्त्वना को दे करके अपने जीवन को ऊंचा बनाए। यह बेटा! आज का वाक अब मुझे समय मिलेगा। तो तुम्हें शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा आज का वाक समाप्त अब वेदों का पठन पाठन होगा, अब वेद मन्त्रों का पठन पाठन। ओ३म् देवाः आभ्यां मनु गायन्त्वा आपा इदं माहं गायन्त्वाः आपा रथप्राणाः आभ्यां देवाः३म्। ओ३म् यश्शचमं प्रा यशो आभ्यां देवाः३म्।

11.श्रावणी पर्व-920813

जीते रहो! देखो, मुनिवरों! आज हम तुम्हारे समक्ष, पूर्व की भान्ति, कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे, ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से, जिन वेद मन्त्रों का पठन पाठन किया हमारे यहां परम्परागतों से ही, उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस महामना परमपिता परमात्मा की महिमा का गुणगान गाया जाता है क्योंकि वह परमपिता महिमावादी है और उसका यह अनन्तमयी जगत माना गया है प्रत्येक मानव परम्परागत से ही उस परमपिता परमात्मा के सम्बन्ध में नाना प्रकार का विचार विनिमय करता रहा है, कहीं मानो विज्ञान के युग में प्रवेश हो जाता है। कहीं नाना प्रकार की चित्रावलियों में रमण करने लगता है। कहीं मानो लोक लोकान्तरों की उड़ाने उड़ने लगता है। कहीं वह आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता रहा है, परन्तु उसके नाना प्रकार के परमपिता परमात्मा को, दृष्टिपात करना चाहता है, और अपने मनो में ये विचारता रहता है कि मैं नाना प्रकार के जो पर्व है, और नाना प्रकार के जहां महापुरुषों ने तपस्याएं की है, नद नदियों के तट पर वहां भी मानव की इच्छा बनी रहती है, क्या कोई परमाणु ऐसा मुझे प्राप्त हो जाएं, जो परमाणु मेरे अन्तःकरण को स्पर्श करता मेरे हृदय और मस्तिष्क को ऊर्ध्वा में ले जाएं और परमपिता परमात्मा की महती में रमण कर जाए, ऐसी मनोनीत भावना ये परम्परागतों से मानवीय मस्तिष्कों में चली आ रही है, और ये सृष्टि के प्रारम्भ से ही मानव विचार विनिमय करता रहा है मानो कहीं वह विशिष्ठां भूतप्रव्हाणं कहीं वशिष्ठ जैसे महापुरुष जब तपस्या करते हैं, तो मानो देखो, वे सदियों तक उसकी वृत्तियों में रत्त होता रहा है, और ये विचार रहा है कि यहां महापुरुषों ने तप किया, इसको मानव तीर्थ के नामों से अपने को वर्णन करता रहता है। परन्तु जब मानव आध्यात्मिकवाद में यह वेद के वाङ्मय में प्रवेश करता है तो वेद का एक वेदमन्त्र हमारे आज के इस मन्त्रार्थ में आ रहा था, और वेदमन्त्र कहता है अपनां भूतं ब्रह्मणा

ब्रह्मा आत्मा मेरे प्यारे! देखो, वेद का मन्त्र ये कहता है, कि यह जो आत्मा है, इसके जानने से ही ब्रह्म को जाना जाता है। इसलिए हमारा जो अन्तःकरण है, हमारे जो पञ्च महाभूतों का जो लोक है, ये पञ्च महाभूत मानो देखो, इसमें आत्मा अपना वास करता रहा है। इस आत्मा को जानने के लिए मानव सदैव तत्पर रहे। तो वे परमपिता परमात्मा इसी में उसको प्राप्त हो जाता है परन्तु देखो, आज का हमारा वेदमन्त्र, हमें नाना प्रकार के यागों की प्रेरणा देता रहता है, जिससे हमारा वायु मण्डल पवित्र बन जाए, और वायुमण्डल के पवित्र बनने पर, मानवीयतव एक दूसरे में मानो पवित्रतता की आभा में रत्त हो जाएं। तो ऐसा बेटा! प्रत्येक मानव अपने में अन्वेषण करता रहा है, अथवा विचार विनिमय करता रहा, तो आज का हमारा वेदमन्त्र ये कहता है कि परमपिता परमात्मा को प्राप्त करना है। तो हे मानव! तू अपनी मानवीय इन्द्रियों को और आन्तरिक जगत को अपने में धारण करने की सदैव अपने में धारयामि बन, जिससे मानवतव तेरा उर्ध्वा में गमन करने लगे मेरे प्यारे! देखो, मानव अपने उदर की पूर्ति में और पदो की लोलुपता में मानो लगा रहता है परन्तु जिस आत्मा के कारण, नाना प्रकार की उपाधियाँ मानव को प्राप्त होती है, और उसी से वह अलंकृत होता रहा है, तो उस आत्मा को जानने के लिए भी मानव को अपने में प्रयास करना चाहिए, और प्रयत्नशील रहना चाहिए, जो आत्म चेतना जिसके कारण यह हमारा शरीर चेतनित बन रहा है, और यह विष्णु के रूप में रत्त होता रहा है। तो इसको मैं जानने के लिए सदैव तत्पर रहूँ। परन्तु आज का हमारा वेदमन्त्र यहां यह प्रेरणा दायक वाक्यों को प्रस्तुत कर रहा है, वहां एक एक वेदमन्त्र बेटा! नाना प्रकार की विद्याओं का संकेत देता रहता है। और वह ऐसी विद्याओं का संकेत देता है जहां यह समाज एक दूसरे को जानता हुआ, अपने मानवीयतव को ऊंचा बना सकता है, और राष्ट्र और समाज उसी से ऊंचा बनता है। क्योंकि जिस जिस काल में समाज में मानो चरित्र की हीनता हो जाती है। उसी काल में मानव एक दूसरे के प्राणों को हनन करने के लिए तत्पर

रहता है। तो जब आज जब हम यह विचारते रहते है, हम अपनी मानवीयता को जानने के लिए हम आत्मा का आश्रय ले और आत्मा का आश्रय मानो परमात्मा का आश्रय लेता हुआ, इस संसार रूपी मानो यह जो समुद्र है, अथवा यह जो ब्रह्माण्ड है, इसको जानने के लिए सदैव तत्पर रहें। मेरे प्यारे! देखो, हम प्रायः देखो, भगवान राम की चर्चाएं प्रायः हम करते रहते है, जब मैं राम के जीवन में प्रवेश करता हूँ, राम के जीवन की प्रतिभा हमारे समीप आती है, तो उनका चरित्र उनकी मानवीयता कितनी महानता में सदैव रत्त रही है। क्योंकि राम जैसे वनज ब्रहे मानो जो सखा जो राज्यम ब्रह्मा जो मर्यादा अपने में धारण करने वाली क्योंकि जब तक मानो स्वयं अपने में मर्यादा को धारण नहीं करेगा, क्रियात्मकता में अपने जीवन को नहीं बनाएगा, ज्ञान के अनुसार कर्म को जब तक नहीं ला सकेगा, जब तक उस मानव का कल्याण नहीं होगा। वह मानव अधूरे पन में रत्त रहता है।

तो हमारे यहां वेद का मन्त्र आता है धर्मं ब्रहे वर्णा ज्ञानां तनं ब्रह्मे देवत्वां कर्माणि भूतप प्रव्हा वेद का मन्त्र यह कहता है कि हे मानव! तेरे द्वारा ज्ञान होना चाहिए, और ज्ञान भी आत्मा के माध्यम से होना चाहिए और उसी ज्ञान के अनुसार यदि तेरा कर्म मानो कर्तव्य तेरे में निहित हो जाएगा, तो तेरा जीवन महानता में परणित हो जाएगा, क्योंकि बिना कर्म किए हुए ये मानव अपंग हो जाता है और बिना ज्ञान के मानो देखो, ये मानव का जीवन देखो, अपंगम ब्रह्मे देखो, जैसे एक मानव देखो, नेत्रो से हीन हो जाता है, या सत्तम ब्रह्म श्रोत्रों से विहीन हो जाता है। ऐसे मानव की दशा बन जाती है, वह अपनी दशा को वास्तविकता को त्याग देता है, तो इसीलिए हमारे यहां वेद मन्त्रों में नाना प्रकार की प्रतिभाओं का वर्णन आता रहा है, ज्ञान और विज्ञान में मानव सदैव परम्परागतों से मानो अनुष्ठान करता रहता है। नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ाने उड़ता रहा है, जिससे लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ने वाला जो प्राणी है। वह मेरे प्यारे! नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों की उड़ान उड़ने वाला जो प्राणी है, वह मेरे प्यारे! नाना प्रकार के लोक लोकान्तरों

की यात्रा करके अपने को जानने के लिए सदैव तत्पर होता है। जो बाह्य जगत में मानो चेतना का दर्शन नहीं होता, तो मानो आन्तरिक जगत में ही अपने को ले जाता है, और बाह्य जगत को आन्तरिकता में ले जाने का नाम ही चेतना में बद्ध हो जाना है।
तो मेरे प्यारे! देखो, आज का विचार मैं विशेष नहीं देने आया हूँ, केवल यह कि हमारे जीवन में एक महानता प्रायः होनी चाहिए परन्तु आज मुझे कहीं से यह प्रेरणा आ रही है कि याग के ऊपर विचार विनिमय दिया जाए, बेटा! मैंने तुम्हें कई कालों में वर्णन करते हुए कहा है कि हमारे यहां ऋषि मुनि जिस स्थली में तपस्या में परणित होते रहे है, मानो उसमें सबसे प्रथम वेद मन्त्रों का उद्गीत गाते हुए वह स्वाहा से अन्तरिक्ष को भरण कर देते है। क्योंकि यह जो स्वाहा शब्द है, यह मानो देखो, मानव के अङ्ग संग ओत प्रोत हो जाता है। स्वाहा कहते है शुद्ध और पवित्र को और जितने भी शब्द मानव के अन्तःमन मस्तिष्क में मानो शुद्धिकरण में प्रवेश होते रहे हैं। उतना मानव का जीवन पवित्रता में प्रवेश होता रहेगा, तो विचार विनिमय यह कि हम अपने वायुमण्डल को देखो, सुगन्धि से भरण कर दें जिससे हमारे हृदय में सुगन्ध आने लगे मुझे वह काल स्मरण आता रहता है मैं भगवान राम की चर्चा कर रहा था प्रातःकालीन बेटा जब भगवान राम अपनी यज्ञशाला में याग करते रहे, तो वह अपने राष्ट्र में यह घोषणा किया करते क्या हे राष्ट्रवेत्ताओं! तुम्हारे यहां नाना प्रकार का तुम्हारा राष्ट्र सुगन्धि से परणित हो जाना चाहिए, शब्दों से भरण हो जाएं, मानो देखो, राम ने यह कहा था अपने कर्मवेत्ताओं से क्या राष्ट्र में यह घोषणा करो क्या राष्ट्र में सुगन्धि होनी चाहिए। क्योंकि राष्ट्र में सबसे प्रथम जो सुगन्धि है, वह चरित्र की सुगन्धि होनी चाहिए और चरित्र मानव का जब परिपूर्ण होता है, जबकि वह मानव ज्ञान से परिपक्व होता है, अथवा विज्ञान से परिपक्व होता है और देखो, ज्ञानाम वेदाम मन्त्रम ब्रह्मा कृतं देवा जब वेद मन्त्रों का मानव उद्गीत गाता है। तो वायुमण्डल मानो शब्दों की धाराओं पर अग्नि की

धाराओं पर शब्द विद्यमान हो करके शब्द द्यौ में प्रवेश हो जाता है। हमारे यहां विज्ञान वेत्ताओं ने मानो नाना प्रकार के शब्दों के ऊपर अन्वेषण किया है मुनिवरों! देखो, यह अग्नि की धाराओं पर विद्यमान हो करके द्यौ में प्रवेश कर जाता है, और द्यौ में जब यह भरण हो जाता है, तो द्यौं भूतं ब्रह्मे यह द्यौ ही हे जो बेटा! देखो, इस संसार को मानो प्रेरणायुक्त तरंगे प्रदान करता रहता है। मेरे प्यारे! देखो, मैं आज तुम्हें यह उच्चारण कर रहा हूँ कि राम यह प्रातःकालीन याग करना और अपनी उपदेश मंजरी में यही कहा करते कि राष्ट्र को यदि ऊंचा बनाना है। समाज को महान बनाना है, तो प्रातःकालीन सुगन्ध आनी चाहिए, हमारे यहां जो साकल्य देखो, हूत किया जाता है, उसमें सबसे प्रथम सुगन्ध होती है और द्वितीय उसमें पुष्टि होती है, और देखो, वही रोग नाशक होती है। मानो देखो, यह तीन प्रकार का साकल्य जब अग्नि में हूत कर दिया जाता है। मेरे प्यारे! देखो, एक रोगनाशक है, यह चतुर्थं ब्रह्मा वर्णन जब यज्ञशाला में हूत करता है। यज्ञमान तो मेरे प्यारे! देखो, अपने अन्तर्हृदय की अन्तर्भावनाओं में वह परणित हो जाता है। तो विचार आता रहता है वहीं अपनी मनोनीत हृदय की जो विचार धाराएं है, उसी से मानव अपने में ऊर्ध्वा को गमन करता रहता है। तो भगवान राम प्रातःकालीन यह कहा करते थे अपने राष्ट्रवेत्ताओं से कि राजा के राष्ट्र में मानो देखो, सुगन्ध होनी चाहिए और वह सुगन्ध मानो देखो, साकल्य की अग्नि में हूत किया जाता है। राजा के राष्ट्र में प्रायः ध्वनि होनी चाहिए, और वह ध्वनि जो वेद मन्त्रों में ध्वनि आती है, और वेद मन्त्रों का जब उद्गीत गाया जाता है तो प्रत्येक मानव का अन्तःकरण पवित्रता की प्रतिभा में परणित हो जाता है। तो विचार आता रहता है, भगवान राम प्रातःकालीन जब याग करते तो उनका उपदेश प्रारम्भ होता और उपदेश मंजरी में यही कहा करते कि देखो, हमारा राष्ट्र सुगन्ध में देखो, अयोध्या हमारा सुगन्ध और याज्ञिक होना चाहिए। नाना प्रकार के याग में मेरी पुत्रियां पुत्रेष्टि याग में परायण हो, मुनिवरों! देखो, मानो ब्राह्मण कर्मकाण्ड में ऊर्ध्वा में रमण करने वाले हो और

मानो देखो, होता जन हूत दे करके मानो देखो, यज्ञमान की वाणी को पवित्र बनाते है। ऐसा जो वेद में मानो नाना प्रकार का विचार और वेद मन्त्रों में आता रहा है, तो इसके ऊपर मानव को विचार विनिमय करना चाहिए। मेरे प्यारे! देखो, में विशेष चर्चा तुम्हें नहीं देने आया हूँ, केवल परिचय यह है क्या हम मुनिवरों! देखो, यागाम भूतम ब्रह्मा यह जो परमात्मा का संसार रूपी जो यज्ञशाला है। इस यज्ञशाला में प्रत्येक प्राणी याग कर रहा है, यदि हमारे अन्तःकरण में यह भरण हो जाएं क्या हमारे सुविचार बन जाएं, और सु आचरणों में परणित हो जाएं, तो मानो देखो, हमारा राष्ट्र और समाज दोनों ऊंचे बन जाते है। हमारा गृहपथ्य नाम की अग्नि भी सिद्ध हो जाती है। गार्हपथ्य नाम की अग्नि भी सिद्ध हो जाती है, और वैश्वानर नाम की अग्नि में भी हम प्रवेश हो करके देखो, गार्हपथ्य में अपने को प्रारम्भ जीवन को लगा देते है। तो इस प्रकार अग्नियों का चयन करने वाला मानो देखो, अग्नियों का ही चयन करता है। परमात्मा के समीप जाने के लिए उसकी प्रायः मानो इच्छा बनी रहती है, तो आज में विशेष चर्चा तो नहीं दूंगा कि हम अपने में अपने पन को जानते रहे और देखो, परमपिता परमात्मा का जो वेदमन्त्र है। उसका जो ऊर्ध्वा मुख है, उसे अपने में प्रायः हम धारण करते रहे और देखो, एक दूसरे के प्राणों की प्रायः वे परमपिता परमात्मा रक्षा करता है, विष्णु है। तो इसीलिए बाह्य जगत को जान करके और आन्तरिक जगत में प्रवेश करके परमात्मा को अपना साक्षी बनाते हुए परमात्मा के समीप पहुंचों जहां तुम्हें प्रकाश की प्राप्ति हो जाएं और मृत्यु का तुम्हें भय नही रहेगा मृत्यु से उपरामता को प्राप्त हो जाओगे, द्रव्य की लोलुपतता में भी तुम्हारा इतना जीवन नही जाएगा तुम उसको अपने को अपनेपन में प्रवेश कर जाओगे। तो मेरे प्यारे आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि हमारे यहां सुविचार होने चाहिए मेरी प्यारी माताएं जब इस वेद की विद्या का अध्ययन करें तो मुनिवरों! देखो, उसको सन्तानों को महानता का जन्म प्रदान कर देती हैं। मैंने तुम्हें कई कालों में नाना ऋषि मुनियों की चर्चाएं की हैं उनके क्रियाक्लापों

की भी चर्चाएं की हैं, आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ मानो ब्रह्मा ब्रहे अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्द उच्चारण करेंगें। आज का वाक केवल हमारा ये कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए और देव की महिमा का गुणगान गाते हुए मानो परमपिता परमात्मा के समीप जाने का प्रयास करें। मानो याग हमे ये ही प्रेरणा देता है क्या हम सुविचार बना करके स्वाहाः कह करके मानो इस अन्तरिक्ष को अपने में भरण कर जाएं और वायुमण्डल मानो जो हमारा अङ्ग संग रहने वाला जगत है, वो सु से मानो परिपक्व हो जाए मानो वो भरण हो जाए। जिससे मानवीयतव उसमें पवित्रता को धारण करता रहे तो आजका विचार विनिमय क्या आज मैं तुम्हें ये वाक इसीलिए उच्चारण कर रहा हूँ कि हमारा मानवीयतव अपने में ऊर्ध्वा में गमन करना चाहिए। चाहे वह प्रजा हो, चाहे राजा हो, चाहे मानो किसी भी प्रकार का अवृत्त करने वाला प्राणी हो परन्तु उसके हृदय में मानवता होनी चाहिए, यदि मानवता नही है तो देखो, वह केवल शरीर से मानव है परन्तु देखो, कर्म से मानव नही रहेगा इसीलिए संसार में विकृतता आ जाएगी तो आज का हमारा वेदमन्त्र ये उदगीत गाता हुआ अब मैं मानो देखो, महानन्द जी से जैसा इनका सदैव विचार बना रहता है।

पूज्य महानन्द जीः ओ३म् देवाम् भूतम भविवर्णाश्चतमाः वायु रथाः। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! अथवा मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव गागर में सागर की कल्पना कर रहे थे, और प्रायः हमें ऐसा प्रतीत हो रहा था, जैसे हम राम की यज्ञशाला में विद्यमान हैं और राम के मुख से उन वाक्यों को श्रवण कर रहे हैं, ऐसा इनका गागर में सागर की कल्पना करते रहते है। परन्तु देखो, आज मैं कोई विशेष चर्चा नहीं केवल यह कि आज जहां हमारी यह वाणी जा रही है, वहां एक याग सम्पन्न हुआ है, और वह याग ऐसे पर्व के समय पर याग सम्पन्न हुआ, उसको जिसको हम श्रावणी पर्व के नामो से वर्णन करते रहते है मानो देखो, हमारे यहां ऐसा विचार बना रहा है, कि देखो, आज देखो, इस पूर्णिमा के अवसर

पर इस पर्व पर मानो देखो, रक्षा का यह प्रतीक माना गया है। मेरी पुत्रियां मानो अपने मानो विधाताओं के एक मानो देखो, कर्म अमृतम सूत्र का उसमें सूत्रित करते रहे है और परम्परागतों से मेरी पुत्रियां अपने विधाताओं में आयु की कामना करती रही है कि इसमें मेरा विधाता आयु वाला बने और मानो देखो, वह बन्धन अपने में देखो, अपनी रक्षा का और देखो, समाज के उन कर्तव्यों का एक बन्धन मानो देखो, बन्धन सूत्र उसमें सूत्रित करते रहे है। मैं मानो देखो, बहुत से वाक्यम ब्रह्मा जब देखो, महाभारत के काल में जब अभिमन्यु संग्राम के लिए जाने लगे, तो महारानी कुन्ती ने भी देखो, एक सूत्र उनके उनकी भुजाओं में कटिबद्ध कर दिया था और यह कहा था कि जब तक तुम्हारा यह सूत्र बना रहेगा, जब तक तुम्हें कोई नष्ट नहीं करेगा इतना सङ्कल्पमयी वह सूत्र बना हुआ था तो वह जब तक मानो देखो, संग्राम में गएं तो संग्राम में जा करके दुर्योधन ने यह कहा था कि हे पुत्र! तुम्हारे मानो भुजों में ये जो सूत्र बन्धन है, जब तक ये रहेगा जब तक तुम्हारे समीप नही आ सकेंगें। तो मानो देखो, उस सूत्र को सबसे प्रथम जयद्रथ ने नष्ट कर दिया था। और उस सूत्र के नष्ट होते ही वह मृत्यु को प्राप्त हो गया तो परिणाम यह कि मेरी पुत्रियां मेरी माताएं यह सूत्र बन्धन इसलिए की आयु इनका दीर्घ को और कर्तव्य का पालन करे इन भुजों से किसी प्रकार का मानो अन्याय देखो, न्याय युक्त रहने चाहिए, यह दूसरों की रक्षा के लिए होने चाहिए दूसरो को नष्ट करने के लिए भी नहीं होने चाहिए यह भुज इसलिए देखो, रक्षा का एक सूत्र है। और यह सूत्र परम्परागतों से वैदिक पाण्डितव मानो देखो, पुरोहित जन अपने मानो देखो, अपने में अपने में यज्ञमानो को देखो, सूत्र में सूत्रित करते रहे तो इस दिवस मानो देखो, ऐसे ही यह दिवस वह है जहां वेद का प्रारम्भ हुआ था वेद की शिक्षा का प्रारम्भ हुआ यह श्रावणी पर्व कहलाता है और श्रावणी पर्व का अभिप्राय यह है क्या देखो, वह वर्षा काल का समाप्त होना और मानो देखो, दूसरी ऋतु का प्रारम्भ होना और प्रारम्भ होने के पश्चात अब मुझे यह वर्षा काल का समापन होना, मध्य भी

कोई न कोई स्वीकार करता है, यह मध्य भी इसको कहा जाता है परन्तु देखो, यह मध्य में जैसे परमपिता परमात्मा देखो, मेघो के द्वारा मानो देखो, वायु अपने प्राण रूपी वज्र से नाना प्रकार की खनिज पदार्थ और खाद्यो की रक्षा होती रहती है इसी प्रकार यह पर्व है कि इससे देखो, बुद्धिमान अपने पुरोहित की भी रक्षा करता रहे, और पुरोहित यज्ञमान की रक्षा करता रहे ज्ञान देता रहे जिससे समाज में कुरीति न आ जाए और राष्ट्र को भी चाहिए की वह अपने गृह में याग और राष्ट्र में देखो, अश्वमेध याग भी प्रायः देखो, इसी पर्व पर प्रारम्भ हुआ करते हैं, मुझे स्मरण आता रहता है एक समय मेरे पूज्यपाद गुरुदेव जब मानो देखो, याग होते थे राजाओं में प्रायः यह प्रथा बनी रही देखो, राजा रघु के यहां एक याग हुआ वह श्रावणी पर्व पर मानो प्रायः पण्डित जनाः वेद के मर्म को जानने वाले मानो पाण्डितव सर्वत्र राजाओं के यहां जा करके मानो वेद की घोषणा करते कहीं अश्वमेध याग कहीं मानो वृष्टि याग का चलन होता रहा है क्योंकि याग ये रक्षार्थी बना रहता है राजा के राष्ट्र में प्रदूषण नहीं होना चाहिए यदि समाज में प्रदूषण आ गया है और राजा के राष्ट्र में कर्तव्य की हीनता आ गई है तो एक मानव मानव के रक्त का पिपासी बन जाता है और राजा के राष्ट्र में मानो देखो, कर्तव्यवाद की हीनता हो जाती है इसलिए राजा को चाहिए क्या समय समय पर वह अश्वमेध याग करता रहे और वह प्रजा को नाना प्रकार की ब्रह्म ज्ञान की शिक्षा देता रहे वह पुरोहित के द्वारा देखो, यह सूत्र इसी प्रकार राजा जब अपने राष्ट्र में यह घोषणा करता है कि हे प्रजाओं! हे ब्राह्मणजनों! आओ तुम सदनम ब्रह्मा वर्णासुते देवाम तुम वेदमन्त्र को विचारो वेदमन्त्र कहता है कि जहां यह सूत्रों में सूत्रित किया जाता है वहां यह तीन बन्धनों में देखो, यज्ञोपवीत में इसको बद्ध कर दिया गया है और यज्ञोपवीत में मानो देखो, तीन प्रकार के ऋणों से मानव को संकेत करता रहता है सबसे प्रथम मानो देखो, मातृ ऋण है, ऋषि ऋण है और देव ऋण कहलाता है। मानव देवताओं के लिए याग करता है, जिससे देवता मानो अग्नि को मुख बना करके

और देवा देवानाम मुखारं ब्रह्मे व्रतम अग्नि और वह देवताओं का जो मुख है, अग्नि उसमें हूत करता है, तो इससे देवता प्रसन्न होते है जड़ और चैतन्य दोनों प्रसन्न होते है, और द्वितीय मानो या पितृया अमृहे देखो, पितर ऋण है तो पितर हमारे लिए जो क्रियाकलाप करते है, और पितरो का जो शुद्धिकरण किया हुआ संसार है। उसको अग्रणीय बनाना यह हमारा कर्तव्य है। और मानो देखो, ऋषि ऋण यह ऋषि मुनियों ने आध्यात्मिकवाद में प्रवेश किया है, और आध्यात्मिकवाद में प्रवेश होते हुए आध्यात्मिकवाद को आत्मा से परमात्मा तक परमात्मा से आत्मा तक और आत्मा को मनस्तव, प्राणत्व की पुट लगा करके यह पञ्च भूतों को जानना मानो देखो, यह ऋषि ऋण कहलाता है मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से विशेष चर्चा प्रगट करने तो नहीं मानो देखो, वेद के परन्तु यह आधुनिक काल में तो देखो, धर्मम् ब्रह्मणा वर्णसुते आधुनिक काल में तो धर्म की यह पुकार बनी हुई है, प्रायः वास्तव में कि आधुनिक काल में जो समाज यह चल रहा है न तो यह धर्म की ही जानता है, और न अधर्म को ही जानता है, परन्तु यह स्वार्थपरता में अपने को ले जाता जा रहा है। मैं आधुनिक काल में जब प्रवेश करता हूँ, तो मुझे अन्धकार दृष्टिपात आता है, समाज का जो अग्रणीय जीवन है। वह भविष्य मुझे अन्धकार में दृष्टिपात आता रहता है। मैं यह स्वीकार करता रहता हूँ, आधुनिक काल में या तो कोई राजा नहीं है। और राजा हम मानो किसी को स्वीकार भी कर लेते है, तो वह समाज की मानो देखो, समाज को इस वह प्रसन्न करना चाहता है और वह कर्तव्यवाद में समाज को न ले जाता हुआ केवल अधिकार की पुकार हो रही है, और वह अधिकार इतना बलवती आ गया है, कि अधिकार कोई भी मानव देखो, इस पर तक पूर्ण नहीं कर सका है सृष्टि के प्रारम्भ से ले करके वर्तमान के काल तक कोई भी राजा हो, वह प्रजा की मानो देखो, अधिकार की इच्छा पूर्ण नहीं कर सका है। कर्तव्यवाद में जब राजा और प्रजा दोनों एक दूसरे में तत्पर हो जाते हैं, तो कर्तव्यवाद में मानव अपने में मौन हो जाता है। कर्तव्यवाद में परमात्मा की

प्रतिभा में रत्त हो जाता है। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहता रहता हूँ, कि आधुनिक काल का जो समाज है, यदि वह कर्तव्यवाद से विहिन हो गया है, और वह मानो देखो, वह अप्रतम ब्रव्हे पुकार कर रहा है, कि और अधिकार चाहता है। अधिकार में ही देखो, अपने को रत्त कर रहा है। सुरा सुन्दरी में रत्त हो करके अपने आहार अपने उदर की पूर्ति में लगा हुआ है। तो यह क्या है देखो, में यह कर्तव्यवाद नहीं कहा जाता इसको अकर्तव्यवाद अधिकार कहा जाता है। अधिकार को कोई भी पूर्ण नहीं कर सका है मैं जब राजा रावण के काल में जाता हूँ, तो प्रायः देखो, राजा रावण के काल में भी अधिकार की पुकार होने लगी थी, राजा रावण का काल भी उस समय अग्नि का काण्ड बन करके रह गया था यही दशा इस समय वर्तमान काल में भी मानो देखो, चले प्रत्येक स्थलियों पर अग्नि के काण्डों का केवल अभिप्राय यह है, क्या कर्तव्यवाद नहीं रहा है। कर्तव्यवाद की हीनता आ रही है, अधिकार की पुकार होती चली आ रही है, और अधिकार को कोई भी मानव अब तक पूर्ण नहीं कर सका है। जब तक मानव कर्तव्यवाद में परणित नही होगा, मेरे पूज्यपाद गुरुदेव में देखो, विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि आधुनिक वर्तमान में देखो, आज का यह जो पर्व है, जिस पर्व से देखो, ब्रह्मं ब्रव्हे अङ्गिरस ऋषि के देखो, महापिता ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने जब वेद के मन्त्रों का उद्गीत गाया था। यह आज का वही दिवस है वही पर्व है जो परम्परागतों से पूर्णिमा और चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से युक्त हो करके और वह गान गाता है, वह अमृत देता है, इसी प्रकार देखो, वेद को जानने वाला वैदिक ज्ञान में प्रवेश करता है। राजा और प्रजा मिल करके देखो, अपने जीवन में अमृत की प्रदान करते रहते है। यह आज का वही दिवस है, जब देखो, महर्षि अथर्वा ने ब्रह्मा के ज्येष्ठ पुत्र ने, वेद मन्त्रों का उद्गीत गाया था, और वेद मन्त्रों में सामाम भूतम देखो, परमात्मा के समीप विद्यमान हो करके वेद मन्त्रों का उद्गीत गाने का प्रयास किया, और वही वेदमन्त्र मानो देखो, अपने में महान है। मैंने तुम्हें कई कालो में वर्णन

किया था कि ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा से ले करके और मानो अङ्गिरस ऋषि और दडीय गोत्र हरितत गोत्र देखो, उद्दालक गोत्रों में भी इस प्रकार की प्रायः प्रथा बनी रही है और देखो, वशिष्ठ गोत्रों में भी भारद्वाज इत्यादियों में विज्ञान की पुकार होती चली आई है आज मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को तो भलिभान्ति प्रतीत है मैं इस साहित्य में नहीं जाना चाहता हूँ केवल यह कि आधुनिक काल का वर्तमान में यह वह पर्व है यह पूर्णिमा का दिवस है जब चन्द्रमा अपनी सम्पन्न कलाओं से युक्त हो करके रात्रि को अपने अन्धकार को अपने गर्भ में धारण करके देखो, वह प्रकाश का पुंज बन जाता है, और वह अमृत देता रहता है वनस्पतियां उसे अपने में सहायतार्थ जीवन को पान करती रहती है। वह कर्तव्यवाद कहा जाता है परन्तु देखो, इसी प्रकार मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से मैंने कई कालों में यह वर्णन करते हुए कहा है क्या यह जो समाज की प्रणावृत्ति अस्तुते पुनरुक्तिया जीवन में आती रहती है यह केवल उसकी प्रतिभा से बनी रहती है और आधुनिक काल का जो जगत है, मैं विशेष नहीं आधुनिक काल में यह समाज कहीं चला जाएं, रक्त का पात्र बन जाएं। परन्तु अपने पद की लोलुपतता न जाएं ऐसा मानो देखो, आधुनिक काल का समाज बन चुका है कर्तव्यवाद न रहने से अकर्तव्यवाद में ही देखो, अपने में परणित करता जा रहा है। आज मैं इस सम्बन्घ में विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यह कि मैं अपने यज्ञमान के सम्मुख जाता हूँ, कि यह जो वर्तमान का काल है जहां मैं इसे वर्तमान का काल सुरा और सुन्दरी में और आहार और व्यवहार में समाज नष्ट होता चला जा रहा है यह वास्तव में वाममार्ग का काल है यह काल इसको में प्रिय काल नहीं कहा करता हूँ।

परन्तु विचार विनिमय केवल यह कि आधुनिक काल में में जो जिस गृह में जिस यज्ञमान का द्रव्य में सदुपयोगता आ जाती है, अपने में सदुपयोग करता है मैं उस यज्ञमान को अपना देखो, हृदय से अपनी सत्यकामना देने आया हूँ हे यज्ञमान! तेरे जीवन का प्रायः सौभाग्य अखण्ड बना रहे, क्योंकि तेरे जीवन में सदैव द्रव्य का

सदुपयोग होता रहे, जिस मानव के द्रव्य का सदुपयोग होता है। वह मानव द्रव्य का सदुपयोग होता है वह मानव भाग्यशाली कहलाते है वह मानव अपने में कर्मठ कहलाते है और जिस गृह में द्रव्य का दुरूपयोग होता है सुरा और सुन्दरी में द्रव्य चला जाता है, वह मानव दुर्भागी कहलाता है। इसीलिए मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से नाना प्रकार के ऋषियों की चर्चा न देता हुआ केवल यह कि देखो, अमृतम ब्रव्हे प्रत्येक गृह में जैसे भगवान राम का कथन है प्रत्येक गृह में सुगन्धि होनी चाहिए। सबसे प्रथम साकल्य की सुगन्धि जो अग्नि के मुख में देखो, जड़ देवताओं की पूजा होती है और द्वितीय अपने विचारो की सुगन्धि प्रत्येक गृह में प्रत्येक मानव देखो, माता पिता सर्वत्र अपने गृह में विद्यमान हो करके दर्शनों का स्वाध्याय करना चाहिए दर्शनों के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए कर्तव्य अकर्तव्य के ऊपर विचार विनिमय करना चाहिए गृह पवित्र हो जाए गृह पवित्र बनेगे तो गृह में आने वाले समाज को भी देखो, गृह स्वामी बनेगा और राजा के राष्ट्र में प्रत्येक प्रजा अपने ऊपर अधितव्य धारण करते हुए मानो देखो, ब्रह्म ज्ञान राजा में होना चाहिए राजा में ईश्वर के नाम पर जब रूढ़िवाद पनप जाता है तो शान्ति चली जाती है राजा के राष्ट्र में कर्तव्य विज्ञान का दुरूपयोग होने लगता है, तो पुकार ही पुकार रह जाती है कर्तव्य नष्ट हो जाता है और जब विज्ञान का सदुपयोग होता है तो मानव कर्तव्य का पालन करता है, और जब ईश्वर के नाम पर नाना प्रकार की रूढ़ियां बन जाती है। तो राजा के राष्ट्र में रक्त भरी क्रान्ति आ जाती है। समाज में रक्त भरी क्रान्तियां आ जाती है, इसीलिए मैंने अपने पूज्यपाद गुरुदेव से कई काल में कहा है, क्या राजा को चाहिए कि वह अपने राष्ट्र में धर्म की और देखो, शान्ति की स्थापना चाहता है। तो ईश्वर के नाम पर नाना रूढ़ि नहीं होनी चाहिए, धर्मणाम् नाम भूतम ब्रह्मे इन्द्रियों के ऊपर मानवता होनी चाहिए कर्तव्य और अकर्तव्य के ऊपर विचार विनिमय राजा को होना चाहिए।

तो आज मैं विशेष चर्चा न देता हुआ अपने पूज्यपाद गुरुदेव को अवगत करा रहा

हूँ क्या आधुनिक काल का जो समाज है वह अपने में वाममार्ग न बनता हुआ नाना प्रकार की रूढ़ियों से युक्त हो करके कर्तव्यवाद का पालन करता रहे और राजा को चाहिए कि ब्रह्म ज्ञान में उसकी निष्ठा होनी चाहिए उसकी निष्ठा जब ब्रह्मज्ञान में होती है, तो प्रजा भी देखो, ब्रह्म ज्ञान को अपने में धारण करने लगती है तो आज का विचार विनिमय क्या मैं आधुनिक काल के इस पर्व की चर्चा कर रहा हूँ जो सृष्टि के प्रारम्भ से पर्व चला आ रहा है मानवीय समाज में इस श्रावणी पर्व का बड़ा महत्व माना गया है इस दिवस मानो देखो, पूर्णिमा के दिवस अपने में वेदों का उदघोष करने वाले मैंने अभी अभी कहा पूज्यपाद गुरुदेव ने भी मुझे कई काल में वर्णन कराया क्या ब्रह्मा के पुत्र अथर्वा ने अथर्व का स्थिर हो करके वेदों का गान गाना प्रारम्भ किया मानो देखो, उनके जेठे पुत्र का नाम अथर्वा था और द्वितीय का नाम अग्रेतकेतु केतु था इसी प्रकार मानो उनके कुछ पुत्र थे और यही वंशल्ज मानो देखो, अङ्गिरस अङ्गिरस और आदित्य इत्यादि ऋषियों में रत्त होता रहा और यही फिर नाना प्रकार के गोत्रों में गोत्रित होता रहा है।

तो आओ मेरे पूज्यपाद गुरुदेव तो सर्वत्र जानते हुए इन साहित्यिक चर्चाओं में केवल में विचार विनिमय केवल यह क्या आधुनिक काल का पूर्णिमा का यह जो दिवस है यह पर्व है और यह अमृत है। मानो देखो, यही तो हमारे यहां एक श्रावणी पर्व कहा जाता है। श्रावणी कहते है जहां यह पृथ्वी अपने गर्भ से परिपक्व होती है और परिपक्व हो करके यह गर्भ में नाना वनस्पतियों को अपने में सजातीय बना लेती है और सजातीय बना करके मेघ मण्डलों से पुकार होती है वह वृष्टि प्रारम्भ होती है और वृष्टि में देखो, जो दूषित पृथ्वी की आभा में देखो, याग अपने में संचित करता है इसीलिए श्रावणी पर्व पर सब ऋषि मुनि गृह में राजा महाराजा सब याग में अपने को परणित करते रहे हैं। तो आज का विचार विनिमय क्या मैं केवल विशेष चर्चा नहीं विचार केवल यह कि मानव को अपने कर्तव्य में निहित होना चाहिए द्रव्य का सदुपयोग होना चाहिए। हे यज्ञमान! तेरे जीवन या सौभाग्य

अखण्ड बना रहे जीवन की प्रतिभा महान बनी रहे और द्रव्य का सदुपयोग होता रहे, ऐसा मेरा सदैव विचार रहता है। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से आज्ञा पाऊंगा।

पूज्यपाद गुरुदेवः मेरे प्यारे ऋषिवर! अभी अभी मेरे प्यारे महानन्द जी ने, अपने बड़े भव्य विचार और सामाजिक और लौकिकवाद में जाने के लिए इन्हें अपना मन्तव्य दिया राष्ट्रवाद कैसे ऊंचा बनता है, और विज्ञान का प्रायः दुरूपयोग नहीं होना चाहिए। तो ऐसा इन्होंने अपना विचार दिया है, आज का हमारे वाक्यों का अभिप्राय यह क्या प्रत्येक मानव को अपने में याज्ञिक होना चाहिए। प्रत्येक मानव, मानव में प्रवेश होता रहे, समाज को ऊंचा बनाता रहे। यह आज का वाक अब सम्पन्न होने जा रहा है। कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएं प्रगट करेंगे। आज के वाक उच्चारण करने का हमारा अभिप्राय यह कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, देव की महिमा का गुणगान गाते हुए, इस संसार सागर से पार हो जाएं, यह है आज का हमारा वाक अब समय मिलेगा तो मैं शेष चर्चाएं कल प्रगट करूंगा। ओ३म् देवाः आभ्याम रथम मानहम प्राची रथं मनु आपाः.....।